# बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल

सम्पादक -

शैलेश - दीप

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

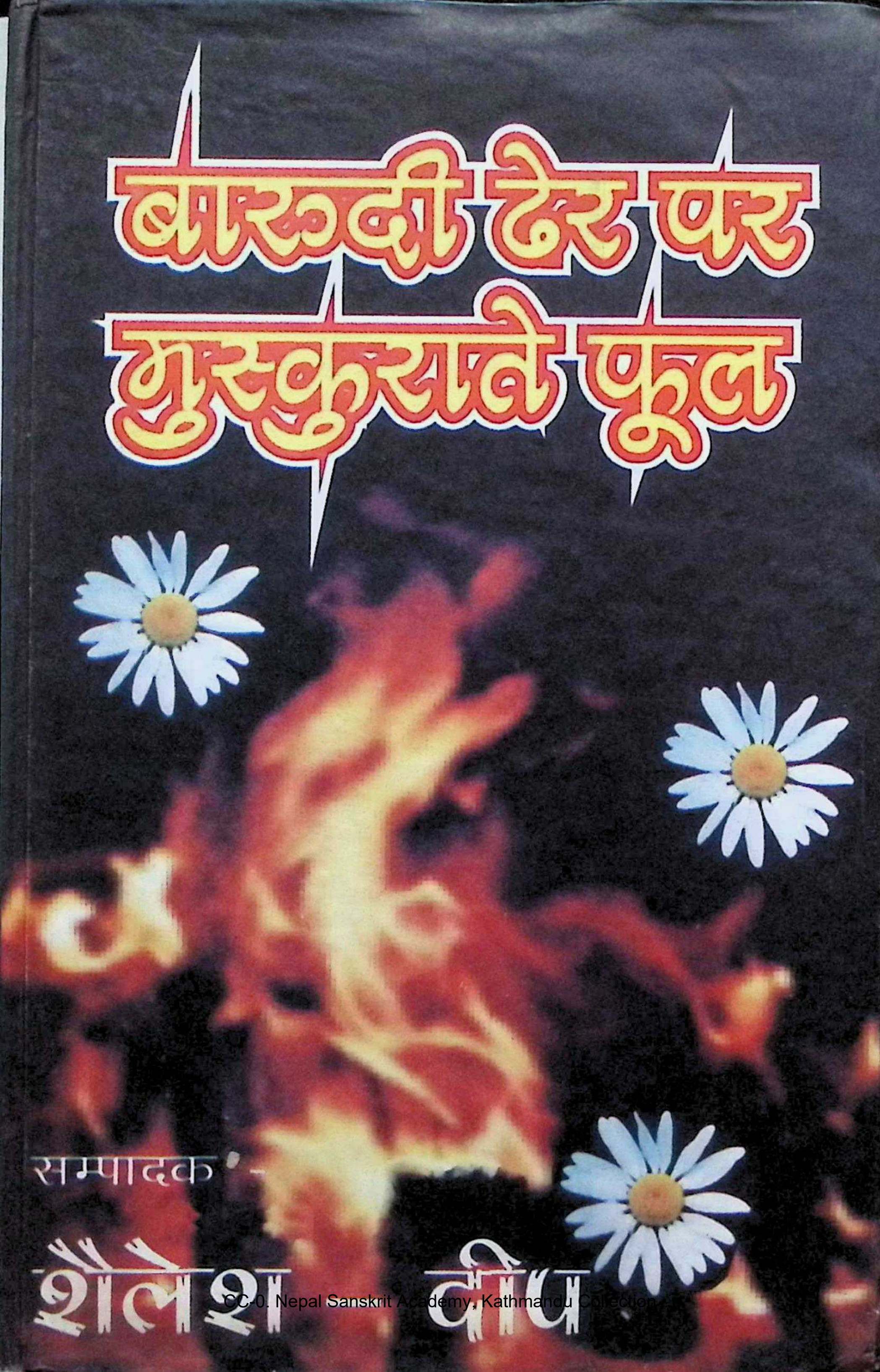

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल

सम्पादक

शैलेश एवम् दीप

प्रकाशक

कीर्ति प्रकाशन

नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सर्वाधिकार : सुरक्षित.

संस्करण : जून २००३.

प्रकाशक : श्रीमती सन्तोष शर्मा,
कीर्ति प्रकाशन,
जूनियर कॉलेज के पीछे,
आठवाँ मील, अमरावती रोड़,
नागपुर ( महाराष्ट्र ) ४४० ०२३.
स्वर दूत : (०७१०४) २२१२१९.

शब्द संयोजन : कीर्ति ग्राफिक्स,
नागपुर-२३.

मुद्रण : जय लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस,
बक्षी ले-आउट,अमरावती रोड,
वाड़ी, नागपुर - ४४० ०२३.
स्वर दूत : (०७१०४) २२१३६६.

बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल — मूल्य : रुपये १००/-

BARUDI DHER PAR MUSKURATE PHOOL — Price : Rs. 100/-

पुस्तक में संकलित रचनाओं में रचनाकारों के अपने विचार हैं.
सम्पादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# समर्पण

सरहद पर जो जूझ रहे नित तूफानो से,
महक रहा यह गुलशन जिन के बलिदानों से.
है समर्पित आज उन्हे ही शब्द सुमन ये,
पुलकित सारा देश है जिनके अभियानों से.

सम्पादक

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# संकलन के संदर्भ में -

मानव विश्व समुदाय की इकाई है. इस समुदाय ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि किसी समय में यह मानव भी इतना खूँखार हो जायेगा कि वह मानव जाति के लिये ही सबसे बड़ा खतरा बन जायेगा.

मानव स्वभाव और व्यवसाय दोनों भिन्न ध्रुव हो सकते हैं और दोनों का आपस में कोई मेल हो पाना सम्भव नहीं होता है, लेकिन मनुष्य है कि वह दोनों से ही ताल मेल मिलाने का न केवल प्रयत्न करता है, अपितु दोहरा जीवन जीने के लिये भी विवश हो जाता है. उसे दोनों ही स्थितियों के साथ निर्वाह भी करना पड़ता है. जो व्यक्ति इन स्थितियों को सहर्ष जी लेता है. वह किसी भी मोर्चे पर असफल नहीं होता.

कभी-कभी किसी व्यक्ति में तो अनेक प्रतिभाओं का संगम एक साथ मिलता है अथवा यह संगम एक दूसरे के पूरक होते हैं. जैसे चित्रकार को अपनी कल्पना तूलिका से प्रस्तुत करनी होती है तो कवि लिख कर उसी कल्पना की अभिव्यक्ति के लिये अपनी लेखनी को माध्यम बनाता है. दोनों की कल्पना एक ही है, जबकि अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि कल्पनाशील व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति प्रदान कर ही देता है अन्यथा उस के मन में एक अजीब सी बेचैनी होती रहती है.

मानव स्वभाव से ही विस्तारवादी भावना अपने मन में संजोता रहा है. जिसके रूप अनेक होते हैं. कभी-कभी यह विस्तारवादी भावना,हाथों में सत्ता आने पर, खतरनाक रूप धारण कर लेती है और वह दूसरे की धरती पर भी न केवल वर्चस्व स्थापित करना चाहता है, अपितु प्रभुत्व भी दर्शाना चाहता है और यही भावना उसे साधू से शैतान बनाने का कार्य करती है.

दूसरी ओर वह अपनी सुरक्षा के लिये भी सन्नद्ध रहता है और

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इस सुरक्षा के लिये ही वह नित नये अस्त्रों-शस्त्रों के अनुसंधान एवं निर्माण में जुटा रहता है.

इसी निर्माण की कड़ी में स्थापना हुई थी प्रथम आयुध निर्माणी की अपने देश में, आज से दो शताब्दी से भी अधिक समय पूर्व तत्कालीन शासकों द्वारा और आज तो यह एक विशाल संगठन के रूप में देश की सेवा सुरक्षा में पूरी तरह सन्नद्ध है.

आयुध निर्माणी संगठन देश की सुरक्षा की चौथी पंक्ति में आता है जो अपने उद्योगों से देश की सीमा पर सन्नद्ध जवानों को आयुध की आपूर्ति करता है. इस संगठन में लाखों व्यक्ति सेवारत हैं.

प्रतिभा पर किसी भी व्यक्ति का एकाधिकार अथवा वर्चस्व नहीं होता. वह किसी भी स्तर पर किसी भी रूप में अपना अस्तित्व दर्शा देती है. यहाँ तक कि कभी-कभी अन्जाने या अनचाहे ही प्रकट हो जाती है. जबकि सम्बन्धित अपनी इस प्रतिभा से स्वयं अन्जान रहता है. हम कह सकते हैं कि प्रतिभा की न तो कोई जाति होती है और न ही कोई धर्म विशेष और न ही किसी की चेरी है कि जिसे जब चाहो किसी को भी स्थानान्तरित किया जा सके.

हमारे आयुध निर्माणी संगठन एवं संलग्न स्थापनाओं में अनेकों प्रतिभाएँ रही हैं और वर्तमान में विद्यमान भी हैं, जो अपने कर्तव्य निर्वाह के साथ-साथ अपने विचारों को, अपनी कल्पनाओं को शब्दों के माध्यम से जनमानस के सम्मुख प्रस्तुत करते रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे. इनके साथ एक मजेदार तथ्य यह है कि इन्हें मशीनों की गड़गड़ाहट में भी संगीत की ध्वनि सुनायी देती है और फिर वही संगीत शब्दों का आश्रय लेकर सुन्दर-सुन्दर रचनाओं में ढल जाता है.

ऐसा केवल उत्पादन से सीधे जुड़े हुए कर्मचारियों के ही साथ नहीं है, अपितु उत्पादन से अप्रत्यक्ष रूप में जुड़े कर्मचारी भी जो निरीक्षण, परीक्षण अथवा कार्मिक कार्यों से सम्बद्ध हैं, उनकी भी प्रतिभा प्रस्फुटित होती है.

हमने भी ऐसे प्रतिष्ठ एवं नवोदित तथा नवांकुरों को इस पुस्तक के माध्यम से एकत्र करने का प्रयास किया है. मैं यह दावा तो नहीं करता कि आयुध निर्माणी संगठन एवं संलग्न स्थापनाओं की सभी प्रतिभाओं को इस संकलन में समेटा है, लेकिन फिर भी पत्राचार के माध्यम से और

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

यदि सम्भव हुआ तो व्यक्तिगत रूप से हमने अपनी बात सभी रचनाधर्मियों तक पहुँचायी है और जो भी हम से सहमत हुए, उन्होंने इस संकलन को तैयार करने में तन, मन और धन तक से सहयोग किया है. मैं आभारी हूँ उन सभी महानुभावों का जिन्होंने इस संकलन को यह रूप देने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया और समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों से भी अवगत कराते रहे हैं.

पुनश्चः प्रसंगवश यहाँ यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज के स्पर्धा के युग में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन करना बहुत बड़ी समस्या है. क्योंकि प्रकाशक तो केवल व्यवसाय की दृष्टि से ही पुस्तकें प्रकाशित करता है और 'बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल' तो केवल एक विभाग विशेष में कार्यरत रचनाकारों का संकलन मात्र है.

इसी क्रम में यह भी उद्धृत करना चाहूँगा कि इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये न तो किसी प्रकार का सरकारी आर्थिक योगदान मिला है, न ही किसी अन्य से अंशदान लिया है, फिर भी एक विभाग विशेष के रचनाधर्मी कर्मियों को समेटना था. अतःपुस्तक के प्रकाशन में सभी रचनाकारों ने आपस में मिलजुल कर प्रकाशन का भार वहन किया है. इस सभी के बावजूद संकलित रचनाओं के चयन की कसौटी और साहित्यिकता में किसी भी प्रकार का पक्षपात ढील अथवा समझौता नहीं हुआ है.

वस्तुतः इस प्रकार के संकलनों के प्रकाशन में रचनाकरों का वरिष्ठता क्रम निर्धारित करना एक कठिन समस्या रहता है. अतः इस समस्या के समाधान के रूप में न तो रचनाकार की उपलब्धियों को देखा गया है और न ही उनके रचनाकाल की अवधि को, अपितु इसके लिये आयु सीमा ही सबसे उत्तम समाधान रहा है. अतः आयु सीमा के आधार पर ही रचनाकारों को वरिष्ठता क्रम में निर्धारित किया गया है.

यद्यपि प्रस्तुत कृति 'बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल' के लिये रचना चयन, सम्पादन एवं गुणवत्ता पर पूरा-पूरा ध्यान केन्द्रित किया गया है. फिर भी सम्भव है कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो. अतः प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि मेरी अन्य कृतियों की भाँति ही इस कृति के गुण-दोषों पर अपनी प्रतिक्रिया से निःसंकोच अवगत करायेंगे.

अब अन्त में मैं उन सभी महानुभावों का भी जिक्र करना अपना कर्तव्य मानता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लिये सामग्री उपलब्ध कराने

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

में अपना सहयोग दिया है. इस क्रम में सर्व श्री साज़ जबलपुरी, राज़ सागरी, इरफ़ान झाँस्वी, मुकुल अर्पित जबलपुर आदि ने अपने क्षेत्र की प्रतिभाओं से न केवल परिचित कराया, अपितु उनकी रचनाएँ भी उपलब्ध करायी हैं. धातु एवं इस्पात निर्माणी, ईशापुर के हिन्दी अधिकारी श्री एस.आर.राय का आभारी हूँ. जिन्होंने अपनी निर्माणी के नवोदित रचनाकार का हमसे परिचय करवा कर रचनाएँ उपलब्ध करायी. इसी क्रम में आयुध निर्माणी, वरणगाँव के हिन्दी अधिकारी श्री एम.के.अहिरे ने अपनी निर्माणी के स्वर्गीय कवि श्री वेद कुमार 'राही' की रचनाएँ तथा छाया चित्र भेज कर हमारी सहायता की है. इसके साथ ही इस संकलन के लिये सामग्री उपलब्ध कराने तथा प्रकाशन में जाने अन्जाने भी जिन महानुभावों ने अपना सहयोग दिया है. उन सभी का हम हृदय से आभार मानते हैं.

अब अन्त में सभी की ओर से मैं आभार मानता हूँ अपने पुत्र प्रशान्त शर्मा तथा पुत्री कीर्ति शर्मा का, जिन्होंने पुस्तक की सामग्री का कम्प्यूटराईज़ करने में अपना सहयोग दिया है. साथ ही आभारी हूँ श्री विनायक रागीट का, जिन्होंने अपनी प्रेस में पुस्तक को छापने में सबसे अधिक वरीयता प्रदान की और पुस्तक को यह रूप दिया, जो पाठकों के हाथों में है पढने और बहुमूल्य प्रतिक्रिया प्रेषित करने के लिये. अस्तु !

शैलेश

सम्पादक

राम नवमीं : २००३.

दिनांक : ११ अप्रैल २००३.

जूनियर कॉलेज के पीछे,
आठवाँ मील, अमरावती रोड,
नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३.
स्वर दूत : (०७१०४) २२१२१९.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मुझे भी कुछ कहना है : -

आयुध निर्माणी संगठन के दो सौ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं. अतः इस द्विशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर, हम संगठन से जुड़े समस्त अधिकारी,कर्मचारी एवं मेहनतकश मजदूरों तथा उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देते हुए उनका अभिनन्दन करते हैं.

संगठन के द्विशताब्दी वर्ष पूरे होने के अवसर पर देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्थित निर्माणियों ने अपनी-अपनी सुविधा तथा साधनों के अनुरूप अनेको समारोह आयोजित किये. कहीं-कहीं अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया. इन कवि-सम्मेलनों में देश के विख्यात कवियों के साथ-साथ उन कवियों को भी आमंत्रित किया गया. जो आयुध निर्माणी संगठन से जुड़े हुए हैं. सम्पन्न कवि-सम्मेलनों में ससम्मान भाग लेने का सुखद सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ. मैंने एहसास किया कि निर्माणियों में सेवारत् शब्द साधक कहीं भी किसी ख्यााति प्राप्त मंचीय कवि से किसी भी रूप में कम नहीं हैं. जरूरत है तो केवल उनकी प्रतिभा के सही मूल्यांकन की.

इसी बात को ध्यान में रख कर हमने एक योजना तैयार की तथा भिन्न-भिन्न निर्माणियों से पधारे रचना धर्मियों से चर्चा की. लोगों ने हमारी योजना को सहर्ष स्वीकारा तथा हमें आश्वासन भी दिया कि वे इस अभियान में हमारे साथ हैं. किन्तु मैंने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया कि जो आश्वासन देते हैं, वे केवल आश्वासन भर देना जानते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं.

आयुध निर्माणी, अम्बाझारी में सेवारत् जाने-माने युवा उपन्यासकार,लेखक, समालोचक एवं प्रतिष्ठ कवि भाई (डा.) शशि वर्धन शर्मा 'शैलेश' ने स्वयं सम्पादन का भार स्वीकार कर मुझे और मेरी कल्पना को मूर्त रूप देने में अपना सक्रिय योगदान देकर मुझे कृतार्थ किया है. कृतज्ञ हूँ मैं भाई शैलेश के प्रति. आपने आयुध निर्माणी संगठन से जुड़े लगभग दो सौ से भी अधिक प्रतिभा सम्पन्न कवियों से पत्राचार के माध्यम से रचनाएँ आमंत्रित की, किन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि अधिकतर प्रतिष्ठ एवं प्रतिभा सम्पन्न हस्ताक्षरों ने प्रत्युत्तर तक देना मुनासिब नहीं समझा. उनका बड़प्पन ही उनके आड़े आ गया. फिर भी हम हतोत्साहित अथवा विचलित नहीं हुए. हम निरन्तर बढ्ते ही गये, अपनी मंजिल की ओर. परिणाम आज आपके सामने है.

सर्वश्री ओम प्रकाश वाल्मीकि, राही भोजपुरी, कृष्ण कुमार पाठ्क 'रसिक, सबा बिलग्रामी, डा. कौशल दुबे, श्याम नारायण मिश्र, श्रवण कुमार शुक्ला, देवेन्द्र सफल,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामचद्र नेमी, महेश सक्सेना, मो.बशीर अहमद, साहिल शाहजहाँपुरी, श्रीमती शशि प्रभा मिश्रा आदि ऐसे नाम हैं, जिन की सहभागिता इस संकंलन के लिये अनिवार्य थी. किन्तु इन महान विभूतियों से सहयोग प्राप्त करने में हम असफल ही रहे. मुमकिन है कहीं न कहीं, कोई न कोई, कमी तो हम में ही रही होगी. तभी तो हम इन कलम के सिपाहियों का सहयोग पाने से वंचित रह गये. इन महानुभावों की अनुपस्थिति के वगैर भी संकलन तैयार हुआ जो आज आप के हाथों में है. बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूलों की कसैली गन्ध आपको कितना आकर्षित कर पाती है. अब यही देखना शेष है.

जहाँ तक काव्य-सृजन का प्रश्न है. इस संदर्भ में मेरी मान्यता है कि -

*बुद्धि जब चिन्तन से अपने, भावों की गहराई नापे,*
*अर्न्तमन के कल्प- कुँज में, शब्द सुमन पुष्पित हो जाते.*
*स्वर भ्रमर पी कण्ठ पराग, अनुगुंजित वाणी को कर दे तब,*
*संवेदन की सुर - सरिताएँ, गीत-ग़ज़ल घट छलकाती हैं.*

जिन हाथों ने लोहा तपा कर अस्त्र-शस्त्र घड़े हैं, उन्ही कर्मठ हाथों ने हृदय की संवेदन शीतलता को स्पर्श कर ये शब्द सुमन भी खिलाये हैं. अतः"बारूदी ढेर पर मुस्कुराते फूल" भी उसी उर्वरा भूमि की उपज है. जिस भूमि पर गत दो सौ वर्षो से अस्त्र और शस्त्र उपजाते रहे हैं अर्थात उक्त संकलन में समाहित समस्त रचनाकार एक ही संगठ्न के अपने एक ही परिवार के सदस्य हैं.

हम अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं उन सभी सहयोगियों के प्रति जो इस संकलन में कदम से कदम मिलाते हुए हमारे साथ हैं. हम आभारी हैं उन के भी, जिन्होंने समय-समय पर हमें पत्रांकित कर मार्ग-दर्शन दिया और करते रहे हैं निरन्तर प्रोत्साहित हमें अपने कर्तव्य निर्वाह हेतु. वैसे भी हम तो केवल-

*अक्षर बोते हैं,शब्द उगाते हैं,फसल गीतों की काटते हैं हम.*
*अरे ! हम वो बंजारें हैंजो दर्द सहते हैं,आँसू पीते है,प्यार बाँटते हैं हम.*

हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं अपने समस्त शुभ चिन्तकों, हितैषियों एवं सहयोगियों के प्रति .

हमें आपकी प्रतिक्रिया का बेसब्री से इन्तजार है. अस्तु !

*मकर संक्रान्ति : २००३.*

विनोद कुमार उइके 'दीप'
सह सम्पादक

*लक्ष्मण अपार्टमैंट,*
*कोहले-ले-आउट, खड़गाँव रोड, वाड़ी,*
*नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३.*
Ioj nw %½07104½222904.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# कौन कहाँ .....??


१ - राम प्रसाद अटल : १८
२ - स्व. वेद प्रकाश शर्मा 'सुमन' : २०
३ - मुनि कुमार कुलश्रेष्ठ : २२
४ - ओम प्रकाश 'अडिग' : २४
५ - स्व. धर्म दत्त शुक्ल 'व्यथित' : २६
६ - विनोद कुमार उइके 'दीप' : २८
७ - दुलाल कृष्ण चटर्जी : ३०
८ - साज़ जबलपुरी : ३२
९ - डी.पी.कछवाहा 'घायल' : ३४
१० - बी.एल.मनावरिया : ३६
११ - हीरालाल शेण्डे 'हीरा' : ३८
१२ - रमेश कुमार मित्तल : ४०
१३ - इन्द्र बहादुर श्रीवास्तव 'इन्द्र' : ४२
१४ - नारायण दास मौर्य 'नम्र' : ४४
१५ - शैलेश : ४६
१६ - दिनेश बाजपेयी : ४८
१७ - जय प्रकाश शर्मा 'जय' : ५०
१८ - रमेश चन्द्र अवस्थी 'आजाद' : ५२
१९ - डॉ. सलप नाथ यादव 'प्रेम' : ५४
२० - वी.के. श्रीवास्तव 'वीरू' : ५६


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

२१ - छगन पंचे : ५८
२२ - यदुनाथ सेउटा : ६०
२३ - हृदयेश कुमार कुरील 'अश्क' : ६२
२४ - चन्द्र पाल सिंह 'श्रमिक' : ६४
२५ - भाऊराव मुले 'वियोगी' : ६६
२६ - मो. जमील अफसर : ६८
२७ - मनोहर गजभिये 'मनु' : ७०
२८ - लक्ष्मण प्रसाद डेहरिया 'खामोश' : ७२
२९ - श्रीमती शोभना उइके 'शोभा' : ७४
३० - श्रीराम नारायणराव बाटवे 'दयाल' : ७६
३१ - अशोक बाजपेयी : ७८
३२ - राम सनेही कनौजिया 'स्नेही' : ८०
३३ - विनोद कुमार गर्ग : ८२
३४ - मो. अनवर कामटवी : ८४
३५ - अशोक कुमार सोनी : ८६
३६ - डॉ.जमना प्रसाद 'चंचल' : ८८
३७ - सुरेश दर्पण : ९०
३८ - शाहदीन शाह : ९२
३९ - लक्ष्मीकान्त भाण्डारकर : ९४
४० - इरफान झाँस्वी : ९६
४१ - राज़ सागरी : ९८
४२ - एम. श्रीराम : १००
४३ - विनय पटवर्धन 'विनम्र' : १०२
४४ - भोजराव गणेशे : १०४
४५ - श्रीमती अमीता गहलोद : १०६
४६ - मोहन सिंह कुशवाहा : १०८
४७ - शेख अब्दुल लतीफ़ 'बेचैन' : ११०
४८ - नवीन दुबे 'निरंकुश' : ११२
४९ - अविनाश मा. बेन्द्रे : ११४
५० - शरदेन्दु शुक्ल 'शरद' : ११६
५१ - दिव्य प्रकाश द्विवेदी : ११८

CC0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

५२ - राजेश मिश्रा : १२०
५३ - मुकुल अर्पित : १२२
५४ - इन्द्र प्रसाद 'अकेला' : १२४
५५ - मनोहर लाखोरकर 'जगभाई' : १२६
५६ - विवेक जोशी 'विवेक' : १२८
५७ - सुनील सिंह सजवान : १३०
५८ - अरविन्द कुमार नौटियाल : १३२
५९ - एहसास जबलपुरी : १३४
६० - शकील ख़ान जबलपुरी : १३६
६१ - संदीप शंकर आड़े : १३८
६२ - सोहन परोहा 'सलिल' : १४०
६३ - स्व. वेद कुमार 'राही' : १४२
६४ - सुदर्शन वर्मा 'सलिलेश' : १४४
६५ - ललित कुमार मोहोड 'ललित' : १४६
६६ - जितेन्द्र नाथ शर्मा 'जितांशु' : १४८
६७ - ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' : १५०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# तेरा ही वन्दन करें

दीपों से अर्चन करें, और स्वरों से पूजन करें,
हे मातु शारदे ! हम सभी मिल, तेरा ही वन्दन करें.

ले करों में लेखनी हम, शब्द-पुष्प अर्पित करें,
सत्यता का थाम आँचल , असत्य से हम नहीं डरें.

कर दूर दूषित मानसिकता, वातावरण चन्दन करें.
हे मातु शारदे ! हम सभी मिल, तेरा ही वन्दन करें.

न्याय धरा पर हो अडिग, ऐसा कुछ वरदान दे,
अन्याय से रह दूर यह जग, ज्ञान को सम्मान दे.

सुख, शान्ति के संग हम सभी, समृद्धि का अर्जन करें,
हे मातु शारदे ! हम सभी मिल, तेरा ही वन्दन करें.

हैं समर्पित भावनाएँ, निज ज्ञान की तेरे चरण,
अज्ञान को कर दूर इतना, जैसे हैं धरती - गगन.

बस ! ज्ञान की गंगा बहा, सद्भाव का सृजन करें,
हे मातु शारदे ! हम सभी मिल, तेरा ही पूजन करें.

शैलेश


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

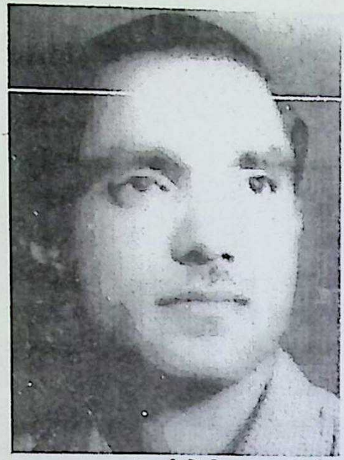

# रामा प्रसाद "अटल"

आपका जन्म : १ जनवरी १६२३ को उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर में हुआ. आपने बी.ए., बी.जी.एल. तथा साहित्य विशारद तक शिक्षा प्राप्त की है. आप ४० वर्षो तक आयुध निर्माणी संगठन में कार्य करते हुए जुलाई १६८४ में वाहन निर्माणी, जवलपुर से स्टोरहोल्डर के पद से सेवानिवृत हुए.

आप गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में समान रूप से लिखते हैं. आपकी लेखनी ने हिन्दी, उर्दू के साथ अंग्रेजी में भी सृजन कार्य कर गौरव प्राप्त किया है. देश की अनेकों शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ यदा कदा प्रकाशित होती रहती हैं.

"नर्क में देश भक्त" (कहानी-संग्रह), अटल की कविताएँ (कविता-संग्रह) नाटक-वेकार, वेढव वंगाल तथा पहली तारीख आदि आपकी मौलिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं. आप अनेकों पुरस्कारों से पुरस्कृत मंच के स्थापित व्यंग्य कवि हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* "हर्षालय", निकट झण्डा चौक, पुरानी वस्ती, राँझी, जवलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२ ००५. *स्वर दूत :* (०७६१) २३३४८७५ व २३३२१४२.

## उद्बोधन देश को

उठो देशवासी जरा मुँह तो धो लो,
नही अब समय है कि अब और सो लो.

गुजरी हैं सदियाँ, करवटें बदलते,
चढ़ा सिर पे सूरज, नयन बंद खोलो.

जमाने को सौगात, हम शान्ति की दी,
मिला बदले क्या ,जरा वह भी तोलो.

हम शान्त हैं जो, निर्वल न समझो,
झड़प शेर खाने, को तैयार हो लो.

पैंसठ भी जीता, इकहत्तार भी जीता,
निन्यानवे भी, रहा कैसा बोलो?

जन्म से ही जहरीले, है साँप-बिच्छू,
औरों के जीवन में, जहर मत घोलो.

मजहब सिखाता है, हर बशर से प्यार,
मारकाट करने की, आयत टटोलो.

उसूल हर मजहब में,अटल है उसी पर,
डावाँडोल तुम हो, हर कदम पे डोलो.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# रिश्ते

एक ही प्रश्न करूँ मैं कृष्ण, कब तक अत्याचार सहें हम?
ऊपर से सब देख रहे हो, क्या निज मुख से उसे कहें हम.
तुम गीता में गाया गीत कि, जब-जब होती धर्म की हानी,
साधु जनों पर हावी होंगे, अधम, असुर, पापी, अभिमानी.

तब भू-भार संतुलित करने, धर्म और देवत्व को भरने,
लोगे जन्म कष्ट को हरने, जीव-जन्तु मानव को तरने.
कहाँ गया वह वचन तुम्हारा, था क्या अर्जुन को बहकावा.
कि वह भ्रमित हो भाषण पर, बोल दे कौरव दल पर धावा.

लाखों गो-वध होते रोज, तुम गोपाल रहे हो देख,
कौन विवशता में जकड़े हो, या फिर सम्मुख लक्ष्मण रेख.
असुर बढ़ गये हैं विध्वंसक, सुर अपने सुर भूल गये,
देवालय कुछ मदद न करते, धर्म-मर्म सब धूल भये.

महाकाल का तांडव हरदम, घर-मंदिर में छम-छम करता.
देवी-देव पड़े सोते हैं, घड़ा पाप का हरदम भरता.
नारी वर्ग जलाया जाता , तेल डाल , तन्दूर में झोंक.
वस्त्र हरण, अपहरण तथा वध, क्यों न देते इनको रोक.

वस्त्रहीन होती जब देखी , द्रुपद-सुता का चीर बढाया,
वही नारी तो आज भी है, क्यों उन पर तरस न खाया.
एक रहस्य समझ में आया , छोटे मुँह है बात बड़ी,
पर न सत्य कभी छिपता है, भले सहे यातना कड़ी.

कुन्ती तुम्हारी बुआ पूज्य थी, द्रोपदी उनकी बहूरानी,
कैसे न तुम लाज बचाते, थी गरिमा रिश्तों की जानी.
'अटल' हैं हम ऐरे - गैरे, जग हमने देखा - भाला,
रिश्तों का ही है बोलबाला, बाकी सब का मुँह काला.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# (स्वर्गीय) वेद प्रकाश 'सुमन'

सुमन जी का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद मुजफ़्फ़रनगर की तहसील जानसठ के अन्तर्गत एक छोटे से गाँव दहौड़ा के निवासी श्री भरतसिंह शर्मा एवं श्रीमती बन्शो देवी के जीवन कानन में दिनांक : १ जुलाई १६४० को हुआ. आपने अपना संघर्षमय जीवन जीते हुए हिन्दी साहित्य में एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी. आप तत्कालीन आई. ऑफ ए. (धातु) (वर्तमान : वरिष्ठ गुणता आश्वासन स्थापना ), मुरादनगर में परीक्षक के पद पर कार्य-रत् थे. दिनांक : २ जुलाई १६६५ को एक कवि-सम्मेलन से घर लौटते हुए एक दुर्घटना में आपका निधन हो गया.

आप राष्ट्रीय चेतना के वरिष्ठ एवं ओजस्वी कवि थे. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से अनेको वार आपकी रचनाएँ प्रसारित हुई हैं. आप न केवल राष्ट्रीय कवि-सम्मेलनों में, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय कवि-सम्मेलनों में भी ससम्मान आमंत्रित किये जाते रहे हैं. देश के राष्ट्रपति भवन से लेकर मारीशस तक में आपने काव्य-पाठ किया है. आप अपनी काव्य-साधना हेतु तत्कालीन महामहीम राष्ट्रपति डॉ. शकंर दयाल शर्मा द्वारा सम्मानित हो चुके हैं. आज आप हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन आपकी ओजस्वी वाणी एवं महकते शब्द सुमन आज भी हमें ओजस्विता प्रदान कर रहे हैं.

## श्रमिक

चल चला चल काम कर, तू चल चला चल चल,
ओ ! श्रमिक तू , देश की तकदीर है.

मन्दिर ओ, मस्जिद ओ, गिरजे और गुरद्धारे सभी,
ये भवन , ऊँचे निकेतन , ताज, मीनारें सभी.
ये तेरे श्रम से बनी , तस्वीर है,
ओ ! श्रमिक तू , देश की तकदीर है.

महल कहते हैं हिकारत से कि तू मजदूर है,
झोपड़ी कहती शराफत से कि तू मजबूर है.
राम है तू , कृष्ण है तू , पीर है,
ओ ! श्रमिक तू , देश की तकदीर है.

तू रूका तो देश की , हर योजना रूक जायेगी,
तू रूका तो उन्नति की , साधना रूक जायेगी.
तू वतन की शान है , तदवीर है,
ओ ! श्रमिक तू , देश की तस्वीर है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# कर्म लेखनी लिख जाती है

अमर कथा उनकी जीते जो, जन - जन के विश्वास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.
हरिश्चन्द ने सत की पावन, गाथा लिखी महान है,
विश्वामित्र, वशिष्ठ मुनि, दो सतयुग की पहचान है.
नित कण-कण गाता दधीचि के, दान कर्म अविनास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है , स्वयं पुरुष इतिहास को.
थे गौ - भक्त दिलीप एक, रघु राजा और बलवान थे,
भक्त विभीषण, सेवक लक्ष्मण, त्रेता में हनुमान थे.
मिला जनक, आदेश निभाने, राम चले बनवास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.
अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, भीष्म पिता, व्यास का देश है,
ज्ञानी विदुर, कर्ण दानी से, महा - पुरुष का देश है.
गाती यमुना श्री कृष्ण के, द्वारा कंस विनाश को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.
महावीर स्वामी, गौतम के, स्नेह सनित उपदेश है,
और कोटि चाणक्य तपस्वी, के नीति संदेश है.
नमन करे साहित्य हमारा, कवि - कुल कालीदास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.
ध्रुव, प्रहलाद बाल बैरागी, ज्ञानेश्वर शिशु सन्त है,
दयानन्द, शंकराचार्य का, ज्ञान विराट अनन्त है.
पर्वत राज ललाट झुकाये, नानक और रैदास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.
करें प्रणाम पटेल , तिलक, गोखले, जवाहर लाल को,
गाँधी, बिस्मिल, भगत सिंह, आजाद, बहादुर लाल को.
युग - युग दोहरायेगा इनके, गौरव से इतिहास को,
कर्म - लेखनी लिख देती है, स्वयं पुरुष इतिहास को.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मुनि कुमार कुलश्रेष्ठ

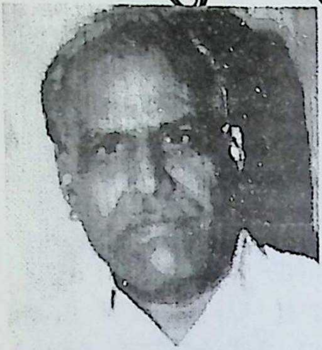

वहुमुखी प्रतिभा के धनी मुनि कुमार कुलश्रेष्ठ का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ नगर में भाद्रपद अमावश्या १९९६ अर्थात् २० जुलाई १९४० को हुआ.

आपने वी.ए. टैक्सटाइल इन्टीटयूट से डिप्लोमा तथा दिल्ली से अग्नि शमन पर्यवेक्षक का डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया. आपने १९५८ में सिलाई गणित शिक्षक के रूप में "राष्ट्रीय शिक्षात्मक तथा कलात्मक विद्यालय अलीगढ में एक शिक्षक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया. पश्चात् सन् १९६३ में आपने आयुध निर्माणी संगठन को अपनी सेवाएँ अर्पित की. आपने अग्नि शमन अधिकारी के पद पर रहते हुए अवकाश ग्रहण किया.

आप गद्य एवम् पद्य दोनों ही विधा में सिद्ध हस्त सृजनकर्ता हैं. आपकी रचनाएँ देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती आ रही हैं. प्रजातन्त्र शिक्षा ( गद्य) त्रिवेणी (काव्य) किवाड़ ( हिन्दीतर भाषियों की उलझनों का समाधान ) आदि कृतियाँ प्रकाशित हैं तथा त्रिलोचन, पैसे से,अभिलाषा तथा उद्‌गार आदि कृतियाँ प्रकाश्य हैं.

आपने चन्द्र तिथि, दिनांक तथा दिन सहित अनंत कालीन कलेण्डर का भी निर्माण किया है. साथ ही आपने गणित के अनसुलझे तथ्य पर शोध कार्य किया है. पुस्तक 'अर्वा' में वृत की परिपूर्णता सिद्ध की है जो अभी तक सिद्ध नहीं हो पायी है. मलेरिया रोग का शर्तिया निदान. जिससे अव तक लगभग ३०० रोगी स्वास्थ लाभ प्राप्त कर चुके हैं.दवा निःषुल्क दी जाती है.

*सम्पर्क सूत्र :* सी/१, सुन्दरनगर (डव्लूसीएल) वणी क्षेत्र, पो.पुनवट, जनपद - यवतमाल, (महाराष्ट्र) ४४५ ३०४. *स्वर दूत :* (०७२३९) २३२३२९ तथा २३२३६९.

## सर्कस की शान

इस सर्कस के बाड़े में कुछ पशु - पक्षी जन्तु हैं,
बाड़े में सब-सब जकड़े से कोई स्वच्छन्द नहीं है.
वे अपनी निज इच्छा से डग एक नहीं चल पाते हैं,
स्वामी की आकांक्षा से नित नये खेल दिखलाते हैं.
कहलाता जंगल का राजा उसका अस्तित्व नहीं है,
जंगल के इस बाड़े में कोई सन्तुष्ट नहीं है.
लकड़ी के बल बन्दर नाचे निरी उछल-कूद करते हैं,
हण्टर के बल पर सव ये हाथी - घोड़े चलते हैं.
जब जिस का नम्वर आये इस बोले में आ जाये,
जनता की आँखों को निज सर्कस की शोन दिखाये.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# आयुध निर्माणी , चाँदा.

चाँदा से पैसिंजर में,
या बस में करो सवारी.
भाँदक के स्टेशन से,
पकड़ो फिर कोई गाड़ी.

जंगल के बीच में देखो,
एक चौरस चार दिवारी.
मानो कोई खिली हुई हो,
एक सुन्दर सी फुलवारी.

जहाँ "इन्द्रप्रस्थ"की शोभा,
मानो कोई इन्द्रपुरी है.
शिशु को गोदी में धारे,
जहाँ बैठी एक परी है.

लेती नित पवन झकोरे,
नव शिशुओं की शिक्षा को.
विद्यालय भी सुन्दर है,
यहाँ लेने गुरू-दीक्षा को.

चल - चित्र मनोरंजन या,
जलपान गृहों की शोभा.
महिला कल्याण समिति की,
सेवा देती नित मेवा.

कही कृष्ण और विष्णु का,
या विश्वनाथ का देवालय.
नव युवकों की है कर्मभूमि,
या पवन युक्त सा क्रीड़ालय.

इस कर्म भूमि में आकर,
कितनों ने उन्नति पायी.
जब कूटनीति अपनायी,
कितनों ने टिकट `

कोई टिकट कानपुर का ले,
कोई गया नागपुर पूना.
कोई मुख्यालय कलकत्ता,
लेकर के सरकारी भत्ता.

तुम कर्म करोगे जैसा,
प्रतिफल पाओगे वैसा.
यह नियम है सुन्दर कैसा,
श्रम का प्रतिफल एक पैसा.

निज की कुछ हानि नहो तो,
नित भला करो जनता का.
नही साथ मिलेगा कोई,
दुर्दिन में उस वनिता का.

यदि श्रम करना तो आओ,
मत बातें व्यर्थ बनाओ.
जिन को व्यवसाय न कोई,
उन सब को यहाँ बुलाओ.

कर शिक्षा से छुटकारा,
तुम आ इससे जुड़ जाओ.
निज पास पास में रख कर,
नित रोजगार को जाओ.

पहले शिक्षा-चालीसा, सब,
नियम याद तुम कर लो.
निज मन में सोच समझकर,
जो कुछ गुनना है गुन जो.

फिर छोड़ो कानपुर बाँदा,
और चलो ट्रेन से चाँदा.
भारत में चाँद सी चमके,
अपनी आयुध निर्माणी,चाँदा.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ओम प्रकाश श्रीवास्तव 'अडिग'

उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहाँपुर के निवासी श्री महादेव प्रसाद श्रीवास्तव के परिवार में दिनांक : ७ अगस्त १९४१ रक्षाबन्धन के दिन आपका जन्म हुआ. आपने स्नातक तथा साहित्य रत्न तक की शिक्षा प्राप्त की. आप आयुध वस्त्र निर्माणी, में कार्यालय अधीक्षक के पद पर सेवारत् रहते हुए ३० जून २००२ को सेवा निवृत हुए. वर्तमान में आप स्वतंत्र रूप में साहित्य-साधनारत् हैं. आपकी रचनाओं में प्रेम, मानवीय चरित्र एवं प्रकृति के मूल रूप मुखरित हुए हैं. आप विश्व एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर चिंतनरत् बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा सहजता के पक्षधर कवि हैं.

आपके 'क्वाँरे गीत', 'पीढी बोल उठी' तथा 'युद्ध के वाद' शीर्षक से तीन काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अनेक पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं. देश की अनेक प्रतिष्ठ पत्र - पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ ससम्मान स्थान पाती रही हैं तथा समय-समय पर दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से प्रसारण. कई संस्थाओं द्वारा आप सम्मानित हो चुके हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* रोशनगंज, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) २४२ ००१. *स्वर दूत :* (०५८४२) २२३४६६

## मेरे मन को पुनः दुखाने

रह - रह आ जाते नयनों में, उज्ज्वल हो कर चित्र पुराने,
मेरे मन को पुनः दुखाने.
वे क्षण जिन में हम तुम घूम, पथ की अन्तिम सीमाओं में,
छू करके आकाश वँधे हम , जाने कैसे मृदु वाहों में.
जाने कैसे आ जाते हैं , क्षण फिर मुझको वहाँ बुलाने?
मेरे मन को पुनः दुखाने.
जाने कितना भव्य सहन है, मन भर कौन यहाँ रह पाता?
पर एकाकी मेरे स्वर को , यह निर्जन जाने क्यों गाता?
मौन विवशताओं के अपने , शूल चुभो जाने - अनजाने,
मेरे मन को पुनः दुखाने.
शब्द नही मिल पाते जिससे , वर्णन कर हल्का हो जाऊँ,
उमड़ रही अभिव्यक्ति हृदय में, कैसे फिर उसको गा पाऊँ?
तुम आयीं, फिर क्या मेरा यह, जीवन का सुख चैन चुराने.
मेरे मन को पुनः दुखाने.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# प्रतीक्षा मत करो

यूँ हृदय में इन्द्रधनुष के रंग भर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.
यूँ गगन के द्वार पर श्रृंगार कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.

मृतिका सी इस धरा का प्रिय विकल असमर्थ है,
कौन समझे भावना का स्वर्ण सा प्रिय अर्थ है.
कल्पनाओं के सजे संसार क्षण में मिट गये,
फिर मिलन की बात गंधित प्रिय तुम्हारी व्यर्थ है.

यूँ स्वयं के रूप की भरमार कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.
यूँ गगन के द्वार पर श्रृंगार कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.

सो रही थी जो असल में, यामिनी वह जग पड़ी,
और पश्चिम की दिशाएँ , झाँकती चुप के खड़ी.
नेह में डूबी हुई तुम, देख निज पट के न पाओ,
किन्तु मैं तो देखता हूँ , द्वेष की दुनिया बड़ी.

यूँ किरण की लाज लाली डाल कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.
यूँ गगन के द्वार पर श्रृंगार कर , सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.

एक सी रहती सदा हो,तुम गगन की चिर कुआँरी,
ज्ञात हम को है न माटी, मूर्ति जो बनती हमारी.
दृष्टि केवल है भटकती,टिक नही पाती कभी जो,
धूल कण की साधना से, गंध कब होती तुम्हारी.

यूँ हमारी नींद से तुम प्यार कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.
यूँ गगन के द्वार पर श्रृंगार कर, सूर्य की बेटी प्रतीक्षा मत करो.


CC-0 Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# (स्वर्गीय) धर्म दत्त शुक्ल 'व्यथित'

आपका जन्म संस्कारधानी नगरी जबलपुर के नर्मदा कछार में दिनांक : १३ अक्तूबर १९४१ को हुआ था. आप बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वायु शस्त्र निरीक्षण स्कंध, जबलपुर में परीक्षक के पद पर कार्यरत् रहे. सन् १९८४ में आपका आकस्मिक निधन हो गया.

आप गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में समान रूप से लेखनी चलाते रहे. आप जबलपुर की अनेकों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े रहे तथा मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ के सक्रिय सदस्य थे. आपकी 'व्यथाओं की परिधि में' नामक काव्य कृति प्रकाशित एवं चर्चित रही. देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती रही. आज भी 'व्यथित' जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवित हैं और भविष्य में भी जिन्दा रहेंगीं.

व्यथित जी की स्मृति को सादर नमन करते हुए यहाँ हम उनकी कुछ रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं : -

## ग़ज़ल

चेहरा कोई भी पहचान में नहीं आता,
भीड़ का धर्म है अनुमान में नहीं आता.

जिसके नाम फलक पर लिखा हो सूर्य पुत्र,
कोई ऐसा मेरे मकान में नहीं आता.

वैसे तो सड़क के टूटे हुए पुल सुधरे हैं,
पर वो आँगन का नशा ध्यान में नहीं आता.

धुँध की झीनी भवनिंद्रा का उलट दो घूँघट,
चाँदनी का मजा व्यवधान में नहीं आता.

तुम्हारे नाम से जुड़ती है पूर्णता मेरी,
तुम को पाना किसी अनुदान में नहीं आता.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# यह खालीपन की सराय में

यह खालीपन की सराय में लोकतंत्र का डेरा,
नीले बदन चूमता विषधर, चन्दन बना सपेरा.
सूखे हुए ठूंठ पर बैठे, कौवे तिलक लगायें,
बगुले सुना रहे मोती के, चर्चे भीड़ लगाये.
कंचन पीता रुधिर, पसीना, बिलख-बिलख कर रोये,
हरसिंगार की जगह, बागवानों ने काँटे बोये.
अब पानी में नहीं, आँसू, में डाले जाल मछेरा,
नीले बदन चूमता विषधर, चन्दन बना सपेरा.
मंडराये धरती से नभ तक, चीखें और कराहें,
अभिशापित संकल्पित सपने, बने तिमिर की बाहें.
यह उफनाता धुआँ, जहर से, बुझा हुआ कोलाहल,
पथराओं से घिरे आइने, बने खण्डहर आँचल.
मन्दिर का उद्घाटन करता, मूरत - चोर लुटेरा,
नीले बदन चूमता विषधर, चन्दन बना सपेरा.
यह अभाव कुंठाओं का, वीभत्स पूर निर्बन्धित,
मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर हैं, पण्डों से अनुबन्धित.
अँधियारा बांसुरी बजाये , नीरवता शहनाई,
रफू कहाँ तक करे आसमाँ, को भूखी तरुणाई.
विश वृक्षों के नीचे, जीवन का बीमार बसेरा,
नीले बदन चूमता विषधर, चन्दन बना सपेरा.
किन्तु गले तक डूबा हुआ, सत्य हुआ जब बागी,
जब से नव प्रकाश ने, अँधियारे में आग लगा दी.
एक लहर वह सागर भर की, गहराई हिला रही है,
तूफानों से जूझ लक्ष्य से , आँखें मिला रही है.
श्मशानी निस्तब्ध मौन से, प्रगटा नया सवेरा,
नीले बदन चूमता विषधर, चन्दन बना सपेरा.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विनोद कुमार उइके 'दीप'

आपका जन्म मध्य प्रदेश में सतपुड़ांचल के जिला : छिन्दवाड़ा के ग्राम आमाकुही में दिनांक : १३ नवम्बर १९४३ को हुआ. आपने इण्टर साइंस राष्ट्र - भाषा कोविद तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वायु शस्त्र निरीक्षण स्कन्ध, अम्बाझरी में तकनीकी कार्यविक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आप गीत, ग़ज़ल, मुक्त छन्द, दोहा आदि काव्य की हर विधा में पारंगत हैं. लेख, कहानी, समीक्षाएँ आदि देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती आ रही हैं.

आपकी सौ से अधिक स्तरीय प्रतिनिधि संकलनों में रचनाएं प्रकाशित हैं तथा पाँच मौलिक काव्य-कृतियाँ क्रमशः'दर्द के सलीब पर','पीड़ा के पाहुन' (महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के सहयोग से प्रकाशित) 'दर्द का सैलाब' ( केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा पुरस्कृत ) अनुभूतियों के स्वर तथा 'एहसास का एहसास' प्रकाशित हो चुकी हैं. इसके अतिरिक्त दो सम्पादित कृतियाँ राष्ट्रीय गीत-संग्रह और साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़लें प्रकाशित हैं.

समय - समय पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण. अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के मंच के ओजस्वी जनवादी कवि तथा कुशल मंच संचालक हैं. अनेक शोध-ग्रन्थों में प्रमुखता के साथ उल्लेख. आप महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा, लोकसभा अध्यक्ष श्री पी.ए.संगमा तथा अतिरिक्त रक्षा सचिव श्री धीरेन्द्र सिंह द्वारा सम्मानित हैं. अनेकों साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मानोपाधियों से सम्मानित दीप जी अमेरिकन वायोग्रफिकल इंस्टीट्यूट द्वारा "रिसर्च वोर्ड ऑफ एडवाइजर्स" की सदस्यता से सम्मानित हैं. अनेकों साहित्यिक संस्थाओं के आप सम्मानित पदाधिकारी हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* "साहित्य सुरभि", लक्षमण अपार्टमैंट्स, कोहले ले-आऊट, खड़गाँव रोड, वाड़ी, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२२९०४.

## चतुष्पदिका

हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, देश की चार दिशाएँ हैं,
राम, रहीम, गुरू नानक, ईसा, उसकी ही प्रतिमाएँ हैं.
कहाँ भिन्न हैं खून रगों का, कहाँ दूध माँ का पानी,
कहाँ भिन्न है पीर प्रसव की, कहाँ भिन्न व्यथाएँ हैं.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ग़ज़लें

## (१)

पीड़ा - घुटन न यह संत्रास लिखना,
मगर जिन्दगी का तुम मधुमास लिखना.
मन की व्यथाओं को वाणी मिलेगी,
कागज पर अपना यह विश्वास लिखना.
लिखने को लिखते रहे हैं सभी पर,
किसको कब भाया है चिर प्यास लिखना.
शाश्वत है जीवन की शब्दावली यह,
ऋचाओं को तुम यूँ न इतिहास लिखना.
सुखों की अयोध्या मुबारक तुम्हें हों,
हक में मेरे दुःख का बनवास लिखना.
शोहरत भी एक दिन मुसीबत बनेगी,
है क्या तुम्हे इसका अहसास लिखना.
यूँ तो "दीप" का तम से रिश्ता है गहरा,
मगर तम को अपना न आवास लिखना.

## (२)

एहसास के एहसास से दिल बाग-बाग है,
एहसास ज़िन्दगी का इक जलता चिराग़ है.
वो शख्स जिसके हाथ में कलम है बारहा,
वो मीर है, कबीर है, तुलसी है, दाग़ है.
पागल हुए हैं लोग क्यों मजहब के नाम पर,
मजहब से बुझ सकी न पेट की जो आग है.
अपने वतन पर आप न्यौछावर जो हो चला,
घर का चराग़ है वो किसी का सुहाग है.
है मुन्तज़िर इक "दीप" भी दामन पसार कर,
देखेंगे एक रोज क्या कजरी क्या फाग है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# दुलाल कृष्ण चाटर्जी

आपका जन्म १० सितम्बर १९४४ में हुआ. आप ने साइंस स्नातक स्तर शिक्षा प्राप्त की है. आपकी मातृ - भाषा बंगला है, लेकिन आप बंगला में कम पर हिन्दी में कविता, लेख, संस्मरण, कहानी, नाटक आदि विधाओं पर सतत् अपनी लेखनी चलाते आये हैं. आपने अंग्रेजी में भी लेखनी चलायी है. समाचार-पत्रों और गृह-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ स्थान पाती आ रही है. स्थानीय स्तर के कवि- सम्मेलनों में आप अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते रहे हैं. आप जहाँ एक कुशल मंच - संचालक हैं, वहीं एक अच्छे अभिनेता के साथ - साथ कुशल निर्देशक भी हैं. आप मूलतः नाटककार एवं अभिनेता हैं.

कविता आपकी अभिरुचि का अंग है. आप अनेक सम्मानों से विभूषित तथा श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में पुरस्कृत भी. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में कनिष्ठ कार्य प्रबन्धक के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा. नं. १/१३/२, टाइप-४, आयुध निर्माणी परिसर,अम्बाझरी,नागपुर. (महाराष्ट्र) ४४० ०२१. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२७२८.

## परेशानी राम आसरे की

राम आसरे परेशान है देख पुत्र का हाल,
फैशन वाले कपड़े उसके, फैशन वाले बाल.
फैशन वाले बाल , रोज लगाये शैम्पू,
डॉटो भी तो हँस कर बोले," व्हाई थैंकू."
टी. वी. देखे खूब, पढ़ाई तनिक न भाये,
जो भी समझाता उसको, फूटी आँख न भाये.
"अब होऊँगा पास," खुल कर वादा करता,
इम्तहान के समय में वह वादा भूला करता.
झूठ बोलना हॉबी उसकी मक्कारी में आगे,
देर रात से सोये और बड़ी देर से जागे.
आपस की रंजिश को वह खूब बढ़ावा देता,
फिर बन कर हीरो सुलह कराने बढ़ता.
अपनी व्यथा सुनाता बापू, स्वर में आँसू घोले,
लेकिन सुन सोच समझ कर मित्र प्रवर बोले,
"नेता बड़ा बनेगा मुन्ना दिखते लक्षण सारे,
व्यर्थ ही परेशान मत हो राम आसरे प्यारे."


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# एक हिन्दुस्तानी मुसलमान की व्यथा

मुसलमान मैं बेशक हूँ  पर पहले मैं हूँ हिन्दुस्तानी,
भूले से भी नही समझना मुझे कभी तुम पाकिस्तानी.
हिन्दुस्तानी हूँ मैं मुझको हिन्दुस्तान ही प्यारा है,
यहाँ की माटी, यहाँ का पानी सब देशों से प्यारा है.
मेरी प्यास बुझायी इसने मुख में खाना डाला है,
वड़े जतन से इसने मुझको जनम-जनम से पाला है.
इस जमीन पर जीना-मरना यही है मेरी सही कहानी,
गलती से भी मान न लेना मुझे कभी तुम पाकिस्तानी.
सदियों से ही भारत देश ने सभी धर्म स्वीकारा है,
खास किसी को ऊपर रखना इसने सदा नकारा है.
सर्व धर्म समभाव यही तो इस धरती का नारा है,
सब को खुश आबाद देखना इसी देश की धारा है.
जन्नत मुझको यहीं मिलेगी यही बात है दिल ने मानी,
दीन ईमान यही है मेरा क्यों कहते मुझको पाकिस्तानी.
राम, कृष्ण मेरे पुरखे थे गौतम, नानक का मैं वंशज,
मुझ में भी है खून वही मत करना तुम इसमें अचरज.
बादशाह अकबर की बुद्धि से भी मैंने कुछ पाया है,
रसखान,रहीम की भावना को अपने मन में सजाया है.
मुझ में है इन फूलों की खुश्बू यह बात है मैंने जानी,
दिल मेरा मत तोड़ो तुम सब मैं नही हूँ पाकिस्तानी.
रीत यहाँ की मुझको प्यारी इनसे नाता क्यों तोड़ूँ,
खुद को करके सबसे अलग मित्रो का संग क्यों छोड़ूँ.
राम-राम करने से मेरा झुकता नही है मजहब,
हाथ जोड़ अभिवादन करने पर मैं छोटा होता हूँ कब.
माथे पर बिंदिया सजना नही  धर्म की खास निशानी,
हिन्दुस्तानी हूँ मैं पक्का मत कहो मुझको पाकिस्तानी.
जैसे मेरी माँ ने मुझ को पालपोस कर बड़ा किया है,
वैसे ही भारत माँ ने भी मान दिया है ,प्यार दिया है.
माँ की बन्दगी करने से खुद्दारी नही होती है कम,
इसीलिये तो मैं कहता हूँ वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्.
वतन की बन्दगी करने में जो करता हो आनाकानी,
उसको समझो देश का दूश्मन उसको समझो पाकिस्तानी.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# साज़ जबलपुरी
(सी.एल. चराडिया)

साज़ जबलपुरी नाम आज किसी परिचय का मोहताज नही है. उस्ताद शायरों में आप की गिनती है. आपका जन्म मध्य प्रदेश के नर्मदा. कछार में बसी संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : १ अप्रैल १९४५ को हुआ. आपने स्नातक तक की शिक्षा के अतिरिक्त स्वाध्यायी के रूप में उर्दू और अरबी का गहन ज्ञान प्राप्त किया है.

आप कवि शायर के साथ-साथ एक कुशल रंग कर्मी तथा नाट्य-निर्देशक के रूप में भी ख्याति-अर्जित कर चुके हैं. साथ ही एक कुशल पत्रकार भी हैं. दैनिक देशबन्धु, जबलपुर के आप साहित्य सम्पादक हैं. आप ग़ज़ल विधा के मुख्य हस्ताक्षर हैं. आपके अनेक कैसेट "अरमान" (म्युजिकल इण्डिया) सितम, तमन्ना (टी सिरीज) आदि से निकल चुके हैं. आपकी ग़ज़लों को सुप्रसिद्ध ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह, पंकज उधास तथा चन्दन दास ने अपनी सुरीली आवाजों से सँवारा है.

"बदलते साथी बदलते रंग" टी.वी. सीरीयल के आप गीतकार हैं. आपका एक दीवान "मिज़राब" उनवान से देवनागरी लिपि में मंज़रे आम पर आ चुका है. आपके कुशल सम्पादन में "पीले वर्क में रखे गुलाब" काव्य-संकलन प्रकाशित है. आप प्रसार भारती आकाशवाणी - ६५ अन्तर्गत अनुबन्धित शायर हैं. वर्तमान में आप व्हीकल फैक्ट्री, जबलपुर में परीक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* "ग़ज़ल हाउस", १९४७ - व्हीकल फैक्ट्री एस्टेट, जबलपुर-४८२ ००९.
*स्वर दूत :* (०७६१) आवास : २३३१९४७, प्रेस ५०७३३३. फैक्स : २३३१३३१.

## ग़ज़ल

मेरे ख़त का जवाब छोड़ गया,
चूम कर वो गुलाब छोड़ गया.
नूर ही नूर है फिज़ाओं में,
कौन अपना नक़ाब छोड़ गया.
कौन तारे की उम्र कितनी है.
मेरी ख़ातिर हिसाब छोड़ गया.
वो समंदर की प्यास के आगे,
चंद क़तरे शराब छोड़ गया.
मैकदा साज़ नज़र से साक़ी,
जाम में आफताब छोड़ गया.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ग़ज़लें

## ( १ )

चल पडे हैं वो घर से हर तरफ उजाले हैं,
लग रहा है ऐसा कि अब वो आने वाले हैं.
यूँ तो सारी दुनिया की दिल पे है नज़र लेकिन,
हम तेरी अमानत को आज भी सम्हाले हैं.
ठोकरे तो उल्फत में खायी बदनसीबों ने,
इश्क़ जिनको अपनाये वो नसीब वाले हैं.
आप चाहे ठुकरायें, या कि फिर मेहरबाँ हों,
आज से ये दिल और हम आपके हवाले हैं.
इस शहर में लगता है हुस्न की हुकूमत है,
हर जुबाँ पे पाबंदी, हर नज़र पे ताले हैं.
नफ़रतों के जंगल में, प्यार की शमअ लेकर,
जिन्दगी ने जीने के रास्ते निकाले हैं.
सादगी में शोखी है, तमकनत में भोलापन,
आपके यही तेवर 'साज जी' निराले हैं.

## ( २ )

तुम अगर इस क़दर रूठ कर जाओगे,
क्या भरोसा कि फिर सीधे घर जाओगे.
मैकदे की तरफ आते-जाते रहो,
तुम भी शीशे में एक दिन उतर जाओगे.
रुक भी जाओ नशा आ गया पाँव तक,
ऐसी हालत में अब कैसे घर जाओगे.
हाथ में आ के जन्नत निकल जायेगी,
मैकदे से निकल कर अगर जाओगे.
ख़ाक का जिस्म लेकर संभलना जरा,
तुम हवा से लड़ोगे बिखर जाओगे.
जाम में गुस्ल कर लो अगर 'साज़'तुम,
पल में अँगूर जैसे निखर जाओगे.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# डॉ. डी.पी.कछवाहा 'घायल'

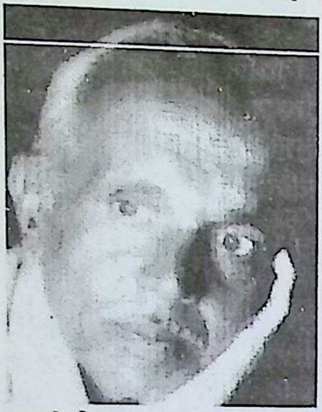

मध्य प्रदेश के जनपद कटनी में ईश्वरपुरी वार्ड निवासी स्वतन्त्रता सेनानी श्री सुखदेव प्रसाद "मंत्री" के घर दिनांक : १ जून १९४५ को डी.पी. कछवाहा "घायल" का जन्म हुआ. आप आयुर्वेद रत्न तथा आयुर्वेदाचार्य की उपाधि अर्जित करने के पश्चात् आयुध निर्माणी, कटनी चिकित्सालय में सहायक चिकित्सा के पद पर सेवारत् हैं.

आप गरीब एवं शोषितों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं. यही संवेदना पिघल कर कविता में ढल जाती है.आप चिकित्सा सेवा को व्यवसाय नही, अपितु मानवीय सेवाभाव तथा अपना परम कर्तव्य समझते हैं. आप सर्वधर्म समभाव के परिपोषक तथा सत्य अहिंसा एवं पंचशील के पुजारी हैं.

*सम्पर्क-सूत्र :* सेवा संयुक्त सचिव, "कटनी काव्य कलश", ईश्वरपुरी वार्ड, प्रमुख डाकघर के समीप, कटनी (मध्य प्रदेश)

## मौत सत्य है

मौत........
शाश्वत है,सत्य है,कटु सत्य है.
किन्तु,सुनते ही नाम मौत का घिर जाते हैं,
बादल भय के और दिल धड़कने लगता है,
यह जानते हुए भी कि
मौत एक न एक दिन आनी ही है.
फिर यह भय कैसा....?
यह तो हर खिलते फूल की नियति है.
मुरझा कर सूख जाना,
फिर डाली से टूट कर बिखर जाना और
मिट्टी में मिल कर, मिट्टी हो जाना.
इसी तरह , जीवन और मौत का
रिश्ता बहुत पुराना है.
क्यों कि मौत शाश्वत है, सत्य है,
बाकी सब असत्य है......


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# यादों के दीप

ढलते ही साँझ
घर अपने आ कर
अपने कष्ट भुला कर.
हम रो लेते है,
यादों के दीप जला कर.
हमको पता नही कुछ
अपने बिछड़े यार की.
जब भी बातें की किसी ने हम से
हमारे प्यार की,मनुहार की
गले से उसे लगाकर,
यादों में उसे बसा कर
हम रो लेते हैं,
यादों के दीप जला कर.
न जाने क्यों.....? देकर मुझे गम
दूर,बहुत दूर चला गया वह
लोग करते हॅ मुझसे सवाल
कैसा तुम्हारा यार था वह?
देख कर उसकी तस्वीर
आँसू में गम बहा कर.
हम रो लेते हैं
यादों के दीप जला का.
रहता था कभी साथ वह
बन कर के साया मेरा.
मेरी जिंदगी को लूटा,
तूने बन कर एक लुटेरा
वह दूर क्यों गया...?
सीने में यह गम दबा कर.
हम रो लेते हैं,
यादों के दीप जला कर.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# बी.एल.मानावरिया

आपका जन्म दिनांक : १ दिसम्बर १९४५ में हुआ.आप अपनी शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् विभिन्न केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में कार्य कर वर्तमान में उप श्रम कल्याण आयुक्त के रूप में आयुध निर्माणी, अम्बरनाथ में कार्यरत् हैं. आपको विद्यार्थी जीवन से कविता के प्रति रुझान रहा है. समय के साथ-साथ यह रुझान आदत में परिवर्तित हो गया. यही आदत आपकी कविताओं की मूल जननी है.

समय-समय पर स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं एवं विभागीय पत्रिकाओं में आपकी उत्कृष्ट रचनाएँ छपती आ रही हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १०५ - भागीरथी अपार्टमेंट, शिवगंगा नगर, अम्बरनाथ (ई) ४२१ ५०१.
*स्वर दूत :* (०२५१) २६०६४२२.

## मानवता की खोज

सड़क के चौराहे पर खड़ी
मानवता की माँ
पुकार रही है
मानव को मानवता के लिये,
मुझे कुछ नही चाहिये
मेरी मानवता चाहिये,
आज मानवता की माँ
पगला गयी है
यत्र-तत्र घूम रही है बेचैनी में
मानवता की खोज में
पूछती मानव से क्यों छोड़ दिया ?
मेरी पुत्री मानवता को
मानव बोला,"मानव हूँ
नही है मानवता
मानवता को भूल कर भी
साथ न रखूँगा
मानवता के साथ झेली हैं
वहुत मुसीबतें,
परेशानियों के अलावा
कुछ न मिला,
आज सुखी हूँ मैं
मानवता छोड़ कर,
सभी भौतिक सुख-सुविधाएँ
हैं मेरे पास
आगे मानवता को कभी
न अपनाऊँगा.
न तुझे मानवता का
पता बताऊँगा.
कह रहा हूँ कटु सत्य.
मानवता माँ
इस भौतिकता की चकाचौंध में
तुझे तेरी मानवता
कभी न मिलेगी.
अपने परिश्रम को व्यर्थ न जाने दे.
मानव में
मानवता की खोज बन्द कर

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

मानव में मानवता
कभी न मिलेगी
पर मानवता माँ
कब थी मानने वाली
बस निकल पड़ी,
मानवता को खोजने.
चौराहे, भीड़ भरी
सड़कों पर दौड़ पड़ी.
भीड़ बहुत एकत्र थी एक जगह
मन ललचाया भीड़ देखने,
दृश्य देख कर रह गयी दंग.
वहाँ मची थी,
नीलामी के लिये जंग.
हो रही थी वहाँ .
मानवता की नीलामी
भीड़ से जोश भरी आवाज आयी
आज हो रही है
मानवता की नीलामी
तैयार रहें
बोली लगाने के लिये,
हर कोई
लगा सकता है बोली,
लेकिन इसकी हैं कुछ शर्तें
हर कोई आतुर था
बोली लगाने
भीड़ में की गयी
शर्तो की घोषणा.
जिसने लिया है
झूठ का सहारा,

जो वेईमान है,
धोखेबाज है,
विश्वासघाती है
मिलावटी है,
जो कोई करेगा
एक भी शर्त पूरी
वही लगायेगा यहाँ पर बोली
जांचने पर कोई भी
न अयोग्य पाया
प्रत्येक-
एक नही अनेक शर्ते
करते थे पूरी
सोचा आज मेरी मानवता
बिक ही जायेगी
देखने की इच्छा थी
मानवता के खरीदार को
अन्त में एक मिलावटी
मार गया बाजी.
वह एक नही
सभी शर्ते करता था पूरी
उससे पूछा,
मानवता क्यों खरीदी ?
उत्तर मिला,
मैं था इससे परेशान
मेरे धन्धे को था
इससे हो रहा नुकसान
इसे नही खरीदी : अपनाने के लिये
इसे तो खरीदी : दफनाने के लिये
इसे तो खरीदी : दफनाने के लिये


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# हीरालाल शेण्डे 'हीरा'

आपका जन्म दिनांक : १ जुलाई १६४६ को महाराष्ट्र की उपराजधानी नागपुर महानगर में हुआ. आपने एच.एस.सी, आई.टी.आई. तक की शिक्षा प्राप्त की है. आप मूलतः मराठी भाषी हैं. किन्तु साहित्य - सृजन के लिये आपने दोनों ही भाषाओं को अपना माध्यम बनाया और इसमें आप सफल भी हैं. क्योंकि आप अध्ययनशील कवि हैं. आपके प्रिय लेखकों में प्रेमचन्द, मुक्तिबोध, नीरज, दुष्यंत कुमार तथा सुरेश भट्ट और अज्ञेय आदि हैं.

आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की स्तरीय पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं. आप मंचों के भी कवि हैं तथा मंच पर सस्वर पाठ करते हैं. आप कविता की हर विधा में रचना करते आ रहे हैं. निकट भविष्य में आपका "बारूदी ढेर" नामक ग़ज़ल-संग्रह प्रकाश्य है.

वर्तमान में आप आयुध निर्माणी में कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* त्रिशरण चौक, पो. भगवान नगर, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२७.

## ग़ज़ल

जिन्होने बेच दिया अपना ईमान है,
उनकी नजर में तो सभी बेईमान है.
छल-कपट का उन्हे कितना है गुमान,
शरीफ आदमी ही बड़ा परेशान है.
वतन की एकता को जो कमजोर कर रहे,
उनके ही हाथों में देश की कमान है.
घर की बातें दुश्मनों को पता चली,
सच कहते हैं लोग दीवारों को कान हैं.
दुनिया को मिटाने की वो धमकी दे रहा,
कितना आगे बढ गया आज विज्ञान है.
दोस्ती के नाम को जो बदनाम कर रहा,
वो आदमी मुहब्बत से कितना अंजान है.
गैरों के आगे ये सिर झुकेगा न कभी,
"हीरा" ये तेरी शान और आन बान है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# ये है आयुध निर्माणी

ये है आयुध निर्माणी , हमारी प्यारी आयुध निर्माणी,
देश में अस्त्रों - शस्त्रों के, निर्माण की ये है महारानी.

पाक ने गद्दारी की और, कारगिल में युद्ध भड़का,
बोफोर्स की तोप में तब, अम्बाझारी का गोला कड़का.
दुश्मनों को चुन-चुन कर के, तब पिला दिया था पानी,
ये है आयुध निर्माणी , हमारी प्यारी आयुध निर्माणी.

हमारी ताकत को सब जाना, कहते हम को चौथी सेना,
देश की खातिर है जीना , देश की खातिर है मरना.
ये धरती है शहीदों की, ओ पाक न कर तू मनमानी,
ये है आयुध निर्माणी , हमारी प्यारी आयुध निर्माणी.

सोने की चिड़िया देश हमारा,तिरंगा हमें जान से प्यारा,
पावन है गंगा की धारा, भारत है सब देशों से न्यारा.
मिटा के उसको रख देंगे, जो करेगा हम से बेईमानी,
ये है आयुध निर्माणी , हमारी प्यारी आयुध निर्माणी.

जय जवान,कामगार, किसान, ये तीनों भारत की शान,
संविधान का रखेंगे मान, अखण्डता में है इसकी जान.
एक रहेंगे , नेक रहेंगे , हमने है यह दिल में ठानी,
ये है आयुध निर्माणी , हमारी प्यारी आयुध निर्माणी.

मेरा सब को है ऐलान , वतन का अपने हो सम्मान,
घर के भेदी शत्रु समान, गद्दारों की न बख्शेंगे जान.
इतिहास के पन्नों में फिर से, लिख देंगे नयी कहानी,
ये है आयुध निर्माणी, हमारी प्यारी आयुध निर्माणी.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# रमेश कुमार मित्तल

आपका जन्म हरियाणा के कैथल नगर में दिनांक : १० अक्टूबर १९४६ को हुआ. आपने विज्ञान विषय ले कर स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अरुवनकाडु में वरिष्ठ गुणता आश्वासन अधिकारी के सम्मानित पद पर सेवारत् हैं.

आप एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ-साथ संवेदनशील हृदयी भी हैं. परिणामतः साहित्य के प्रति रुझान होना स्वाभाविक है. मन की व्याकुलताओं को भेगे हुए क्षणों की अनुभूतियों को आप शब्द देने का सफल प्रयास करते रहे हैं. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में छपती आ रही हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* वरिष्ठ गुणता आश्वासन अधिकारी, वरिष्ठ गुणता आश्वासन स्थापना, सैन्य विस्फोट, नीलगिरी (तमिलनाडु) ६४३ २०२.

*स्वर दूत :* (०४२३) (आ.) २२३४७५१, (का.) २२३१५५१.

## मीठे अनबोले बोल

मोरा नन्हा सा करेजवा डोल गया.
मन मन्दिर के पट कोई खोल गया..

मैंने देखा जब महकते मौसम को.
पर्वत पर खिलते फूलों को झरनों को..
कम्पन अजीब सी देह में छोड़ गया.
मोरा नन्हा सा करेजवा डोल गया..

पुरानी पहचान मन के एक कौने में.
व्यस्त हैं आज सुधियों को ढोने में..
अमृत घट नेह का कौन उडेल गया.
मोरा नन्हा सा करेजवा डोल गया..

अन्तर्मन में छिपा सा भी है कोई.
कण-कण में बसा लगता है वो ही..
दिल में रस प्रेम के वो घोल गया.
मोरा नन्हा सा करेजवा डोल गया..


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# बारूदी ढेर पर

थक सा गया हूँ मैं,
बैठे-बैठे
यहाँ बारूदी ढेर पर .
ढल रही है उम्र,
जीवन बीत रहा है,
बारूदी ढेर ही
मेरा मीत रहा है,
किन्तु
कह रहा है कोई मुझ से
दूर....कहीं बहुत दूर
भाग चल,
किन्तु मेरा मन
मचल-मचल कर
मुझ से यों कह रहा है....
व्यर्थ ही होगा
कहीं भी भागना,
क्यों कि
बारूद तो एक शक्ति है,
धमाका है, जिन्दगी है,
मौत नही.
यदि हमने इसे
जीवन की थकान से नही

अपितु,
जीवन की आस में
अटूट विश्वास से
पक्षियों के कलरव को
बचाने की खातिर
पेड़ों की हरियाली की खातिर
फूलों के रंगों को
निखारने की खातिर,
तारों की चमक
जर्रे-जर्रे में लाने की खातिर,
बनाया हो....
तो,
फिर थकान कैसी ?
कहीं भागें क्यों ?
यहीं महकें , यहीं चहकें
रहें हमेशा मुस्कुराते फूल
और सदा याद रखना कला
और विज्ञान के जोड़
का यह उद्यान हमारा है.
बारूदी ढेर पर
फूल खिलाना
काम हमारा है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# इन्द्र बहादुर श्रीवास्तव 'इन्द्र'

आपका जन्म मध्य प्रदेश के नर्मदा कछार में स्थित संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : १४ मई १६४७ को हुआ. आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वाहन निर्माणी, जबलपुर में सहायक अग्रजन के पद पर सेवारत् हैं. यांत्रिकी जीवन जीते हुए मानवीय संवेदनाओं से सराबोर इन्द्र जी मूलतः हास्य-व्यंग्य के चितेरे हैं. दर्द पी कर हँसना हँसाना आपकी आदत है.

आप साहित्य एवं साहित्यिक गतिवधियों के प्रति समर्पित हैं. विभागीय पत्रिकाओं के अतिरिक्त देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी चुटीली रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं तथा अनेकों काव्य - कृतियों में भी समाहित हैं. आप अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में चुटीली व्यंग्य विधा के कवि के रूप में सराहे जाते हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* चित्रगुप्त चौक, जय प्रकाश नगर, अधारताल, जबलपुर, (मध्य प्रदेश) ४८२ ००४. *स्वर दूत :* (०७६१) २३६१६५८.

## भाई चारा

भाई चारा निभाने का
जो नारा लगाते हैं,
वे खुद
भाई चारा नहीं निभाते हैं.
भाई चारा
निभाते-निभाते
वे कमाल कर गये,
भाई चारा का
चारा ही चर गये.

समस्या बहुत भारी है,
अब की बार
भाई की बारी है.
इन भ्रष्टाचार से
लिप्त लोगों को
कुछ नही देता दिखाई,
मेरा तो यही कहना है
इन लोगों से
बच के रहना मेरे भाई.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# चमचा पुराण

यहाँ वहाँ जाइये न समय को गवाँइये,
बात है पते की जरा गौर फरमाइये.
हो के परेशान न दिमाग को पचाइये,
काम जो कराना है तो चमचा पटाइये.

छोटे बड़े काम सभी कर देंगे आप के,
होते नहीं सगे किन्तु अपने भी बाप के.
ये हुए नाराज काम रख देंगे ताप के,
नखरे हैं इनके आस्तीन वाले साँप के.
इनको ले जाइये चाहे जिसे कटाइये,
काम जो कराना है तो चमचा पटाइये.

सभी जगह जा के आपका ये काम करेंगे,
किसी का न डर इन्हें खुले आम करेंगे.
नाम आपका भी ये न बदनाम करेंगे.
आके सुबह शाम आपको सलाम करेंगे,
इनको पटाना है तो रबड़ी चटाइये,
काम जो कराना है तो चमचा पटाइये.

खाली आप मिल गये तो ये चाट जायेंगे,
मिला गर मौका आपको भी काट खायेंगे.
पाप का न डर इन्हे हर घाट जायेंगे,
मुफ्त का जो मिला माल सब चाट जायेंगे.
इन्हे दान दे के पाप अपने घटाइये,
काम जो कराना है तो चमचा पटाइये.

होते सभी किस्म के छोटे बड़े चमचे,
जहाँ भी अड़ा दो रहते हैं अड़े चमचे.
दुम को हिलाते रहते है खड़े चमचे,
हर गलर - कूँचे में मिलेंगे पड़े चमचे.
इन्हें ढूँढ अपनी परेशानी मिटाइये,
काम जो कराना है तो चमचा पटाइये.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# नारायण दास मार्थी "नम्र"

मध्य प्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : १ जुलाई १९४७ को आपका जन्म हुआ. आपने एच.एस.एस.सी., आई.टी.आई. तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वायु शस्त्र निरीक्षण स्कंध , अम्बाझरी, नागपुर में परीक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आप ग़ज़ल, गीत, कविता के अतिरिक्त लेख,कहानी,भजन,समीक्षा एवं रेडियो रूपक भी लिखते हैं. आपके अनेकों रूपक आकाशवाणी से प्रसारित हो चुके हैं. विभागीय पत्रिकाओं के अतिरिक्त देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में आपकी भिन्न-भिन्न रचनाएँ प्रकाशित होती आ रही हैं.

मंचों पर आप सस्वर काव्य पाठ करते हैं. साहित्य सृजन के साथ-साथ समाज सेवा एवं ट्रेड यूनियन के भी सक्रीय कार्यकर्ता हैं. आप ए.ए.आई.डब्लू. मजदूर संघ के महामंत्री तथा जे.सी.एम. के मनोनीत सदस्य हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* हिल टॉप कोलोनी, अमरावती रोड, पो. देवलामाटी, आठवाँ मील, नागपुर ( महाराष्ट्र ) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* ( ०७१०४ ) २२२६०३.

## ग़ज़ल

दिल के जख्मों को तड़प कर जब देखते होंगे,
फिर भी खत में वो दुआऐं ही भेजते होंगे.
वक्त ने ठोकर मारी हसीन महफिल में,
उम्मीद - ए - जाम में अश्कों को घोलते होंगे.
खुद के चेहरे की पहचान भूल बैठे हैं,
आइने में वो खुद को ही टटोलते होंगे.
हुस्न के बाग में कांटों से खुश्बू घायल है,
खुश्क होठों से जख्मों को अपने चूमते होंगे.
कब्रगाहों की गली उनको रास आयी है,
छुप के दामन में अरमाँ भी सिसकते होंगे.
कस्में-वादों की लिये राख बैठे कश्ती में,
भँवर के दर्द में हर पल वो डूबते होंगे.
जुल्फों की छाँव में झूला सजाये बाहों का,
"नम्र" को तरसी निगाहों से ढूँढते होंगे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# गीत

सुविधाओं के महल त्याग कर, मान करें हर सैनिक का,
बढे हौंसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
लिये वीरता की ज्वालाएँ, अग्नि उगलते सैनिक हैं,
सैनिक "शिव" हैं,"राणा"सैनिक, वीर भगत सिंह सैनिक है,
चलो सजायें श्रद्धा के, फूलों से हर पथ सैनिक का,
बढे हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
मस्तक पर बारूद का चन्दन, तोप संगिनी सैनिक की.
संकल्पों का चक्र - सुदर्शन, विजय प्रतिज्ञा सैनिक का
मन महलों में चित्र सजायें, भीष्म रूप हर सैनिक का,
बढे हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
भारत माँ के प्रिय लाडलो, के घर राखी सिसक रही,
सूनी माँग देख विधवाएँ, हर आहट पर ठिठक रही.
चलो प्यार के पुष्पों से घर, महका दें हर सैनिक का,
बढे हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
सुविधा भोगी साँसे वक्त के , काँधों पर अर्थी जैसी,
शेष जिन्दगी स्वार्थ धुरी पर , घूम रही चकरी जैसी.
कार्य करें जन कल्याणों के, कार्य है जैसा सैनिक का,
बढे हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
जग के अधरों पर हो चर्चा, वही मौत ही सार्थक है,
लहू उगलते बिस्तर पर, व्यक्ति का जन्म निरर्थक है.
सजे तिरंगे में खुद का शव , जैसे सजता सैनिक का,
बढे हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.
नफरत के मंथन में विष ही, प्राप्त हुआ है बन्धु मेरे,
याद रहे विष पीने वाले , नही है शंकर बन्धु मेरे.
चलो नम्रता के पथ पर, सम्मान करें हर सैनिक का,
बढें हौसले सीमाओं पर, जूझ रहे हर सैनिक का.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शालेश

## ( *डॉ. शशि वर्धन शर्मा* )

"शैलेश" हिन्दी साहित्य जगत के लिये कोई अनचीन्हा नाम नही है. जो कि सरकारी खातों में डॉ. शशि वर्धन शर्मा के नाम से जाना जाता है. आपके साहित्यकार पिता श्री वेद मित्र "व्रती" अविभाजित भारत के लाहौर नगर में देव समाज डिग्री कॉलेज में हिन्दी के प्रोफेसर थे,जो स्वतन्त्रता पूर्व १६४५ में अपनी जन्म - भूमि उत्तर प्रदेश में मेरठ जनपद के मवाना कलाँ कस्बे में लौट आये थे. जहाँ दिनांक : २५ अगस्त १६४७ में आपका जन्म हुआ. ( सरकारी रिकार्ड में जन्म तिथि दिनांकः ०८ अप्रैल १६४६ है ). आपकी माता श्रीमती उर्मिला देवी भी इण्टर कॉलिज में प्रधानाध्यापिका थी.

आपने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् "श्री गुरू भक्त सिंह 'भक्त' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन" विषय पर अपना शोध-प्रवन्ध तैयार कर नागपुर विश्व विद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की. आपने यह शोध कार्य आयुध निर्माणी में यांत्रिकी जीवन जीते हुए पूर्ण किया है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में तकनीकी कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं. साहित्य-सृजन की प्रेरणा आपको अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि से मिली.

आप मूलतः उपन्यासकार एवं समालोचक हैं. साहित्यिक अभिरुचि ने आप को काव्य-सृजन की ओर भी आकर्षित किया. परिणामतः आप मूल रूप से छन्द-वद्व काव्य-धारा से जुड़े. "दर्पण के द्वार पर" गीत-संग्रह तथा "ठण्डे सूरज के फूल" ग़ज़ल-संग्रह आपकी ये दो मौलिक काव्य-कृतियाँ आज हिन्दी साहित्य की धरोहर के रूप में हमारे समक्ष हैं. देवर-भाभी, अधूरा उपन्यास, ढलता सूरज, अधूरे रिश्ते ( महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा जैनेन्द्र कुमार पुरस्कार से पुरस्कृत ) तथा "सत्ता-संघर्ष" आपके ये पाँच चर्चित उपन्यास हैं तथा "एक पीढी का अन्तर" प्रकाशनाधीन है. आपने "इन्द्र धनुष के रंग" भाग -एक तथा भाग-दो कहानी-संकलन के अतिरिक्त "समकालीन हिन्दी ग़ज़लें" का भी कुशल सम्पादन तथा प्रकाशन किया.इनके अतिरिक्त ५५ से भी अधिक स्तरीय प्रतिनिधि संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित हैं.

अनेकों स्नातकोत्तर विद्यालयों द्वारा "गेस्ट लेक्चरर" के रूप में आमंत्रित किये जाते रहे हैं. देश की अनेक शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में आपके लेख, कथा, कहानियाँ, गीत, ग़ज़ल, कविताएँ, समीक्षाएँ आदि प्रकाशित होती आ रही हैं. समय-समय पर आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर रचनाओं का प्रसारण. अखिल भारतीय काव्य-मंचों के आप जमाऊ कवि हैं. अनेकों साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित साहित्यकार शैलेश अनेकों साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* "प्रशान्त निकेत", जूनियर कॉलेज् के पीछे, आठवाँ मील, अमरावती रोड, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२१२१६.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# किसने पाठ पढाया है ?

कविता लिखने बैठा कवि तो, यह रहस्य समझ नहीं आया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.
एक लड़ी कितने प्रश्नों की, आगे सीना तान खड़ी है,
हल इनका कैसे मिल पाये, यही समस्या विकट वड़ी है.
हिरनी के बच्चे को बन में, कौन दौड़ना सिखलाता है,
मछली के बच्चे को जल में, कौन तैरना सिखलाता है.
नागिन के बच्चे को किसने, डसने का कार्य सिखाया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.
बोलो तो किसके कहने पर, कोयल कू - कू करके गाती,
एक कौए के आर्तनाद पर, कौआ टोली क्यों उड़ आती.
इतना और बताये कोई, कुत्ता क्यों कुत्ते का दुश्मन,
बगुलों ने पंक्ति में उड़ने का, सीखा है किससे अनुशासन.
इतना सुन्दर जाला बुनना, कैसे मकड़ी को आया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.
मुर्गी चूजा पैदा होते , दाना कैसे चुगने लगता.
यह भी प्रश्न एक है सम्मुख, गिरगिट कैसे रंग बदलता.
अन्जनयारी भी बतलाओ, मिट्टी का घर कैसे चिनती,
कुत्ते ने भी स्वामि-भक्ति, बतलाओ किससे है सीखी.
स्थिर रह नभ में उड़ने का, किससे ज्ञान बाज ने पाया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.
मधु मक्खी ने किससे सीखा, आकर्षक छत्ते का घड़ना,
चींटी ने किससे सीखा है, कल के लिये बचा कर रखना.
किससे सीखा मधु मक्खी ने, फूलों से मकरन्द चुराना,
इस मकरन्द को परिवर्तित कर, किससे सीखा शहद बनाना.
कुत्ते की दुम क्यों रहती टेढी, प्रश्न समझ नहीं आया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.
पेड़ों पर चढना बिल्ली ने, बतलाओ किससे सीखा है,
और बया पक्षी ने सुन्दर, घर बुनना किससे सीखा है.
निश्चित जीव - जन्तु ने ये गुण, मानव से नही सीखे हैं,
क्योंकि मानव के सारे गुण, इनके गुण से फीके हैं.
इनका कौन नियन्ता है, फिर प्रश्न ये सम्मुख आया है,
कि इस पृथ्वी पर जीव - जन्तु को, किसने पाठ पढ़ाया है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

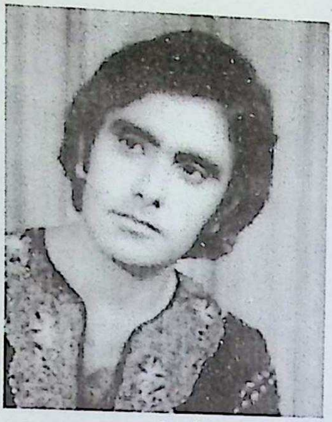

# दिनेश बाजपेयी

तहजीब और नजाकत के लिये प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ शहर में दिनांक : ७ अक्टूबर १९४७ को आनका जन्म हुआ. आपने आयुध निर्माणी में सेवारत् रहते हुए हिन्दी विश्व विद्यालय इलाहाबाद से साहित्य रत्न तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी, नागपुर में सहायक अग्रजन के पद पर सेवारत् हैं.

विद्यार्थी जीवन से ही आप मंच एवं क्रीड़ा क्षेत्र से जुड़ गये तथा बैडमिंटन में राष्ट्रीय स्तर पर आयुध निर्माणी का प्रतिनिधित्व किया एवं पुरस्कृत हुए. आपकी रचनाएँ देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती आ रही हैं. आपकी रचनाओं का आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण,कवि सम्मेलनों में सफल मंच संचालक के रूप में स्थापित हैं.

**सम्पर्क सूत्र :** ४५- पी.जी.चेम्बर, आठवाँ मील, अमरावती रोड, नागपुर - ४४० ०२३.

## आरक्षण

अंग्रेजों ने हम को बाँटा, केवल अपने देश की खातिर.
तुमने हर परिवेश को बाँटा, कुर्सी के उद्‌देश्य की खातिर.

आरक्षण के नाम पर तुमने, घर आँगन गलियारे बाँटे.
मंदिर बाँटे, मस्जिदें बाँटी, गिरजे और गुरुद्वारे बाँटे.

मण्डल और कमण्डल बाँटे, खेत-खेत की मियाद बाँट दी.
तुमने एक वोट की खातिर, देश की हर बुनियाद बाँट दी.

बँटवारे की राजनीति ने, देश अपाहिज बना दिया है.
जो अंग्रेज नही कर पाये, तुमने करके दिखा दिया है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# भ्रष्टाचार

सीता का परित्याग कराया, एक धोबी की गाली ने,
सारी दिल्ली नंगी कर दी, नेताओं की दलाली ने.

हरिश्चन्द्र ने खुद को बेचा, सत्य-निष्ठा के उजालों में,
तुमने सारे देश को बेचा, रिश्वत और घोटालों में.

छीना-झपटी लूटमार और, चारों ओर तबाही है,
चोर ही मुंसिफ, चोर ही मुलजिम,देता चोर गवाही है.

न्यायालय के आँगन में, अन्याय-न्याय को छलता है,
ऊपर से नीचे तक अब, सोने का सिक्का चलता है.

हर कुर्सी अंधी - बहरी है, हर कुर्सी हत्यारी है,
हर कुर्सी के, हर पाये पर, पंजीकृत गद्दारी है.

खुले आम चौराहे पर, रिश्वत का डंका बजता है,
भारत का हर कार्यालय, रावण की लंका लगता है.

अब तो लगता है भारत में, चण्डी का नर्तन होगा,
परिवर्तन तो होगा लेकिन, खूनी परिवर्तन होगा.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# जय प्रकाश शर्मा "जय"

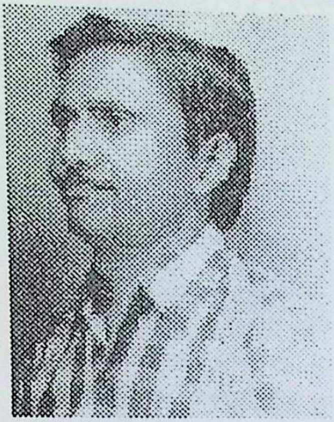

उत्तर प्रदेश के जनपद गाजियाबाद के ग्राम-निस्तौली निवासी पण्डित मुंशी राम शर्मा जमींदार ब्राह्मण के ससंस्कृत परिवार में दिनांक : ३० जनवरी १९४८ को आपका जन्म हुआ. आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है.वर्तमान समय में आप आयुध निर्माणी अम्बाझरी,नागपुर में तकनीकी कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आध्यात्मिक रुचि के संस्कारवादी इस कवि ने साहित्य की हर विधा में सफलतापूर्वक साहित्य - सृजन किया है. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ - साथ देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती चली आ रही हैं. आप की भिन्न-भिन्न विधा पर रचित कुछ कृतियाँ मंजरे आम पर आने को हैं. 'कड़वा सच', (कहानी), 'घृणा की फसलें' (कविता), 'रिश्ते-नाते', (व्यंग्य) तथा जय की ग़ज़लें आदि.

समय-समय पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से प्रसारण.अनेकों अखिलभारतीय कवि सम्मेलनों का आयोजन. मंच के मधुर गीतकार. राजभाषा के प्रति समर्पित सेवा. अनेक वर्षो से आप केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के भिन्न-भिन्न पदों पर सक्रिय रहे हैं. अनेकों प्रतिनिधी काव्य-संकलनों में समाहित. विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, साहित्य-साधना, साहित्य संगम, साहित्य-सुरभि जैसी अनेकों साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध.पीड़ा के इस अनुगायक से हिन्दी साहित्य जगत को अनेक आशाएँ हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १/२०/२, डिफेंस परिसर, अम्बाझरी, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२१.
*स्वर दूत :* (०७१०४) २३२२२२, २४०२१४, २४०२१५.

## ग़ज़ल

शहर में नित हादसे होते रहे,
ओढ कर चादर सभी सोते रहे.
सोचते थे लोग हम स्वतंत्र हैं,
भ्रम बस यह आज तक ढोते रहे.
जिन से थी उम्मीद अमन-ओ-चैन की,
बीज घृणा के यहाँ बोते रहे.
संस्कृति के चितेरे लोग भी तो,
लाश मानवता की बस ढोते रहे.
कोई बता दे किससे वे शिकवा करें,
लुट के 'जय' जो रात भर रोते रहे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# घृणा की फसलें बो रहे हैं

वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं,
हम यहाँ पर जीविका की, बात को ले रो रहे हैं.
अन्धे धृतराष्ट्र की तरह, संजय से सुनते हैं कथाएँ,
कौन है जो उनको जाकर, गुजरात की कह दे व्यथाएँ.
धर्म की परछाइयों में, किस तरह कत्ल हो रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
नष्ट होती जा रही हैं, मानवी सब सभ्यताएँ,
भूल कर बैठे हैं हम, अपनी पुरानी सब कथाएँ.
प्रेम की इस सरजमीं पर, घृणा की फसलें बो रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
कश्मीर की उन मृत्युओं का, क्या कभी हल मिल सकेगा,
बुझ गया जिस घर का दीपक, क्या कभी फिर जल सकेगा.
कितनी अबलाओं के आँचल, अश्रु स्वयं के भिगो रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
काँपती देखीं हैं हमने, मंदिरों की ऊँची दीवारें,
थरथराती देखी हमनें, मस्जिदों की ऊँची मीनारें.
जाने कितने वीर सैनिक, निज चिता में सो रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
टूटते देखे हैं हमने, वो अडिग विश्वास सारे,
काँपते देखें हैं हमने , डल झील के सारे किनारे.
किस तरह अपराध निर्मम, इस धरा पर हो रहे हैं.
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
न मर्दिर की दीवारें काँपें, न मस्जिद की काँपें दीवारे,
न मानव पर चलें गोलियाँ, न चमकें फिर खूनी तलवारें.
रौंद दो उन शत्रुओं को, जो बीज घृणा के बो रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.
कुछ यदि मिटाना ही चाहें हम, जग से आतंकवाद मिटा दें,
जिनसे मिटे एकता अपनी, हम वो सारे जज़बात मिटा दें.
तृप्त कर दें उन दिलों को, जो बाट अमन की जोह रहे हैं,
वो वहाँ पर ओढ कर चादर, मजे से सो रहे हैं.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# रमेश चन्द्र अवस्थी 'आजाद'

आपका जन्म मध्य प्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : १५ अप्रैल १९४८ को हुआ. आपने हिन्दी साहित्य में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वाहन निर्माणी जबलपुर में सेवारत् हैं. आप मूलतः गीत, ग़ज़ल के प्रतिष्ठ कवि हैं.

देश की प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में आप निरन्तर प्रकाशित होते आ रहे हैं. निकट भविष्य में आपका एक ग़ज़ल-संग्रह 'अधूरे ख़्वाब' उनवान से प्रकाश्य है. समय-समय पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के सिटी चैनल से आपकी रचनाएँ प्रसारित होती रही हैं. आप अनेकों साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान अर्जित कर चुके हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* मकान नं. ४- गंगामैया, व्हीकल इस्टेट,जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२००९.
*स्वर दूत :* (०७६१) २३३४७२५.

## ग़ज़लें

### (१)

बताओ ज़रा क्या तुम्हे ये पता है,
मोहब्बत से बढ़ के भी कोई सजा़ है.

जियो और जीने की तहज़ीब ही तो,
मेरी ज़िन्दगी का मक़सद रहा है.

मोहब्बत है अव्वल, मोहब्बत है अफजल,
ये मैंने पढ़ा है , ये मैंने सुना है.

बचोगे कहाँ तक ? जरा हम भी देखें,
जवानी मोहब्बत की पहली अदा है.

मोहब्बत को 'आज़ाद' नज़रों से देखो,
मोहब्बत इबादत , मोहब्बत खुदा है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## (२)

आ तू घर से निकल, चाँदनी रात में,
साथ मेरे टहल, चाँदनी रात में.
भूल जा तू उसे, हादसा जो हुआ,
अब मेरे साथ चल, चाँदनी रात में.
देख के रूप उनका, मेरा आज फिर,
दिल गया है मचल, चाँदनी रात में.
होश में तुम न थे, मैं भी मदहोश था,
वो भी आया था पल, चाँदनी रात में.
सामने मेरे बैठी रहें , मैं कहूँ,
जिन्दगी की ग़ज़ल, चाँदनी रात में.
अब तो 'आज़ाद' चल, लौट के घर चलें,
दूर आये निकल, चाँदनी रात में.

## ( ३ )

रेश्मी याद के, खिल रहे हैं कवंल,
आपके नाम फिर, लिख रहा हूँ ग़ज़ल.
हम मुसाफिर हैं सुबह, चले जायेंगे,
आपके नयन क्यों, हो रहे हॅ सजल.
अपने गिरने का मुझको, कोई ग़म नहीं,
मेरे गिरने से दुनिया, गयी है संभल.
हर किसी की दुआएँ, मेरे साथ हैं,
हो गयी जिन्दगी आज, मेरी सफल.
बेवफाई के पत्थर से, क्यों आपने,
भावनाओं का फिर, तोड़ डाला महल.
अब बुजुर्गो को सम्मान, मिलता नहीं,
देखो कितना जमाना, गया है बदल.
दिल की आँखों से 'आजाद', पढ़ लीजिये,
आँसुओं से किसी ने, लिखी है ग़ज़ल.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# डॉ. सलपनाथ यादव 'प्रेम'

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद जौनपुर के ग्राम सड़ेरी निवासी श्री राजाराम यादव एवं श्रीमती दसवन्ती देवी यादव के जीवन कानन में दिनांक : १ फरवरी १६४६ को हुआ. बचपन में आप मकराध्वज, बेलनदास, प्रेमलाल जैसे अनेकों नामों से पुकारे जाते थे. आपने बी.ए., डी.एच.बी., सी.आई.एफ.ए., ए.वी.आर. एवं एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, खमरिया में सेवारत् हैं. आप मूलतः कथाकार हैं. इसके साथ ही आप गीत, ग़ज़ल, कविता लेखन एवं मंच संचालन में सिद्ध हस्थ हैं.

आपकी रचनाएँ समय-समय पर देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण. विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक संगठनों से जुड़े इस प्रतिभा सम्पन्न हस्ताक्षर को साहित्य रत्न सम्मानोपाधि से सम्मानित किया जा चुका है.

*सम्पर्क सूत्र :* २४५१/गाँधी नगर, न्यू कंचनपुर, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.) ४८२००५.

## भारत भूमि स्वर्ण मढी है

जय-जय भारत देश महान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान.

राष्ट्रीय पक्षी मोर विहंग,
कल-कल करती यमुना-गंग.
सबको मिला यही सम्मान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान...१.

उत्तर में है खड़ा हिमालय,
दक्षिण में है बड़ा सुधालय.
पूरब-पश्चिम धन की खान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान...२.

यहाँ ऋतु होती चौमासी,
अलग-अलग हैं भाषा-भाषी.
भारतवासी हैं गुणवान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान...३.

हिन्द की शक्ति बहुत बड़ी है,
भारत भूमि स्वर्ण मढी है.
दुनिया भर में हिन्द महान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान...४.

आसमान है प्यार -प्यारा,
जहाँ चमकता है ध्रुव तारा.
'प्रेम' अहिंसक हिन्दुस्तान,
स्वर्ग से सुन्दर हिन्दुस्तान...५.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# गीत

एक रहे हैं एक रहेंगे, सुन ले दुनिया सारी,
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

मिल-जुल कर रहते आपस में, द्वेश को दूर भगायें,
सब रहते सौहार्द्र पूर्वक, हाथ से हाथ मिलाये.
भारत माँ के चरण पूज लें, माता भली हमारी,
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

अपना परचम तीन रंग का, वीच में चक बना है,
धवल रंग केसरिया के संग, खिलता रंग हरा है.
हिन्द तिरंगा अमर रखेंगे, जिसकी रंगत न्यारी,
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

मातृ-भूमि भारत की आयी, बारी अब मुस्काने की,
प्रगति देख हिन्द देश की, हालत बुरी जमाने की.
ध्यान रखेंगे उजड़ न पाये, देश की कोई क्यारी,
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

सुनो हवाओ जाकर कह दो, जहाँ छिपे उत्पाती,
देश की धारा में जुड़ जायें, अच्छों के बन साथी.
नहीं डरेंगे हम दुश्मन से, अच्छी है तैयारी.
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई पहले हिन्दुस्तानी,
हिलमिल कर रहते आपस में, कोई नहीं अभिमानी.
सद्कर्मो का ध्यान रखेंगे, 'प्रेम' के हुए पुजारी,
मातृ-भूमि का मान रखेंगे, भारत के नर-नारी.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव 'वीरू'

आपका जन्म १५ जून १९४९ को हुआ. आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है . वर्तमान में आप आयुध निर्माणी , चाँदा में इलेक्ट्रिशियन ( मास्टर क्राफ्ट्स मैन ) के पद पर सेवारत् हैं. आप व्यंग्य विधा के सशक्त हस्ताक्षर होने के साथ - साथ एक अच्छे ग़ज़लकार भी हैं .

आपकी रचनाएँ अनेक प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में लगातार छपती आ रही हैं. आप मंचों के सफल, जमाऊ कवि हैं . अनेक प्रतिनिधि संकलनों में आपकी रचनाएँ समाहित हैं . विदर्भ साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मान प्राप्त एवं पुरस्कृत हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* श्रीराम नगर, पोस्ट - भद्रावती, जिला- चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) ४४२ ९०२. *स्वर दूत :* (०७१७५) ६५१९०.

## पेट दर्द की दवा

वेशर्म के पत्ते को
किसी गरीव के खून में,
एक दिन भिगो कर रख दीजिये.
दूसरे दिन किसी भिखारिन की
फटी हुई साड़ी से छान लीजिये.
उसके बाद किसी
निर्वल की खोपड़ी में
दहेज की चिता पर
धधकती हुई आँच में
धीमे-धीमे पकाइये.
वीच-वीच में पूँजी पतियों के
चमचों से चलाते जाइये.
जव अच्छी तरह पक जाये,
तो उसमें
पुलिस कर्मचारियों की वफादारी
मंत्रियों के आश्वासन
वुराई की जड़,
वलात्कारी का फूल,
घूसखोरी का वीज तथा
भ्रष्टाचार का फल
इन सब को वेकारी की खल में
मंहगाई के वट्टे से
अच्छी तरह कूट कर मिलाइये.
अव इस अदभुत दवा को
भारतीय चीनी मिट्टी के वरतन में
ढक कर रख दीजिये.
जव भी कभी आपके या
आपके वच्चे के पेट में
भूख के कारण दर्द उठे
तो सिर्फ एक चम्मच खिलाइये
और तुरन्त भूख से छुटकारा पाइये.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# महा भारत

कशमीर -
भारत का अभिन्न अंग है,
आज वह दुश्मनों से तंग है.
कल कृष्ण पाण्डव के साथ थे,
आज कौरवों के संग हैं.
देश बरबादी के
कगार पर खड़ा है,
अल्ला और राम
के बीच विवाद खड़ा है.
देखें किसकी जीत होती है,
इसकी मुख्य जड़ तो राजनीति है.
राजनीति की कोई नीति नही
सिर्फ राज बाकी है,
देश का सिर नही,
सिर्फ ताज बाकी है.
जीत कौरवों की हो
या पाण्डवों की
हमें क्या करना है ?
या सिर्फ शकुनी मामा वन
पाँसे फेंकना है
दुर्योधन-युधिष्ठिर
चौपड़ खेल रहे हैं,
अंधे धृतराष्ट्र
भारत को जोड़ रहे हैं.
वेचारी जनता द्रौपदी
इज्जत की साड़ी पहने
दुःशासन की प्रतीक्षा में वैठी है,
उसकी हालत भिखारिन जैसी है
जनता के आँसू पौछने के लिये
मंहगाई रुमाल लेकर खड़ी है.

वेकारी के हाथों में
मोतियों की लड़ी है
भीष्म पितामह
इच्छा मृत्यु के लिये तैयार है
विदेशों से हथियार
आने का इन्तजार है.
नकुल और सहदेव नक्सलवादियों के
चंगुल में फँसे हैं.
कर्ण कुन्ती की नजर में धर्से हैं.
कुन्ती कर्ण का
आरक्षण का तीर चलाती है,
परन्तु अर्जुन के शक्तिशाली
हिन्दु तीर के सामने
विफल हो जाती है.
अभिमन्यु को ओवीसी के
चकव्यूह में फाँसा है,
उसके पास न तो कोई सर्टिफिकेट है
और न ही कोई
वाहर निकलने की आशा है.
प्रमोशन की मलाई
कर्ण चाट रहे हैं,
और छाछ प्रसाद के रूप में
पण्डितों को वाँट रहे हैं.
महा भारत होने से देश को वचाइये,
मेरा मुँह क्या देख रहे हैं?
जाकर अन्धे धृतराष्ट्र को समझाइये.
वास्तव में कोई श्री नही है,
श्रीसंग वास्तव का पुलिन्दा है.
आप मानो न मानो दोस्तो
धृतराष्ट्र आज भी जिन्दा है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# छगनलाल पांचे

आपका जन्म दिनांक : ४ अक्टूबर १९४६ को महाराष्ट्र के व्यवसायिक नगर गोंदिया में हुआ . आपने हिन्दी में एम.ए., बी.एड. तक शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी स्कूल, जवाहर नगर , भंडारा में हिन्दी शिक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आप साहित्य की सभी विधाओं में सफलतापूर्वक सृजन कर रहे हैं. आपकी रचनाओं का आकाशवाणी से प्रसारण एवं आपके द्वारा निर्देशित लोक नृत्यों का अनेकों वार दूरदर्शन से प्रसारण हो चुका है. आप लेखक होने के साथ-साथ निर्देशक एवं मंचीय कलाकार भी हैं. आप अनेक साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं. आयुध निर्माणी, भण्डारा द्वारा दो बार आदर्श शिक्षक के रूप में पुरस्कृत हो चुके हैं.

देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख, कहानी, एकांकी नाटक, गीत, ग़ज़ल, दोहे, छन्द एवं कविताएँ लगातार प्रकाशित होती रहती हैं . आप कुशल मंच संचालक एवं वादक भी है .

*सम्पर्क सूत्र :* टाइप-जी, ४१-१, आयुध निर्माणी, जवाहरनगर, भंडारा-४४१९०६.
*स्वर दूत :* (०७१८४) २७५१३४.

## गीत

धुआँ - धुआँ सा वातावरण है, उजड़ा-उजड़ा सा वन उपवन,
साथी ! तेरे गाँव में लगता नहीं, अव अपना मन.
न तो यहाँ कूकती कोयल, न भौंरे करते हैं गुँजन,
न तो झरने झर - झर गाते, न शोर मचाये पवन.
न ही इनका कोई ठौर ठिकाना, न ही कोई घर आँगन,
साथी ! तेरे गाँव में लगता नहीं, अव अपना मन.
न तो यहाँ मुस्कान अधरों पर, न गालों पर लालीपन,
साज - सिंगार में बैठी दुल्हनिया, मुखड़ा उदास,उजड़ा दर्पण.
छिन गयी लोगों की खुशियाँ, मात्र रह गया करुण रुदन,
साथी ! तेरे गाँव में लगता नहीं, अव अपना मन.
यहाँ हर चीज मिलती है मँहगी, मँहगा प्रेम का व्यापार है,
यहाँ उधार से मिलती खुशियाँ, गमों का सस्ता बाजार है.
यहाँ आँसुओं के लगते मेले, छू हो गयी घुँघरू की छन-छन,
साथी ! तेरे गाँव में लगता नहीं, अव अपना मन.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ग़ज़ल

कैसे विश्वास करें हम तेरे वादों का,
अरे पाक ! तेरे नापाक इरादों का.
हमने तो निभाया था धरम दोस्ती का,
और तूने किया है करम जल्लादों का.
बर्फ सा ठण्डा समझ लिया था हमको,
या बरसता हुआ पानी सावन-भादों का.
कारगिल , टाइगर हिल सबूत हैं इसके,
हिन्दुस्तानियों का हाथ है फौलादों का.
नरम दिल भी बन जाते हैं कैसे शेर दिल,
देखा बुज़दिल ! करिश्मा वक्त के तकाजों का.
तू जब भी सिर उठायेगा, मुँह की खायेगा,
कर न सकेगा मुकाबला हमारे जाँबाजों का.
शोर कितना भी मचा लो, शरीफ मुशर्रफ अब,
असर नहीं होगा तुम्हारी फरियादों का.
किसी भी हाल में जो टल नही सकता,
इतना दम होता है, 'अटल' के संवादों का.

# कहानी घर-घर की

पिता जी , माता जी पर भड़के,
तो माता जी बेटे पर भड़की,
फिर बेटा पत्नी पर भड़का,
तो पत्नी बेटों पर भड़की,
यही है -
कहानी घर-घर की.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# यादुनाथ सेवटा

आपका जन्म जन्माष्टमी १६४६ को उत्तर प्रदेश के आजमगढ जनपद के सेवटा ग्राम में हुआ. आपने हिन्दी विषय लेकर एम.ए. तद्-उपरान्त बी. एड. तक शिक्षा प्राप्त की. वर्तमान में आप गन एण्ड शैल फैक्ट्री हार्द स्कूल, काशीपुर, कोलकाता में वरिष्ठ शिक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

समय-समय पर देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही है. आप गद्य एवं पर समान रूप से सृजनरत् हैं. आप प्रगतिशील लेखक संघ काशीपुर के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत् एवं "सदीनामा" पत्रिका के प्रमुख सलाहकार हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* जे.एन.७-१७, न्यू जेल रोड स्टेट रोड,काशीपुर,कोलकाता-७००००२.

## भिक्षुक बालक का सपना

हाथ पकड़ कर भिक्षुक बालक
बाबा से रोकर बोला,
"मेरा भी एक छोटा सा
यदि अपना घर होता,
तो कितना सुन्दर होता.
जिसको निज हाथों के श्रम से
द्वारे की सौंधी मिट्टी में
लाल, गुलाबी ,नीले ,पीले
सुन्दर-सुन्दर फूल खिलाता.
श्रम स्वेद कणों से सींच कर
क्यारी-क्यारी हरियाली फैलाता.
मेरी कोमल बाँहें जब भी
श्रम से थक हो जाती चूर,
निज घर में रुक कर कुछ पल
मैं करता थकावट अपनी दूर.
बाबा क्या ऐसा होगा...?
कुछ तो तुम बोलो बाबा
हर पल रहते हो क्यों चुप?

जेठ की दुपहरिया नाच रही
सिर पर नही लगेगी धूप,
वर्षा में तो भीग-भीग कर
सारी रात बिता देता.
जाड़ा तो कितना निष्ठुर है,
बहुतों को स्वर्ग पठा देता.
बोलो कुछ तो बोलो बाबा
आँखें क्यों रहे हो मीच?
रूखी-सूखी कुछ भी खाकर
मैं जीवन यापन कर लूँगा.
पर सपना मेरा है बाबा
क्या अपना घर होगा....?"
गुमसुम बैठा उसका बाबा
सिर पर रख कर हाथ
सावन की झड़ी सी आँखें,
कहती जाती मन की बात.
पुष्प कभी नही खिला मरुभूमि में,
निर्धन की साध होती विलीन धूलि में.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# हाथ रिक्शा वाला

वह दौड़ रहा है धपाधप
मनुष्य हो, घोड़े सा टपाटप
नराधीनता से स्वाधीनता तक
बढता चला जा रहा
चौराहे से छूटी
प्राइवेट टैक्सी या बस सा
हाँफ-हाँफ कर दौड़ रहा,
विशाद रेखा बढती जा रही
चिलचिलाती धूप में
वर्षा में भीग-भीग कर
शीत में ठिठुर-ठिठुर कर
कठिन यात्रा पूरी करता
जैसे सौ-सौ बार जीता मरता.
श्वेत वस्त्र सज्जित
निर्मोही आदमी को
ढो रहा है आदमी.
नंगा बदन एटलस सा
मानवता का कलंक
ढोए जा रहा है.
गन्तव्य स्थल तक पहुँचने को
आते-जाते मनोभाव
चौराहे की लाल-हरी
बत्ती की तरह आते
और विलुप्त हो जाते हैं.
वह अपना हाथ रिक्शा
हृदय से लगाये
मूठ बन्दरी सी चिपकाये
नंगे पाँव दौड़ रहा है.
सिर से पाँव तक
तर-तर पसीना
दुर्गन्ध युक्त गमछा मटमैला
स्वेद भीगे वस्त्र देख
सड़क का हृदय
पिघल उठा.
मानव हृदय पर
आघात सा.
घुँघरू की घन-घन
सी आवाज
एक-एक बढते हुए कदम
इक्कीसवीं सदी के
अन्तिम छोर तक
बढते जा रहे,
बढते जा रहे.
जब रिक्शे को उठाता है.
तो निज बच्चों का
चेहरा आँखों के सम्मुख
उभर आता है,
वह विचलित हो,भूखे पेट
और थके हाथ-पाँव भी
सरपट दौड़ता जाता है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# हृदयेश कुमार कुरील 'अश्क'

अश्क जी का जन्म मध्य प्रदेश की संस्कारथानी नगरी जबलपुर में दिनांक : ३ फरवरी १९५० को हुआ. आपने स्नातक (कला) तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप व्हीकल फैक्ट्री, जबलपुर में चार्जमैन के पद पर सेवारत् हैं.

आपकी रचनाएँ देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लगातार छपती आ रही हैं. "ख्वाब का मंजर" शीर्षक से आपकी प्रथम काव्य-कृति प्रकाशित हो चुकी हैं. "पीले वरक में रखे गुलाब" एवं "तिनका तिनका नीड़" आदि चर्चित प्रतिनिधि काव्य-संकलनों के आप सहयोगी कवि हैं. समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारण, कवि सम्मेलनों के मंचों के चर्चित कवि, अनेकों पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुके हैं.

*सम्पर्क सूत्र* : म. नं. १०५६ - समीक्षा टाउन, फेस - २, पुलिस लाईन काँच घर जवलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२००१ *स्वर दूत* : (०७६१) २६२७८१२.

## ग़ज़ल

मौसमों सा वदलता चेहरा था,
दिल से रिश्ता ही ऐसा गहरा था.

प्यास वुझती भला मेरी कैसे,
सामने जव सुलगता सहरा था.

हम सुनाते रहे फ़साना-ए-दिल,
और ज़माना जनाव वहरा था.

नब्ज़े हालात भाँप ली वरना,
मसअला ज़िद पे आ के ठहरा था.

उनसे मिलने को चल पड़े थे मग़र,
कू-ए-जानां पे सख़्त पहरा था.

लूट ली जिसने हर खुशी मुझ से,
'अश्क' वो ख़्वाव भी सुनहरा था.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ग़ज़लें

## (१)

फ़र्ज कुछ दोस्ती का अदा कीजिये,
ग़र वफ़ा न सही तो दग़ा कीजिये.
जान जाएँ जमाने का रुख़ दोस्तो,
जख़्म देकर हमारी दवा कीजिये.
मुँह छिपाना पड़े न तुम्हे फिर कहीं,
ज़िन्दगी में न ऐसी ख़ता कीजिये.
एक ख़्वाहिश रही उम्र भर बस यही,
हमसे दिल न दुखे ये दुआ कीजिये.
काम दुनिया में तो कोई मुश्किल नही,
आप ऊँचे इरादे रखा कीजिये.
ये है हस्सास दिल की हमारे सदा,
आप ग़मगीं हों फिर भी भला कीजिये.
बस मोहब्बत का इतना ही दस्तूर है,
दिल दिया है तो फिर न गिला कीजिये.
अब यही अपना पैग़ाम है 'अश्क' जी,
अच्छा हो न अगर, न बुरा कीजिये.

## (२)

शज़र भी बेलिबास थे, ज़मी भी बेलिबास थी,
आँधियों का शोर था और जिन्दगी उदास थी.
सर पे थी तपन बड़ी और रास्ता तवील था,
दे रही थी छाँव जो वह याद आस पास थी.
नक़्श बेरुखी के जो छोड़ कर थे चल दिये,
उनकी चाहतों के नाम अनबुझी सी प्यास थी.
कर रहे थे ग़ैर से हँस के बात बज़्म में,
एक मेरी जिन्दगी ही बज़्में-नाशनास थी.
'अश्क' उनको किस तरह से रिन्द समझे बोलिये,
वो कि जिनकी मयकशी तालिबे गिलास थी.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# चन्द्र पाल सिंह "श्रमिक"

मध्य प्रदेश के जनपद रीवा के एक छोटे से गाँव मझिगवाँ निवासी श्री मनोहर सिंह के जीवन कानन में दिनांक : १२ अक्टूबर १९५० को जो पुष्प पुष्पित हुआ उसका नाम रखा गया चन्द्र पाल सिंह,जो "श्रमिक" उपनाम से वर्तमान में साहित्य साधनारत् है. आप एच.एस.एस.सी. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में सेवारत् हो गये.

आप विद्यार्थी जीवन से ही तुकबन्दियाँ क़रने लगे थे, जो कालान्तर में आदतों में स्थायी रूप से शामिल हो गयी. लेखन आपकी विवशता है. समाज में उत्पन्न विसंगतियों को देख कर आपका संवेदनशील मन द्रवित हो उठता है और चल पड़ती है लेखनी क़ागज के श्वेत पृष्ठों पर. आप जनवादी विचारधारा से प्रभावित जनवादी कवि हैं. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय परे प्रकाशित होती रहती हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा. नं. ६/४२/६, आयुध निर्माणी परिसर, अम्बाझरी, नागपुर, (महाराष्ट्र) ४४० ०२१.

## एक मजदूर की पुकार

साम्प्रदायिक दंगों से त्रस्त
एक मजदूर दूसरे से बोला,
"मुझे मत मारो !
मैं कारखाने से निकाला गया
तुम्हारा ही मजदूर भाई हूँ,भूखा हूँ
भूखा हूँ और भूख की कोई
जात नहीं होती.
न तुम हिन्दु, न मैं मुसलमान
हम दोनों ही हैं, तो गरीब इंसान
हम आपस में न लडें,
अपितु गरीबी,भुखमरी,बेकारी
जो मनुष्यता के लिये है
अभिशाप भारी.
इस महाजनी सभ्यता और
इसके पोषकों को
जो हमें आपस में
लड़वाते,मरवाते, जलवाते है,
फिर हमारी लाशों पर
अपना जश्न मनाते हैं.
आओ मिल कर उन्हें फेंक दें,
इतिहास के कूड़ेदान में
और जुट जायें
एक समता मूलक समाज के
सृजन और निर्माण में.
जहाँ मनुष्य और मनुष्यता का
सर्वांगीण विकास हो.
और भय,भूख पीड़ा का
दूर तक न कही भी आभास हो.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# यह नरसंहार रुकेगा कब

करोड़ो निहत्थे निर्दोष लोगों के खून से सनी ये दुनिया,
शासकों की सत्ता की सिरमौर बनी ये दुनिया.
आततायी शासकों ने दुनिया को "कसाईघर" बना डाला है,
मानव ने आस्तीन में यह कैसा साँप पाला है.

आज दुनिया को कत्ल की प्रयोगशाला बना दिया है,
बारूदी ढेर को दुशाला बना दिया है.
राष्ट्र नगर और गाँव डगर सब सहमे - सहमें डरे से है,
सत्ताधीशों के "नरसंहार" देख पाषाण हृदय भी अध मरे से हैं.

उनकी ये आवाज जिसे परमाणु बमों ने जलाया है,
उनकी ही आवाज जिसे जहरीली गैसों ने सुलाया है.
गैस चैम्बरों में घुट - घुट कर जो अपना दम तोड़ गये,
यातना शिविरों की पीड़ा से जो जीवन से मुँह मोड़ गये.

जिनके जिन्दा जिस्मों पर पशु भाँति परीक्षण किया गया,
जिनको जिन्दा दफना कर कार्य विलक्षण किया गया.
बोटी-बोटी में काट जिन्हे सड़कों पर दिया गया फेंक,
दहके अँगारों के ढेरों पर जलने को जिनको दिया फेंक.

उनके मन की आवाजों को मैं तुम्हे सुनाता फिरता हूँ,
शोषण मूलक इस सत्ता का नंगापन तुम्हे बतलाता हूँ.
शोषण और मुनाफे की जब तक यह विचित्र व्यवस्था है,
शोषित के हिस्से में तब तक जीवन की करुण अवस्था है.

साम्राज्यवादी पूँजीवाद को जब तक नही मिटाओगे,
नर संहारों का यह बढता कम तब तक रोक न पाओगे,
समता मूलक हो विश्व मधुर मुस्कान सभी होठों पर खिले,
ऐसी दुनिया के सृजन में श्रम-पुत्रों का ही दौर चले.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# भाऊराव मुले 'वियोगी'

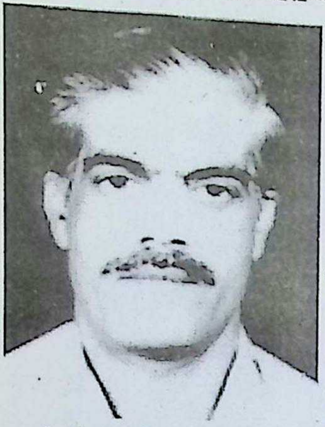

आपका जन्म पिता श्री विश्वेश्वरराव दिवाकरपंत मुले के घर ब्राह्मणवाड़ा जिला- यवतमाल में दिनांक : ६ दिसम्बर १९५० को हुआ. आपकी मातृभाषा मराठी है. कभी-कभी राष्ट्रभाषा हिन्दी का मोह आपको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है तो खुद-ब-खुद लेखनी भावानुभूतियों को अभिव्यक्त करने चल पड़ती है और तैयार हो जाती है कविता हिन्दी में. आपने एस.एस.सी., आई.टी.आई. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आयुध निर्माणी, अम्बाझरी, नागपुर में वरिष्ठ परीक्षक का पद स्वीकार कर लिया. "भावाँजली" तथा "शब्द-शिल्प" आपकी दो काव्य-कृतियाँ मराठी में प्रकाशित हो चुकी हैं. विभागीय पत्रि-काओं के अतिरिक्त नगर की अनेकों पत्र - पत्रिकाओं में आपके लेख, कहानियाँ तथा कविताएँ सतत् प्रकाशित होती रहती है. प्रतिनिधी काव्य-कृतियों में भी आपकी रचनाएँ समाहित हैं.

*सम्पर्क -सूत्र :* "वत्सला निवास", ३१३ - गुरू प्रसाद नगर, दत्तवाड़ी, अमरावती रोड, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२०८०८.

## यारी रहे

दुनिया में न कोई भिखारी रहे,
विवषताओं की न बीमारी रहे.

रहे अम्नो - चैन हर तरफ दोस्तो,
हर इंसा की इंसा से यारी रहे.

दीप विश्वास का हर हृदय में जले,
आँखों में नेह की खुमारी रहे.

नेक इंसान से क्या कुछ न मिले,
नेक नियति की दुनियादारी रहे.

यही कामना है "वियोगी" मेरी,
अब न कहीं कोई लाचारी रहे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# जीऊँ मैं कैसे ?

हूँ धधकता एक अंगारा, वन कर राख जीऊँ मैं कैसे?
घन-घटाओं में विजुरी बन, तम के घूँट पीऊँ मैं कैसे??

याद करूँ जब बीती घड़ियाँ,
व्याकुल मन मेरा हो जाता.
कर्म - साधना के उपवन में,
वन कर तपसी मैं खो जाता.

हूँ सौदागर भाव नगर का,हो भाव शून्य जीऊँ मैं कैसे?
घन-घटाओं में विजुरी बन, तम के घूँट पीऊँ मैं कैसे??

चहुँ दिशा मृत्यु का ताण्डव,
पग - पग पर मिलती हैं लाशें.
नीलकण्ठ बनकर मुझ को तो,
लेनी पड़ती हैं हर साँसें.

हूँ पुजारी पंचशील का, हिंसक बन जीऊँ मैं कैसे?
घन-घटाओं में विजुरी बन, तम के घूँट पीऊँ मैं कैसे??

धधक रही है केसर क्यारी,
बर्फ भी बन गये हैं अँगारे.
चीड़ बनों में भटका पाखी,
अम्नो - चैन की बाट निहारे.

हूँ पहरुवा मैं सरहद का, सरहद को झुठलाऊँ मैं कैसे?
घन-घटाओं में विजुरी बन, तम के घूँट पीऊँ मैं कैसे??


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मो. जमील अफसर

उर्दू के मशहूर-ओ-मकबूल शोहरतमन्द शायर जनाव जलील साज़ साहव के घर महाराष्ट्र की उपराजधानी सांस्कारिक महानगर नागपुर में दिनांक : २ फरवरी १९५१ को जिस शख़्स ने पहली साँस ली,उसका नाम है मो. जमील अफसर. आपकी मादरे जुवान उर्दू है. अपनी शिक्षा दीक्षा पूर्ण करने के पश्चात् आपने आयुध निर्माणी, अम्वाझरी में परीक्षक के पद को स्वीकार किया.

आपको शायरी विरासत में मिली है. आप मूलतः ग़ज़ल गो शायर हैं. साथ ही आप अपने व्यंग्य के पैनेपन के लिये मशहूर हैं. आपके लेख, व्यंग्य, कहानियाँ, ग़ज़ल, कविता, दोहे, गीत आदि समूचे देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाते आ रहे हैं. उर्दू साहित्य के यूथ पब्लिकेशन, नागपुर के आप संचालक मण्डल के सदस्य हैं.

अनेकानेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थओं द्वारा आपको सारस्वत सम्मान से नवाजा गया है. आप ट्रेड यूनियन तथा सामाजिक संस्थाओं के सम्माननीय पदों को न केवल सुशोभित कर रहे हैं, अपितु अपनी कार्य शैली से लोगों के दिलों पर हुकूमत करने में कामयाव हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* यूथ पब्लिकेशन, अफसर विल्ला, मोमिनपुरा, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०१८. *स्वर दूत :* (०७१२) २७३७६५६ तथा २७२६२६२.

## ग़ज़लें

### (१)

किसी को दोस्त समझे, ना किसी को मेहरवाँ समझे,
यह पत्थर के नगर वाले, क्या फूलों की जवाँ समझे.
गर्ज किसको जो समझे, प्यार का मतलव, यहाँ तो सव,
लगे मँडराने वन भौंरा , कली जो भी जवाँ समझे.
सभी भरते हैं दम इन्सान, की जिन्दा हकीकत पर,
हकीकत खुद की लेकिन, हज़रते - इन्साँ कहाँ समझे.
वही आलोचना करते हैं, एक दूजे के धर्मो की,
जो पण्डित के भजन समझे, ना मुल्ला की अजाँ समझे.
करें हम अपनी वरवादी का, शिकवो उनसे क्या 'अफसर',
वही दुश्मन हुए अपने , जिन्हें हम राजदाँ समझे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(२)

शोहरत का भूत हम पर, कुछ ऐसा सवार है,
अपने गले में अपने ही, पैसों का हार है.
मुँह देखी बातें, चमचागिरी और लूट-पाट,
साहित्य में भी यारो , बहुत भ्रष्टाचार है.
राहे वफ़ा में अब कहाँ, कुर्बानियों की बात,
अब जिस को देखिये वही, मतलब का यार है.
सेवा के रास्ते पर, लुटेरों की भीड़ है,
केवल इसी लिये तो यहाँ, लूटमार है.
साधू से लेकर चोर तलक, मेरे देश में,
सब को चुनाव लड़ने का, अब अधिकार है.
पूछे कोई, क्यों छायी है, हर ओर उदासियाँ,
कह देना मेरे देश का, लोकतंत्र वीमार है..
भक्षक बने हुए हैं वही, "अफसर" इस देश में,
काँधों पर जिन के देश की, रक्षा का भार है.

(३)

झूठे मुँह इन्सान यहाँ पर, बात बड़ी तो करता है,
अड़प - झड़प कुछ हाथ लगे, तो हड़पाते कब डरता है.
देने को उपदेश यहाँ जो, दिल चाहे दे दो लेकिन,
देख कर दूजों का खाता, स्वाभाविक है दिल जलता है.
जीवन जीना ख़ेल नही है, बात यह ज्ञानी करते हैं,
फिर भी जीने के चक्कर में, रोज ही इन्साँ मरता है.
दिल तो एक मुफ्ती है जो कि, भले बुरे का दे संकेत,
फिर भी मन को मार के इन्साँ, अपने जी की करता है.
चोर हो या हो डाकू यारो, मुल्ला हो या पण्डित हो,
याद रहे हर एक में हर पल, एक शैतान भी पलता है.
मत कोसे भाग्य को अपने,किसी को कोई इल्जाम न दे,
यही तो होता आया जग में, जो करता है वह भरता है.
"अफसर" ठहरा एक कवि जो, जो देखे कह डाले लेकिन,
चिढ कर लोग यह कहते हैं, यह उल्टा-सीधा बकता है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मनोहर गजभिये 'मनु'

आपका जन्म परम पूज्य डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर की धम्म साधना भूमि नागपुर में दिनांक : १ जुलाई १९५१ को हुआ. आपने मराठी साहित्य में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है. आप मूलतः मराठी भाषी हैं, तेकिन मराठी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में समान रूप से सृजनरत् हैं. गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में आपको महारत् हासिल है. विभागीय पत्रिकाओं के अतिरिक्त देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन. कई प्रतिनिधि संकलनों में गीत, ग़ज़ल, कहानियाँ प्रकाशित हैं. अनेकों साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के सम्माननीय पदों को सुशोभित कर रहे हैं. आप कैरम के कुशल खिलाड़ी हैं तथा अनेकों पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुके हैं. आप अनेकों नाटकों में अभिनय कर श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में पुरस्कृत हो चुके हैं. वर्ममान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १०६ - धम्म कीर्ति नगर, दत्तवाड़ी, अमरावती रोड़, नागपुर, (महाराष्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२४२८४.

## हादसा

मुलाकात में झूठा वादा ही मिल गया होता,
कल की मौत का हादसा जरूर टल गया होता.

जो सदियों से भटकते रहे एक रोशनी के लिये,
सुन कर दास्ताँ सूरज भी पिघल गया होता.

सभी दिशाओं से आँसू अब मातम मनाने लगे,
एक हमदर्दी से दर्द सफर का सम्भल गया होता,

निर्दोष से खेली खून की होली फिर न कहना,
कि फागुन आने से पहले मैं सम्भल गया होता.

तेरा शहर भी 'मनु' हुआ है हादसों में शामिल,
अच्छा होता इस शहर का नाम बदल गया होता.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# मन्दिर में दीप जला रहे हैं

हम मानव होकर भी, मानवता को भुला रहे हैं,
मन में है अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

चाँद पर जाकर कल लाये थे, चाँद की माटी को,
पर भूखा मानव तरस रहा है,, चाँद सी गोल रोटी को.
विज्ञान के इस युग में उसे, आँसू पिला रहे हैं,
मन में है अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

बहते आँसू कह जाते हैं,, एक पीड़ा की दास्तान,
पौंछ कर आँसू सो जाता, कल की चिन्ता में इन्सान.
और कर्णधार हमारे हम को, वादों पर झुला रहे हैं,
मन में है अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

कभी, मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरूद्वारे,
थे अनैतिकता से दूर ये, श्रद्धा स्थल हमारे.
आज शस्त्रों के गोदाम बन कर, विनाश बुला रहे हैं,
मन में है अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

युवक आज भटक रहे हैं, छालों को लेकर पाँवों में,
कब तक बसर होगी जिन्दगी, दर्द को लेकर घावों में.
जो माँगते हैं दवा उनको, हम विश पिला रहे हैं,
मन में है अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

स्वार्थ की दुनिया में अब, नहीं रहा भाईचारा,
भगवान भी डरते धरा पर, जन्म लेने को दोबारा,
पाप की सेज पर हम, अपना ईमान सुला रहे हैं,
मन में अन्धेरा लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं.

इन आँसुओं को मित्रो यूँ ही, कब तक बहने देंगे,
विषमता की पीड़ा को, मन को कब तक सहने देंगे.
आज कह दो हम समाज में, इंकलाब ला रहे हैं,
मन में हैं उजाला लेकिन, मन्दिर में दीप जला रहे हैं

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# लक्ष्मण प्रसाद डेहरिया 'खामोश'

इस कालजयी व्यक्तित्व का जन्म मध्य प्रदेश में छिंदवाड़ा नगर के रहवासी स्वर्गीय श्री दर्शन लाल डेहरिया के मध्यम परिवार में दिनांक : ४ जुलाई १९५१ को हुआ. आपने हिन्दी साहित्य, इतिहास तथा समाज शास्त्र इन तीन विषयों में स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आन विकलांग श्रेणी (नेत्रहीन) में वायु शस्त्र निरीक्षण स्कंध, खमरिया, जबलपुर में परीक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

आपको साहित्य की सभी विधाओं में महारत् प्राप्त है. गद्य एवं पद्य के अतिरिक्त आप के एकांकी नाटक भी चर्चित रहे हैं.अनेकों शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ समय - समय पर प्रकाशित होती रहती हैं. आप अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन तथा मुशायरों के मंचों से भी जुड़े हुए हैं. सामाजिक कार्यों में भी आपकी अभिरुचि है. आप अभिनव कला संस्था, सत्गुरू कबीर मानव धर्म समीति तथा डेहरिया मेहरा कल्याण संघ, जबलपुर आदि संस्थाओं के सम्माननीय पदों पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* ए.ए.आई.डब्लू., खमरिया, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२ ००५.

## ग़ज़लें

### (१)

रुख़सार पे दर्द की लकीर अभी बाकी है,
धुँधली यादों की तस्वीर अभी बाकी है.

ग़ज़लों के समंदर में गोता लगाने वालो,
पढने के लिये ग़ालिब, मीर अभी बाकी है.

मेहनत की रोटियों से ही मिलता है सुकून,
मुफलिस हैं हम यारो ज़मीर अभी बाकी है.

मैं नही छोड़ सकता मुल्क और लुटने के लिये,
धनुर्धर के तरकष में तीर अभी बाकी है.

"खामाश" युवाओं की आँखों में तो झाँकिये,
गोया सुनहरे कल की पीर अभी बाकी है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## (२)

अन्धेरे कभी रोया नहीं करते,
उजाले कभी खोया नही करते.

काँटों के संग रहते हैं लेकिन,
गुलाब काँटे बोया नही करते.

बेवफाई तो एक हादसा है,
हादसों में यूँ रोया नही करते.

जिन्दगी तो एक हकीकत है,
ख्वाब उसे संजोया नही करते.

लहरें कितनी कश्ती हिलायें "खामोश",
माँझी उसे डुबोया नही करते.

## (३)

मिल जाये मन का मीत जरूरी तो नहीं,
दिल गाये गम के गीत जरूरी तो नही.

शमाँ की लौ में झुलसते रहे परवाने,
घट जाये उनकी प्रीत जरूरी तो नही.

दो दिलों के बीच अटकाये रोड़े दुनिया,
बदल जाये जग की रीत जरूरी तो नही.

दे दी है अर्जी हमने पाने शवाब की,
उम्र जाये चाहे बीत जरूरी तो नहीं.

गरीबी हारती रही "खामोश" रातों में,
थम जाये धन की जीत जरूरी तो नही.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# श्रीमती शोभना उइके 'शोभा'

आपका जन्म महाराष्ट्र के नागपुर नगर में दिनांक : ८ सितम्बर १९५१ को हुआ. आपने मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त की है.

वर्तमान में आप एक कुशल गृहणी हैं. आपके पति श्री विनोद कुमार उइके 'दीप' वायु शस्त्र निरीक्षण स्कंध, अम्बाझरी, नागपुर में कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आप मंचों की गीत - ग़ज़ल की मधुर कण्ठी कवयित्री हैं. भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय गीत - संग्रह, साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़लें, बहुरंगी हिन्दी ग़ज़लें तथा सापेक्ष आदि स्तरीय प्रतिनिधी काव्य-संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित. समय-समय पर आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण.

*सम्पर्क सूत्र :* 'साहित्य सुरभि', लक्ष्मण अपार्टमैंट, कोहले ले- आऊट, खड़गाँव रोड, वाड़ी,नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२२६०४.

## ग़ज़ल

आँसुओं की लड़ी है यहाँ जिन्दगी,
दर्द की हथकड़ी है यहाँ जिन्दगी.
मुसलसल फलक से जो बरसा करे,
वो सावन की झड़ी है यहाँ जिन्दगी.
मौत से जूझना तो है आसान पर,
प्रीत से भी लड़ी है यहाँ जिन्दगी.
सेज काँटों का जिसके मुकद्दर में है,
वो गुलाबों की छड़ी है यहाँ जिन्दगी.
वक्त की उँगलियों की अँगूठी हो ज्यों,
नीलम सी जड़ी है यहाँ जिन्दगी.
कैसे कह दूँ मुजस्सिम ग़ज़ल ये नहीं,
खुद ग़ज़ल बन पड़ी है यहाँ जिन्दगी.
चन्द लम्हों की 'शोभा' यहाँ जिन्दगी,
देखने में बड़ी है यहाँ जिन्दगी.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# धन्य धरा, भारत जननी की.

धन्य धरा भारत जननी की, महिमा अपरम्पार;
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

घाट-घाट पर मन्दिर-मस्जिद, चौराहों पर गुरुद्वारा,
पग-पग पर गिरजा औ'मठ हैं,पनघट-पनघट जलधारा.
अलख जगाते सूफी-संत जहाँ, गुरुओं का दरवार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

पत्थर-पत्थर देव यहाँ पर, माटी - माटी चन्दन है.
कंकर - कंकर भोले शंकर, पर्वत - पर्वत गुँजन है,
जिसकी गौरव गाथाओं पर, सम्मोहित संसार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

मुकुट हिमालय, आँचल झेलम, चोली व्यास चिनाव,
सतलुज बनी कंचुकी बंधन, रावी वसन कसाव.
गंगा-जमुना जिसके गले के, मोहक चन्दन हार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

चन्द्रभागा, ब्रह्मपुत्रा कंगन, कर में खनक रहे खन-खन,
ताजमहल हीरे के नग सा, दमक रहा देखो दम-दम.
सोन - बेतवा - गोदावरी हैं, आँचल का विस्तार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

सिन्धु यही नाक की नथनी, रेवा रुन-झुन करधनिया,
पम्पा जहाँ पाँवों की पायल, और कावेरी पैंजनिया.
हिन्दी जिसके भाल की बिन्दी, मेंहदी - महावर, प्यार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिसका श्रृंगार.

जिसके पूत - सपूत भगत सिंह, ऊधम, बन्दा, बैरागी,
वीर जवाहर पूज्य कर्म से, राम-कृष्ण, गौतम-गाँधी.
जिसकी कोख से स्वयं विधाता, लेते रहे अवतार,
पात - पात बिरवा हरियाली ही जिस का श्रृंगार.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# श्रीराम नारायण बाटवे 'दयाल'

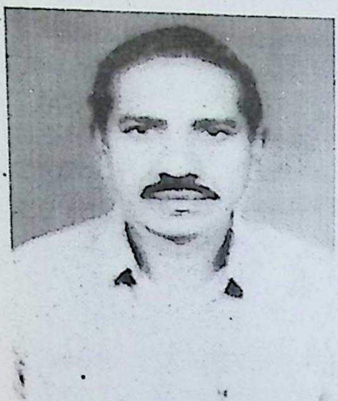

आपका जन्म १५ अप्रैल १९५२ को महाराष्ट्र के जिला चन्द्रपुर के तोहोगाँव निवासी श्री नारायणराव बाटवे के सुसंस्कृत परिवार में हुआ. आपने एम. कॉम., बी. ए., एल. एल. बी. तक शिक्षा प्राप्त की है. १३ जुलाई १९७० से आप आयुध निर्माणी ,अम्बाझरी में सेवारत हैं. वर्तमान समय में आप कार्यवेक्षक ग्रेड - १ के पद पर सेवारत हैं . आपकी मातृभाषा मराठी है, किन्तु आप को मराठी , हिन्दी और अँग्रेजी का अच्छा ज्ञान है. आपके लेख, कथा, कहानियाँ और कविताएँ देश की शीषर्स्थ पत्र - पत्रिकाओं तथा विभागीय पत्रिकाओं में स्थान पाती आ रही हैं. आकाशवाणी से समय - समय पर प्रसारण एवं अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं.

आप सामाजिक संस्थाओं एवं ट्रेड यूनियनों के सक्रीय कार्यकर्ता ही नही, अपितु सम्मानीय पदों पर रह कर सेवारत् भी हैं. भारतीय प्रति रक्षा मजदूर संघ के आप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय मजदूर संघ विदर्भ प्रदेश के सचिव एवं अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, डिफेंस शाखा के अध्यक्ष हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* प्लॉट नं. ३८८ - गुरूप्रसाद नगर , गजानन सोसायटी , दत्तवाड़ी, नागपुर (महाराश्ट्र) ४४० ०२३. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२०६५५.

## ग़ज़ल

अब न कोई साथी , रहा खास बाकी,
कितना मेरा बचा है, , अब प्रवास बाकी.

फूलों के साथ बाग में, आयु गुजारी मैंने,
उस में रही न कोई , अब सुवास बाकी.

आये हो अब क्यों तुम , देर बहुत हुई.
छलने बची न कोई , मेरी आस बाकी.

आँखों में मौत को , भोगा है बार - बार.
आँसुओं का बचा , हाथों में फाँस बाकी.

किस तरह तुम्हे दूँ , जीवन बचा नही,
जीने का है "दयाल", सिर्फ आभास बाकी.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# नया भारतवर्ष

शहीदों की
धधकती चिताओं पर
जाति-धर्म के
पावन-प्रेम से
स्वतन्त्र हुआ यह राष्ट्र,
आज जल रहा है ,
धधक रहा है .....
वन्दूक की गोलियों से
निष्पाप भूने जा रहे हैं,
घूँट-घूँट पानी को
तरस कर लाखों
गरीब माँ के उदर मे
लाखों शिशु
नष्ट किये जा रहे हैं.
क्यों कि क्या खिलायें
इन्हे जन्म के वाद,
यह विचार
उन्हे सता रहा है.....
किन्तु राजनीति के
चौसर पर
पाँसे फेंक रहे हैं,
राजनीति के चतुर शकुनी
और कुछ धर्म के ठेकेदार
फिर दाँव पर लग रही है
द्रौपदी,सामान्य जन
के रूप में वारम्वार
वे फोम के नरम गद्दों पर
समाज मन को
भड़का कर कहते हैं,
"तुम लड़ो,धर्म के लिये
क्यों कि धर्म ही ईमान है.
तुम लड़ो कौम के लिये,
क्यों कि कौम ही देश है.
और हम वहक कर
उन की सियासी चालों में
फँस रहे हैं.....
आग लगाओ
ऐसे नेताओं को
खींचो उन्हे और
इन ठेकेदारों को
उन्ही शहीदों की
चिताओं पर...
और भस्म कर दो
इन्हे उन्हीं चिताओ पर....
तव शायद पावन होगी
आत्मा इस देश की
और राष्ट्र
पुनः खड़ा होगा,
और आदमी को
आदमी समझा जायेगा,
तव ही निर्माण होगा
फिर एक नये भारत वर्ष का
इस भू तल पर,
इस धरा पर.....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

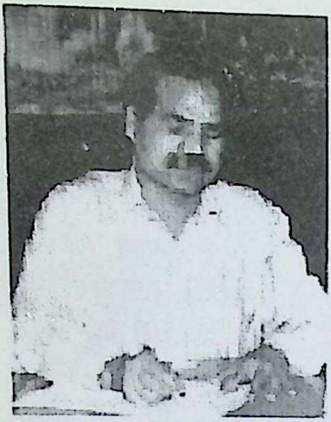

# अशोक बाजपेयी

आयुध निर्माणी, कानपुर में प्रवर श्रेणी लिपिकके पद पर कार्यरत् अशोक बाजपेयी का जन्म कानपुर जनपद के ग्राम- भौती प्रतापपुर में दिनांक : १ अक्टूबर १९५२ को हुआ. आपके पिता श्री प्रेम शंकर बाजपेयी तथा माता श्रीमती विद्यादेवी बाजपेयी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों से परिपूर्ण एवं साधनारत् प्राणी हैं. इस सुसंस्कृत परिवार की शिक्षा - दीक्षा से आप अपनी स्नातक तक की शिक्षा पूर्ण कर साहित्य-सृजन की ओर उन्मुक्त रूप से गतिशील हो गये. परिणामतः आपकी कविताएँ एवं कहानियाँ भिन्न-भिन्न पत्र - पत्रिकाओं में स्थान पाती चली गयी. दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से अनेकों रचनाएँ प्रसारित, अनेकों प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत. आप "राजभाषा मनीषी" श्रेष्ठ रचनाकार आदि सम्मानोपाधियों से विभूषित हैं. विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े एवं संरचना साहित्यिक संस्था के आप संस्थापक महामंत्री हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १२४-६८०, वाँ ब्लाक, गोविन्द नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) २०८ ००६.

## वचन

अम्वा तुमने शिखण्डी के रूप में
मुझ से वदला तो ले लिया, पर मैं खुश हूँ
मैंने अपने पिता शान्तनु को दिये गये वचन को पूरा किया.
मैंने युद्ध लड़ा,अपने गुरू परशुधर से भी वचन के लिये.
मैं जीया वचन के लिये,हारा वचन के लिये.
मैं नही जानता ! मेरी इच्छा मृत्यु अभिशाप थी या वरदान,
परन्तु धृतराष्ट्र और दुर्योधन के साथ
जीना भी किसी मृत्यु से कम नही था.
मैं चाहता तो था- जीऊँ वर्तमान को समेटे भविष्य तक,
पर अब मैं और नही देख सकता, सत्ता के लोभ में,
शकुनि के पाँसे पर द्रौपदी की खिंचती साड़ी.
सामाजिक मर्यादाओं के भँवर में सूत-पुत्र कहलाता कर्ण.
पुरुष के झूठे अभिमान के कारण बार-बार जन्म लेती अम्बा,
पुत्र-मोह से प्रभावित राज-धर्म ! मरते प्रपौत्र, बिलखती पुत्रियाँ,
सत्ता की सुविधाओं से वँधे, गुरुओं की विवशता
और जीत के लिये दृढ प्रतिज्ञ, सारथी के रूप में....युग पुरुषे.....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विश्वासघात

मैंने अपने घर आये,तमाम परिचित मेहमानों में से
एक अपरिचित अतिथि से परिचय पूछा.
पहले वह सकुचाया, फिर कुछ अजीब ढंग से मुस्कुराया
और मेरे साममान्य प्रश्न का,असामान्य उत्तर देता हुआ बोला,
"मेरा नाम जानना चाहते हो..?
मेरा भी औरों की तरह एक नाम है स्वार्थ."
मैने कहा," नाम तो आधुनिक है,परन्तु काम....?"
काम के नाम पर उसने एक जोरदार ठहाका लगाया
और बोला,"भाई मेरे ! अब काम है ही कहाँ....?
फिर भी करता हूँ
और काम के लिये विश्वासघात करता हूँ.
यह काम खूब चल रहा है.
नौकरी,व्यापार,घर और बाहर.....
हर जगह खूब पल रहा है
इसके सहारे लोग सीढ़ियाँ दर सीढ़ियाँ
चढते जा रहे हैं,
जो पहले भीड़ में खोये थे,
अब सबसे ऊपर नजर आ रहे हैं
मेरा नाम एवं काम एक दूसरे के पूरक हैं."
यह कह कर वह अजीब ढंग से मुस्कुराया.
पहले तो मेरी समझ में कुछ नही,
फिर सब कुछ समझ में आया.
मैंने कहा,"भाई तुम तो आधुनिक सभ्यता की
जीती जागती मिसाल हो.
कुंठा,निराशा,असफलता के बुने हुए जाल हो,
मैं अदना सा आदमी तुम्हारी क्या सेवा कर सकूँगा....?"
यह कह कर मैंने उसके हाथ जोड़ लिये.
मेरा सिर बहुत देर तक चकराता रहा.
मैं घण्टों बुदबुदाता रहा.....स्वार्थ..... विश्वासघात.....विश्वासघात.....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# रामा सनेही कनौजिया 'स्नेही'

स्वर्गीय श्री गंगाराम कनौजिया के घर कानपुर जनपद के खेड़ा ग्राम में दिनांक : २० दिसम्बर १९५२ को आपका जन्म हुआ. आपने डी.एम.ई., बी.एस-सी., एम.बी.ए. तक की शिक्षा अर्जित की है . वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं . आप साहित्य की हर विद्या में विशेष दखल रखते हैं. "कोहरे में खोई संभावना" तथा "झंकृत उर के तार" नामक दो काव्य - कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं . देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं मे आप लगातार छप रहे हैं और खप भी रहे हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वार्टर नं. १/४२/२ टाईप - ३, आयुध निर्माणी परिसर, अम्बाझरी, नागपुर-४४० ०२१. *स्वर दूत :* (०७१०४) २२२६२७.

## ग़ज़लें

### (१)

जब-जब जग में जीना चाहा ठेस लगायी लोगों ने,
पुनः फेंक गंदे कीचड़ में जात बतायी लोगों ने.

मंथन कर सागर को जब भी अमृत को पाना चाहा,
निष्ठुरता से डोर काट कर गाज गिरायी लोगों ने.

कातर होकर काट रहा था रात दिवस अंधियारे में,
अभय दान जीवन का देकर घात लगायी लोगों से.

मदद हेतु विधवा की सब ने संध्या कसमें खायी थी,
भोर हुई तो बद्‌चलनी की सजा सुनायी लोगों ने.

"सनेही" अपने बलबूते पर जीत तुम्हें हासिल होगी,
वर्ना कब दुनिया में किसको, जीत दिलायी लोगों ने.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(२)

अगर मिलते नहीं हैं रास्ते खुद को बचाने के,
लगा आरोप दो औरों पे तुम सच को छुपाने के.

भरोसा है नहीं मुझको जमाने पर मेरे दिलवर,
नहीं तो दे दिया होता हुकुम पर्दे उठाने के.

जरूरत हैं नहीं मुझ को तुम्ही से दिल लगाने की,
तरीके और भी है जग में चन्द लम्हें बिताने के.

करो मत भूल तुम अबला को यूँ असहाय कहने की,
रचाये हैं कई इतिहास अब सबला कहाने के.

जरूरत क्या तुम्हें 'सनेही' पड़ी है गिड़गिड़ाने की,
अरे खोजो तरीके कुछ नये बिगड़ी बनाने के.

(३)

क्या दिलों मे प्यार जगा पाओगे कभी तुम,
शैतान को इन्सान बना पाओगे कभी तुम,

तुम लाख झुका लो मेरे कदमों मे सिर अपना,
लेकिन मेरे दिल को न झुका पाओगे कभी तुम.

जाना है, तुम्हें जाइए रोकूँगा नहीं मै,
पर लौटकर मेरा न पता पाओगे कभी तुम.

चहुँ ओर अतिक्रमण हैं, यहाँ तक कि दिलों पर भी,
दुनिया से इसे क्या हटा पाओगे कभी तुम.

चारों तरफ फरेब और झूट है ऐ "स्नेही",
मुश्किल है अपना दामन बचा पाओगे कभी तुम.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विनोद कुमार गर्ग

आप मिलनसार एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी, संवेदनशील कवि का जन्म दिनांक : ७ जनवरी १९५३ को हुआ. आपने बी. एस-सी., एल. एल. एम., एम.बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी कटनी के गुणता आश्वासन स्थापना (धातु) में वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर सेवारत् हैं. आप कविता की न केवल प्रत्येक विधा में सृजन करते आ रहे हैं, अपितु आप एक अच्छे कथाकार भी हैं. आपकी रचनाएँ सरिता, मुक्ता तथा नवभारत जैसी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आ रही हैं. आकाशवाणी पर भी आपकी कविताओं का प्रसारण होता रहता है.

*सम्पर्क-सूत्र :* गुणता आश्वासन स्थापना (धातु), आयुध निर्माणी, कटनी, (मध्य प्रदेश) ४८३ ५०३.

## ग़ज़ल

मुझसे मेरा भी हाल मत पूछो,
ऐसा उलझा सवाल मत पूछो.

अपनी कश्ती के हो गये टुकड़े,
था भँवर या उछाल मत पूछो.

पीठ में उनका भी चुभा खंजर,
मेरे दिल का मलाल मत पूछो.

एक पत्थर पे दिल निसार किया,
ऐसे बुत की मिसाल मत पूछो.

रंग मौसम का यूँ भी फीका है,
किसने डाला गुलाल मत पूछो.

दर्द तन्हा है, जिन्दगी तन्हा,
मुझ से तन्हा खयाल मत पूछो.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# क्या पाओगे ?

क्या पाओंगे मायूसी में, हाथों को मल कर ?
व्यर्थ विगत की बातों से, रह जाओगे छलकर.
हर प्रतिवेदन प्यार और, मनुहार नहीं होता,
हर खाली मन सपनों का, संसार नही होता.
दीये के संग जीना है तो, मिट जाओ जल कर,
व्यर्थ विगत की बातों से ,रह जाओगे छल कर.
धुँए की सीढी से नभ पर, चढा नहीं कोई,
लम्बी परछाई के बल पर, बढा नहीं कोई.
समय बहुत है तेज,कभी ये रुका नही पल भर,
व्यर्थ विगत की बातों से, रह जाओगे छल कर.
रेतीले घर सा कच्चा, सपनों का राज भवन,
बिना रीढ के लुंज-पुंज है, मानव का ये तन.
पर्वत छूना है तो जाओ, पावों पर चल कर,
व्यर्थ विगत की बातों से, रह जाओगे छल कर.

## ग़ज़ल

बदला हुआ ये शहर नजर आता है,
जो भी मिलता है यहाँ गैर नजर आता है.

जिन की आँखों में मुझे जिन्दगी थी मिली,
उनकी नजरों में अभी जहर नजर आता है.

छोटे लगते थे कभी जिन्दगी के बरस,
हर लम्हा अभी पहर नजर आता है.

थरथराहट सी बढी कुछ ऐसी तन में,
अश्क गालों पे हिली लहर नजर आता है.

ऐसे बदले तो न थे मौसम के रिवाज,
क्यों ये बरपा हुआ कहर नजर आता है.

दूर मंजिल है मगर तन में थकन बाकी है,
सामने बिखरा हुआ शहर नजर आता है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मोहम्मद अनवर कामटवी

आपका जन्म दिनांक : २५ जनवरी १९५३ को नागपुर जनपद के कामठी नगर में हुआ. आपके पिता जनाब अब्दुल रहमान एक जाने - पहचाने समाज सेवी हैं. आपने अपनी शिक्षा उर्दू माध्यम से पूरी की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में कुशल परीक्षक के रूप में कार्यरत् हैं.

आप उर्दू, हिन्दी तथा मराठी भाषाओं के ज्ञाता हैं .गीत, ग़ज़ल आपकी प्रमुख विधा है. देश की हिन्दी, मराठी तथा उर्दू की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं.

***सम्पर्क सूत्र :*** द्वारा - जनाब अब्दुल रहमान (छाल वाले) कोलसा टाल , कामठी, नागपुर ( महाराष्ट्र ) ४४१ ००२.

## ग़ज़ल

जहाँ पे तू खड़ा है वो तेरा मकाम नहीं,
कदम न रोक चल,रुकना मेरा काम नहीं.

दिलों में अपने जो मंजिल की चाह रखते हैं,
वो लोग करते कही मुस्तक़िल क़याम नहीं.

किसी भी बज़्म में मिलती नहीं उन्हे इज्जत,
जो दूसरों का कभी करते ऐहतेराम नहीं.

गुलाम वक्त के पाबंद सब हैं दुनिया में,
फक़त ये वक्त हुआ वक्त का गुलाम नहीं.

जहान भर में हुकूमत जिसकी हर शै पर,
सिवाये वक्त के दूजा कोई भी नाम नहीं.

नशा शराब का देगा न तुझको चैन कभी,
ज़हर का प्याला है ये जिन्दगी का जाम नहीं.

दिलों में बाकी है जब तक के आरज़ू 'अनवर',
सफर का तेरे कहीं होगा ऐखतेलाम नहीं.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# गीत

दुनिया फानी आनी जानी, चार दिनों का मेला है,
तन्हा आया है दुनिया में, जाना तुझ को अकेला है.

इस दुनिया में तू जब आया मुट्ठी में तकदीर लिये,
नये जमाने के ख्वाबों की नयीं - नयी ताबीर लिये.
तू जब आया इस दुनिया में जश्न मनाया लोगों ने,
लेकर तेरे सर की बलाएँ लोरी सुनाया लोगों ने.
गम थे जितने दूर हुए सब तेरी एक मुस्कान से,
मेहनत कर परवान चढाया तुझे बड़े अरमान से.
सच पूछो तो दुनिया में सब, अरमानों का मेला है,
तन्हा आया है दुनिया में,जाना तुझ को अकेला है.

झूम के आयी मस्त जवानी दिल ने ली अंगड़ाई,
बजने लगी फिर प्यार की मन में मधुर-मधुर शहनाई.
प्यार की धुन में ऐसा खोया दीवाना सब भूल गया,
झूले में अरमानों के वो प्रीतम के संग झूल गया.
घड़ियाँ मस्त जवानी की जब धीरे-धीरे गुजर गयी,
तूफानों में आयी नरमी मौजें भी कुछ ठहर गयी.
जोश-ए-जवानी है दीवानी मस्ती का सब खेला है,
तन्हा आया है दुनिया में,जाना तुझ को अकेला है.

आया बुढापा दीवाने पर सारी नेमत रूठ गयी,
वक्त ने करवट बदली ऐसी उम्मीदें सब टूट गयीं.
हाली मोहाली जितने भी थे सब ने ही मुँह फेर लिया,
नाकामी और मायूसी ने चारों तरफ से घेर लिया.
अरमानों का प्यार भरा हर ख्वाब सुनहरा टूट गया,
आयी कज़ा तो चला दिवाना पल भर में जग छूट गया.
"अनवर"खाली हाथ चला रे , पैसा है न धेला है,
तन्हा आया है दुनिया में,जाना तुझ को अकेला है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# अशोक कुमार सोनी

आपका जन्म देश के हृदय - स्थल में बसी संतरा नगरी नागपुर में दिनांक : ७ मार्च १९५३ को हुआ. आपने एम.ए.(हिन्दी) एम.कॉम. तथा हिन्दी साहित्य विशारद की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में हिन्दी अधिकारी के पद पर सेवारत् हैं.

आप विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य-सृजन से जुड़े हैं. प्रारम्भ में आप लघु कथा तथा कहानियाँ लिखते रहे. साहित्यिक रुचि ने आपको शीघ्र ही कविता से भी जोड़ दिया. परिणामतः आपकी रचनाएँ नगर की प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही देश की शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में भी स्थान प्राप्त करती चली गयी. "साँवले क्षितिज के पीछे" आपका प्रथम कहानी-संग्रह काफी चर्चित रहा है.

आप विदर्भ साहित्य सम्मेलन,साहित्य साधना तथा साहित्य सुरभि जैसी अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं. समय - समय पर आपकी रचनाएँ आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती हैं. आप मंचों के व्यंग्य विधा के कवि हैं. हिन्दी साहित्य जगत को आपसे असीम आशाएँ हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १/८८/४, टाइप-।।।, डिफेंस परिसर, अम्बाझरी, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२१. *स्वर दूत :* (०७१०४) २३७८४५से४६.एक्स.(का.) ३२७६,(आ.)३४७६.

## मौत आती नही

(१)

मौत आती नही,
दिल लगाती नही.
कैसी निर्मोही है,
मुक्त कराती नही.

(२)

हम बुलाते रहे,
नित लुभाते रहे.
दूर से ही मगर
गुन- गुनाती रही.

(३)

जिन्दगी भर जगे,
हम ठगे के ठगे.
चिर निद्रा में क्यों,
अब सुलाती नहीं.

(४)

चेतना में रहे,
भावना में बहे.
दूर से ही मगर,
वो लुभाती रही.

(५)

चिंतन में मगन,
ऐसी लागी लगन.
पीर प्रणय की भी,
हम को रुलाती नहीं

(६)

फूल महका किये,
शूल के संग जिये.
शबनमी बूँद की,
चाह जाती नहीं.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विषधर ने फुफकारा है

उठो साथियो उठो कि फिर, दुश्मन ने ललकारा है,
चन्दन वन में आज अचानक, विषधर ने फुफकारा है.
नैतिकता को ताक पर रख कर,
घूम रहा है आवारा.
अपने घर में ही अपनों को,
बना रहा वह बंजारा.
भूल गया क्यों वतन यह अपना,आँखों का एक तारा है,
चन्दन वन में आज अचानक, विषधर ने फुफकारा है.
बीज बोना भी विषमता का,
नादानी कायरता है.
गीदड़ धमकियो से बोलो,
कौन यहाँ पर डरता है.
वक्त पड़े पर बच्चा-बच्चा, बन जाता अँगारा है,
चन्दन वन में आज अचानक, विषधर ने फुफकारा है.
आतंकवादी बन कर कब तक,
कोई यहाँ बच पायेगा.
स्वयं भाई के खून से ही क्या,
माथे तिलक लगायेगा.
इतिहास साक्षी है हमने, अहिंसा पर तन-मन वारा है,
चन्दन वन में आज अचानक, विषधर ने फुफकारा है.
जाने किसके संकेतों पर,
कर रहा यह नादानी.
भूल गया इस धरती पर अब,
चल न सकेगी मनमानी.
यहाँ अखंडता पर ही हमने, अपना जीवन वारा है,
चन्दन वन में आज अचानक, विषधर ने फुफकारा है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# डॉ. जमाना प्रसाद 'चंचल'

आपका जन्म मध्य प्रदेश की जबलपुर नगरी में दिनांक : १ अप्रैल १९५३ को हुआ. आपने डी.एच.बी.एम.एस.(होम्यो) तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्ततान में आप वाहन निर्माणी, जबलपुर में सेवारत् हैं.

आपका मूल स्वर हास्य और व्यंग्य का है. विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन. समय-समय पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण. अखिल भारतीय कवि - सम्मेलनों तथा मुशायरों में आप ससम्मान व्यंग्य कवि के रूप में आमंत्रित किये जाते हैं. आप दुष्यन्त कुमार अवार्ड (गोंदिया) डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर फैलोशिप (अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली) तथा अनेकों स्थानीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* ३७६१/११४३-काँचघर,नयी बस्ती, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२००१.
*स्वर दूत :* (०७६१) २६२०२५७. *मोबाइल :* ९८२७२६७८२२.

## हज़लें

### (१)

गिरते पड़ते चल रहा है, और तो सब ठीक है,
बढ़ने वाला ढल रहा है, और तो सब ठीक है.
आजकल बंगाल क्या, कश्मीर क्या, गुजरात क्या,
सारा भारत जल रहा है, और तो सब ठीक है.
इसलिये खुश हूँ कि बेग़म, जा रही है मायके,
सर से तूफाँ टल रहा है, और तो सब ठीक है.
करके चंदा देश में, मजबूर बेवाओं के नाम,
एक नेता पल रहा है, और तो सब ठीक है.
जब से दंगों पर जवानी, आयी है ऐ दोस्तो,
सब को शासन खल रहा है,और तो सब ठीक है.
आज का मंज़र ऐ 'चंचल', देख के कहना पड़ा,
अब से बेहतर कल रहा है, और तो सब ठीक है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## (२)

दिल में नेताओं के ये अरमान आधा रह गया,
बेचने को अब भी हिन्दोस्तान आधा रह गया.
देख कर इंसान की अपने से बढ़ कर हरकतें,
रंजोग़म सें टूट कर शैतान आधा रह गया.
जब से शिक्षा में नक़ल करने का आया है चलन,
शिक्षा पूरी हो गयी पर ज्ञान आधा रह गया.
जा बसा ससुराल जब से मान के बीवी की बात,
तब से मेरा मान और सम्मान आधा रह गया.
इस क़दर ग़ज़लों की यारों हो रही है तस्करी,
मीर-ओ-ग़ालिब, दाग़ का दीवान आधा रह गया.
इश्क़ में कल्लो परी के ये हुआ 'चंचल' ग़ज़ब,
डाका इज़्ज़त पर पड़ा सामान आधा रह गया.

## (3)

चूल्हे में जायें लोग जो बैठे हैं ताड़ में,
चलता है अपना काम शराफ़त की आड़ में.
शायद हमें भी देगी वो लाइन इसलिये,
औरों की तरह हम भी लगे हैं जुगाड़ में.
एक दिन मैं उसको देख के क्या मुस्कुरा दिया,
सालों ने खूब मारा है लटका के झाड़ में.
गुस्से में शेरनी की तरह लग रही है जो,
लेती है वो भी खूब मज़ा छेड़छाड़ में.
ये और बात इश्क़ में डाली न उसने घास,
बैठे हुए हैं आज भी हम जिसकी ताड़ में.
देखी जो उनके लब पे लिपिस्टिक तो यूँ लगा,
जैसे कोई गुलाब खिला हो पहाड़ में.
'चंचल' तुम्हारे हुस्न पे मरती हैं बूढ़ियाँ,
सड़कों की नौजवानियाँ अब जायें भाड़ में.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

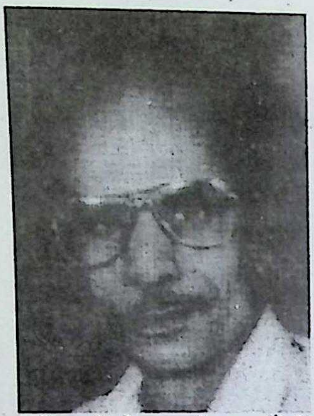

# सुरेश 'दर्पण'

*( सुरेश चन्द्र सोनी )*

आपका जन्म मध्य प्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : ५ मार्च १९५३ को हुआ. आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, खमरिया, जबलपुर में सेवारत् हैं.

'आँखों - आँखों मंजर तेरा' उनवान से आपका एक ग़ज़ल-संग्रह मंज़रे आम तक आ चुका है. देश की शीर्षस्थ हिन्दी तथा उर्दू की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ निरन्तर प्रकाशित होते आ रहे हैं. आकाशवाणी, दूरदर्शन, कुल हिन्द मुशायरा तथा अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों के माध्यम से आपकी रचनाएँ जन-जन तक पहुँचती आ रही हैं. आप हिन्दी तथा उर्दू दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं.

*संपर्क सूत्र :* मकान नं. २६५ - बधैया मोहल्ला, क्षेत्रीय बस स्टेण्ड, कटनी रोड, काली मन्दिर के सामने, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२००१.

## ग़ज़ल

उदासी के चेहरे पढा मत करो,
ग़ज़ल आँसुओं से लिखा मत करो.

मैं आगाह करता हूँ जल जाओगे,
चरागों को हरदम छुआ मत करो.

तक़ाज़ा यही आदमीयत का है,
किसी के लिये बद्दुआ मत करो.

खुदा के लिये चाँदनी रात में,
अकेले - अकेले फिरा मत करो.

मैं 'दर्पण' बना हूँ तुम्हारे लिये,
निगाहों से मेरी छुपा मत करो.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# गीत

ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मज़दूर,
ढूँढ रहे हैं एक मसीहा कर दे जो दुःख दूर.

इनके बच्चे बिलख रहे हैं फिरते मारे - मारे,
इन बच्चों को दुःख देते हैं भूखे - प्यासे धारे.
कोई हमें इतना बतलाये क्या ये है जम्हूर,
ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मज़दूर.

पीस वर्क, बोनस के चक्कर में ये खून बहाते,
शाम - सबरे ये बेचारे मन का चैन गँवाते.
इन के जैसा कोई नहीं है धरती पर मजबूर,
ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मज़दूर.

खेतों से खलिहानों तक है धनवानों के पहरे,
मजदूरों के काँधों तक हैं नेताई के डेरे.
अपने भारत देश का यारो अच्छा है दस्तूर,
ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मज़दूर.

नाम पे यारो निजीकरण के लूट रहे हैं देश,
तानाशाही, रिश्वतखोरी का करके परिवेश.
आज वतन में कोई हलाकू और कोई तैमूर,
ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मज़दूर.

'दर्पण' अब चुपचाप रहो तुम आगे कुछ न बोलो,
अपने घर की बातें हैं ये भेद न कोई खोलो.
अपनी इज़्ज़त प्यारी है तो रहना सबसे दूर,
ये बेचारे भूखे - प्यासे मेहनतकश मजदूर.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शाहदीन "शाह"

उत्तर प्रदेश के जनपद वाराबंकी के कस्वा दरियावाद के निवासी जनाव हवीवुल्ला मरहूम के घर दिनांक : ३ जुलाई १९५३ को शायर शाहदीन शाह का जन्म हुआ. आपने मात्र इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप फील्ड गन फैक्ट्री, कानपुर में सेवारत् हैं.

आप मूलतः ग़ज़ल के शायर हैं. आपने अपने उस्ताद (गुरू) जनाब रहवर तावानी दरियावादी से काव्याराधना प्राप्त की है. आप तरन्नुम के धनी हैं. सस्वर पाठ कर मंच लूट ले जाने में माहिर हैं. आप उर्दू और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में साहित्य सृजन करते रहे हैं. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में ससम्मान स्थान पा रही हैं. निकट भविष्य में अविलम्ब आपकी दो काव्य-कृतियाँ मंज़रे आम पर आने को हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* जी.आई.टी.-७९, आरमापुर एस्टेट, कानपुर (उत्तर प्रदेश) २०८ ००९.

## ग़ज़ल

ये जमाने की गर्दिशें कब तक,
इनसे लड़ने की कोशिशें कब तक.

हमने जो दिल में पाल रखी हैं,
पूरी होंगी वे ख्वाहिशें कब तक.

पेश कब तक करें वफ़ा के सुबूत,
होंगी ये आजमाइशें कब तक.

वो जो इंसानियत के कातिल हैं,
उन पे होंगी नवाजिशें कब तक.

हर तरफ कातिलों के घर हों जहाँ,
उस नगर में रिहायशें कब तक.

आ रहा है जो इन्क़लाब उसे,
रोक पायेंगी बंन्दिशें कब तक.

अब तो ऐ "शाह" देखना है हमें,
लोग करते हैं साजिशें कब तक.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ग़ज़ल

मुझ से जब उस दिलरुबा का सामना हो जायेगा,
इश्क की अज़्मत[1] से वो भी आश्ना[2] हो जायेगा.

आशिक़ी में है असर वो क्या से क्या हो जायेगा,
इश्क़ सच्चा है तो इन्सां देवता हो जायेगा.

है यक़ीं मुझ को, कि आँखें चार होने दीजिये,
मेरे दिल से उनके दिल तक रास्ता हो जायेगा.

मुन्तज़िर हूँ जब मेरी खुशियाँ तेरी हो जायेंगीं,
और मुहब्बत में तेरा हर ग़म मेरा हो जायेगा.

वो मेरा महबूब है बस और मुझ को क्या ग़रज़,
बा-वफा रहता है वो या बे-वफ़ा हो जायेगा.

आइनों की बज़्म[4] में आया अगर पत्थर कोई,
मेरा दावा है कि वो भी आइना हो जायेगा.

तुम अभी तर्के[5] ता-अल्लुक़[6] का इरादा मत करो,
ज़िन्दिगी का साज़ वरना बे सदा हो जायेगा.

ये तेरा नामोनुमूद[7] और ये तेरा जाहोजलाल,
दर-हकीकत एक दिन सब कुछ फ़ना हो जायेगा.

मय[10] से उन लबरेज़[11] आँखों का तक़द्दुस[12] क्या कहें,
"शाह" पी लेगा जो मयकश[13] पारसा[14] हो जायेगा.

१- महानता, २- परिचित, ३- इंतजार करने वाला, ४- सभा, ५-छोड़ना, (विक्ष्छेद करना) ६- सम्बन्ध, ७- पहचान, ८- अभिमान क्रोध, ९- मिट जाना (समाप्त हो जाना), १०- शराब, ११- ऊपर तक भरा हुआ, १२- पवित्रता, १३- शराबी, १४- पवित्र.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# लक्ष्मीकान्त भांडारकर

आपका जन्म ६ जुलाई १ ९५३ को नागपुर में हुआ. आपने बी.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की है. आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में उच्च श्रेणी लिपिकके पद पर सेवारत् हैं.

आप मराठी भाषी होते हुए भी हिन्दी तथा मराठी दोनों ही भाषाओं में साहित्य साधनारत् हैं. विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में आपका साहित्य निरन्तर प्रकाशित होता रहता है. अनेकों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा आपकी रचनाएँ पुरस्कृत होती रही हैं. आप विदर्भ हिन्दी साहित्य संघ, नागपुर को अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं.

*सम्पर्क-सूत्र :* माथने के घर के पास, मुंशी मन्दिर रोड, महाल, नागपुर- ४४० ००२.

## आँधी

आयी आँधी धर्म की सत्ता के गलियारे में,
हुआ आदमी अन्धा मजहब के अंधियारे में.

इस आँधी में टूट रहे हैं बेकसूरों के घरौंदे,
इन्सानियत भी हैं खो चुके भगवान के बन्दे.

चटक रही दीवारें, भाईचारे के विश्वास की,
भड़क रही है आग नफरत की, अविश्वास की.

भंटक चुकी है आज शान्ति, बापू के आँगन में,
सिसक रहा है संविधान, संसद के प्रांगण में.

कट्टरता है पल रही, आतंकी के डेरों में,
सद्भावना भी है लज्जित, उन्माद के घेरों में.

कलंकित हो रही सभ्यता, कौमों के फसादों में,
भय से सिमटी एकता,माँ भारती के आँचल में.

प्रेम ईश्वर, दया-धर्म है, संदेश गौतम का भूल रहे हैं,
मानव ही मानवता को छोड़, दानवता को पूज रहे हैं.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# हम जानते हैं

युद्ध - भूमि पर जो हमें दे न सके मात,
वे कारगिल में मचा रहे आतंक से उत्पात.
तबाही हमारी और देश की जो चाहते हैं,
उस विशधर को कुचलना हम जानते है.

नस-नस में इनके भरा है छद्म ही छद्म,
खतरों से खाली नही इनका कोई भी कदम.
दहशत-नफरत की पाठशालाएँ जो चलाते हैं,
उन्हे भी सबक सिखाना हम जानते हैं.

हजार साल लड़ने का रखते हैं इरादा,
शिमला समझौते का जो भूल गये हैं वादा.
सरहद पर हमारी वे ही उगलते हैं आग,
उस आग से खेलना हम जानते हैं.

भाड़े के टट्टुओं का लेकर जो सहारा,
उधार में लेकर शस्त्रों से हम को ललकारा.
सीमा पर हमारी जो करते हैं घूसखोरी,
उन्हे मिट्टी में मिलाना हम जानते हैं.

हथियारों की होड़ में ये हो रहे नीलाम,
पश्चिमी डाकुओं के बन रहे हैं गुलाम.
काश्मीर भारत से जो छीनना चाहते हैं,
उनके लाहौर तक पहुँचाना हम जानते हैं.

आकाओं के बल पर हैं करते सीना जोरी,
निशाना दिल्ली का लगा कर बैठी है गौरी.
जंग भारत पर जो थोपना चाहते हैं,
उस जंग को भी हम जीतना जानते हैं.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

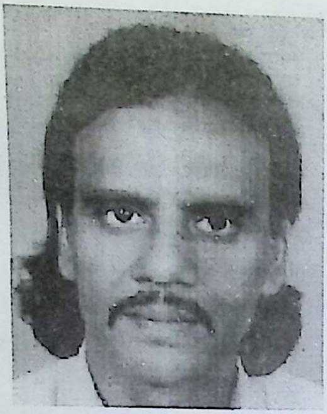

# इरफ़ान 'झाँसवी'

*(इरफ़ांन अहमद सिद्दीकी)*

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी नगर निवासी मोहतरम जनाब अमीन अहमद सिद्दीकी साहब के परिवार में दिनांक : २ मार्च १९५४ को हुआ. आपने उर्दू अदब में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है. आपको उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों ही भाषाओं पर समान अधिकार है.

'पलकें' शीर्षक से आपका एक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है. अन्य अनेक प्रतिनिधि संकलनों में आपकी रचनाएँ समाहित हैं. देश की शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होते आ रहे हैं. गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं पर आपका सृजन गतिमय है. आप तरन्नुम के धनी शायर होने के साथ-साथ एक कुशल मंच संचालक भी हैं. आपने अल्प समय में ही अपनी प्रतिभा के बल पर सम्पूर्ण देश में अपनी एक अच्छी पहचान बना ली है. उत्तर प्रदेश द्वारा आपको टैगोर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है. देश की अनेकों साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा आप सम्मानित कवि, शायर एवं पत्रकार हैं. वर्तमान में आप वाहन निर्माणी, जबलपुर में सेवारत् हैं तथा मध्य प्रदेश लेखक संघ की जबलपुर इकाई अध्यक्ष पद को सुशोभित किये हुए हैं. आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिटी चैनल के आप मान्यता प्राप्त कवि,शायर एवं मंच संचालक हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* १९९ - भरतीपुर, जबलपुर ( मध्य प्रदेश ) ४२८ ००२.
*स्वर दूत :* (०७६१) २६२५६७८.

## ग़ज़ल

निर्धनों के दिल में बरछी सी उतर जाती है रात,
जब भी कभी आती है नया इक ज़ख़्म कर जाती है रात.
मौसमे-बरसात निर्धन के लिये अभिशाप है,
बैठे-बैठे एक कोने में गुज़र जाती है रात.
वासना और भुखमरी के एक समझौते के बाद,
बिन ब्याही लड़कियों की माँग भर जाती है रात.
ले के पैग़ामें-मसर्रत पूँजी-पतियों के लिये,
शाम होते ही तवायफ़ सी सँवर जाती है रात.
किस ऋषि ने श्राप 'इरफ़ां' दे दिया है रात को,
रोज़ लेती है जनम और रोज़ मर जाती है रात.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# गीत

चिंतन की पत्तल पे, शब्दों के दौने में,
प्रिय नया गीत कोई, परसो न.
भावना के भावों में, शील के प्रसंग,
नृत्य करें फूलों पे, शबनमी. उमंग.
फैल जाये कण-कण में, लालिमा ललाम,
हाथ जोड़ शब्द करें, तुझको प्रणाम.
आयेगा बसंत नया, तरसो न.
प्रिय नया गीत कोई, परसो न.
गीत लिख निराला से, मीरा से छन्द,
मन का मनुहार लिख, हिया का द्वन्द.
साहित्यिक चर्चा हो, आये तेरा नाम,
खाली न रह जाये, कविता का जाम.
काव्य के धरातल पे,अमृत सा बरसो न,
प्रिय नया गीत कोई, परसो न.

# ग़ज़ल

मुझे दुश्मन ने पहली बार ख़त में भाई लिक्खा है,
शरद जोशी लिखा ख़ुद को मुझे परसाई लिक्खा है.
ग़रीबी को मिटाने की हर एक कोशिश हुई नाकाम,
हर एक मज़दूर के माथे पे अब मँहगाई लिक्खा है.
पड़ोसी को बचाने के लिये मैं घर से निकला था,
बस इतनी सी बात पे उसने मुझे दंगाई लिक्खा है.
तुम्हारी सोच इतनी संकुचित क्यों हो गयी सोचो,
तुम्हारे नाम के आगे तो हातिमताई लिक्खा है.
तुम्हारे गीत, नज़्में, ज़ब्त होने का है अंदेशा,
तुम्हारे पेन पे 'इरफ़ान' आई.एस.आई. लिक्खा है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# राजा सागरी

*(हेमराज नामदेव)*

आपका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले के निवासी स्व. श्री गयाप्रसाद नामदेव एवं श्रीमती गुलाबरानी नामदेव के जीवन कानन में दिनांक : ०१ अप्रैल १९५४ को हुआ. माता - पिता ने नाम दिया हेमराज नामदेव, किन्तु सृजन संसार में आप राज़ सागरी के नाम से प्रख्यात हुए. आपने हिन्दी साहित्य में बी.ए. के साथ-साथ उर्दू का भी गहरा अध्ययन किया. आपने हिन्दी उर्दू ही नहीं, अपितु अपनी क्षेत्रीय बोली बुन्देलखण्डी में भी सफलतापूर्वक ग़ज़ल कही है.

छन्द-वद्ध कविता आपकी मूल प्रवृति है. पल भर की पारो(गीत,ग़ज़ल,मुक्तक) जाम-ए-ग़ज़ल (ग़ज़ल-संग्रह),चलो अब घर खों चलिये (बुन्देली ग़ज़ल-संग्रह),क़दम-क़दम (उर्दू ग़ज़ल-संग्रह), जिसे उर्दू अकादमी, उत्तर प्रदेश ने प्रकाशित किया है. उक्त चार प्रकाशित कृतियों के अतिरिक्त चार अन्य कृतियाँ प्रकाशन की राह पर हैं. आपकी रचनाएँ देश की शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होती आ रही हैं. आप ग़ज़ल विधा में लोक भाषा वुन्देली के प्रयोग पर साहित्य सृजन छत्तीागढ,रायपुर द्वारा "मुस्तफा हुसैन 'मुस्फित' " पुरस्कार से छत्तीसगढ के राज्यपाल द्वारा सम्मानित है.

समय-समय पर दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों, मुशायरों के माध्यम से आपकी रचनाएँ पाठकों तक पहुँच रही हैं. आप साप्ताहिक पदचाप के स्थायी स्तम्भकार हैं. देश की अनेकों साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा साहित्य श्री,साहित्य शिरोमणी, साहित्य रत्न, गीत श्री आदि सम्मानोपाधियों से सम्मानित तथा अखिल भारतीय अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार, राजकुमारी माथुर काव्य पुरस्कार आदि पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं.वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, खमरिया में सेवारत् हैं. आपकी बुंदेली ग़ज़लों की सी.डी. (आडियो,वीडियो कैसेट) चलो अब घर खों चलिये काफी लोकप्रिय रही है.

*सम्पर्क सूत्र :* ४६/८ - टाइप - टू , खमरिया, जवलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२ ००५.
*स्वर दूत :* (०७६१) २६३११२८.

## ग़ज़ल

जव-जव देस पै संकट आओ,
हमनें अपनों खून बहाओ.
हिन्दू - मुस्लिम साथ रहे हैं,
दुश्मन नें कित्तउ भड़काओ.
हार गये तो काय खों रोरय,
जी भर कें तो दाँव लगाओ.
शान तिरंगा की रखबे खो,
कित्तों नें आ सीस कटाओ.
वीर शहीदों की धरती पै,
तुम जनमें हो भाग मनाओ.
बोटी - बोटी हमनें कर दइ,
जो सीमा के अंदर आओ.
भारत माँ की लाज बचावे,
'राज' चलो तलवार उठाओ.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## ग़ज़ल

दुआएं वस्ल की दोनों मुसलसल करते रहते हैं,
मगर जब सामना होता है तो मिलने से डरते हैं.
वो जिनके वास्ते हमने क़दम रक्खे थे उल्फ़त में,
हमें वो ठोकरों का अब यहाँ पत्थर समझते हैं.
कहीं जाहिर न हो जायें तुम्हारे जुल्म दुनिया पर,
इसी से आँसुओं को आँख में हम क़ैद रखते हैं.
हक़ीक़त है ये मानों या न मानो आबशारों में,
लरज़ती है जमीं तो पत्थरों के दिल दहलते हैं.
जमीनों आस्माँ पर हैं तुम्हारे हुस्न के चर्चे,
तुम्हारे पाँव छूने को फरिश्ते भी तरसते हैं.
ख़फ़ा होते हैं तो लगता है मौसम पतझरों का है,
मगर जब मुस्कुराते हैं तो जैसे फूल झरते हैं.
समझ लीजे कि उनकी ज़िन्दगी के आख़री दिन हैं,
बदन पे 'राज़' जब भी चींटियों के पर निकलते हैं.

## ग़ज़ल

यूँ उन की मोहब्बत के हम रूदाद रहे हैं,
इस हाल में भी शाद हैं और शाद रहे हैं.
पर भी लगे शोहरत को तो उनकी ही बदौलत,
यूँ ही नहीं दुनिया में हम आबाद रहे हैं.
हम से ही मुक्कमल है ये रूदादे मोहब्बत,
सीरीं के मुकाबिल में हम फरहाद रहे हैं.
सदियों की ज़बानों पे रहे गीत हमारे,
यूँ वादे वफ़ा दुनिया को हम याद रहे हैं.
गैरों के घरों को जो उजाड़े हैं हमेशा,
घर उनके कहाँ बोलिये आबाद रहे हैं.
नाकाम हुआ हूँ तो मोहब्बत की बदौलत,
वैसे तो इरादे मेरे फ़ौलाद रहे है.
अय 'राज़' परिन्दों को अमाँ खुद ही अता की,
ऐसे भी मेरे दौर में सैय्याद रहे है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# एम. श्रीरामा

आपका जन्म १५ अगस्त १९५४ को हुआ. आपने एच.एस.एस.सी तक शिक्षा प्राप्त की. आपकी मातृभाषा तेलुगू है, किन्तु राष्ट्रभाषा से गहरा लगाव है. आप तेलुगू और हिन्दी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं. आपकी रचनाएँ स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में सतत् प्रकाशित होती रहती हैं. आप अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित ग़ज़लकार हैं. इसके अतिरिक्त आपकी संगीत और नाटक में भी गहन रुचि है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, चाँदा में टेलीफोन ऑपरेटर के पद पर सेवारत् है.

*सम्पर्क सूत्र :* ७५/ए/२/१,आयुध निर्माणी परिसर, चाँदा, (महाराष्ट्र) ४४२५०१.
*स्वर दूत :* (०७१७५) २५४२५३.

## ग़ज़ल

इस तरह कभी खौफ का मंजर नही देखा,
ताश के पत्तों सा गिरता घर नही देखा.

एक दो नही बिखरे ये लोग हजारों-हजारों,
लाशों का इतना बड़ा समंदर नही देखा.

खून में लथ-पथ दबे कुचले लोग देखे ऐसे,
किसी का हाथ-पैर किसी का सर नही देखा.

बाढ सूखे की मार तो बहुत बार सही हमने,
पर वक्त का कभी इतना कड़वा ज़हर नही देखा.

दरो दीवार को जो थाम सके एक मजबूती से,
कच्छ और भुज मे कहीं ऐसा पत्थर नहीं देखा.

उस जलजले ने आखिर बक्शा नही किसी को,
गाँव-बस्ती क्या उसने तो शहर नही देखा.

वक्त की मार से बच नही सकता सिकंदर भी,
ये हकीकत देख लो किसी ने अगर नही देखा.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# मक़सद

लड़ाई चाहे जैसी भी हो
उसका मकसद,उन करोड़ों लोगों की
पीठ से चिपके हुए पेट के लिये
रोटी का होना चाहिये.
दो घूँट पानी के लिये
मीलों लड़ने वालों के लिये
पानी का होना चाहिये.
हवा पानी और धूप की मार सहते हुए
फुटपाथों पर सपने ओढ-बिछा कर
सोने वालों के लिये
छत मुहैया करने का होना चाहिये.
ये मकसद पगडंडियों से गुजरती हुई
अंधेरी झुग्गी-झोपड़ियों तक
रोशनी पहुँचाने का होना चाहिये.
माचिस की तीलियाँ बनाती
और बीड़ियों की पत्तियाँ लपेटती हुई
उन मासूम,कोमल-कोमत उंगलियों में,
स्कूल की किताबें रखने का होना चाहिय.
अमूमन हमारी सारी लड़ाईयाँ मन्दिर,
मस्जिद और गिरजा घरों की दीवारों से
टकरा कर लौट आती हैं.
या राम-रथ के पहिये में उलझ कर रह जाती है
या बेबस जलते हुए
घरों के धुँए में तबदील होकर रह जाती है
ये लड़ाईयाँ -
कभी धारा ३७० के बहाव में
बह जाती है और कभी सीटी बीटी
या आर्थिक उदारीकरण के
चक्रव्यूह में फँस जाती है.
ये लड़ाईयाँ-
मैच फिक्सिंग के
सवाल-जवाब के ढेर में
दब कर रह जाती है
या तहलका डॉट कॉम के
विवादों में घिर कर रह जाती है.
ये लड़ाईयाँ-
केभी वीरप्पन के पीछे-पीछे
सत्य मंगलम् के घने जंगलों में
भटक कर रह जाती है.
और अन्त में-
ये लडाईयाँ-
किसी पागल कुत्ते की तरह हाँफती
लड़खड़ाती हुई गिर कर
दम तोड़ देती हैं.
दोस्तो, आओ मिलकर हम कुछ
ऐसी लड़ाईयाँ तय करें,
जिन का मकसद
कागजों से नदियाँ को उतार कर
प्यासे घरों तक पहुँचाने का हो.
खेतों की लहलहाती
फसलों को भूखे पेटों तक पहुँचाने का हो.
अंधेरी झुग्गी-झोपड़ियों में
रोशनी पहुँचाने का हो.
बेघरों को छत मुहैया कराने का हो.
मुद्दतों से करोड़ों भूखे-प्यासे वेघरों को
हमारी इन्ही लड़ाईयों का इन्तजार है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विनय पटवर्धन 'विनम्र'

आपका जन्म मध्य प्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर के श्री दत्तात्रय पटवर्धन के परिवार में दिनांक : २० अगस्त १६५४ को हुआ. आपने स्नातक तथा हिन्दी में प्रवीण (राजभाषा) तक की शिक्षा प्राप्त की है.वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में सेवारत् हैं.

आपकी मातृभाषा मराठी है, किन्तु आप मराठी के साथ-साथ हिन्दी में भी समान अधिकार रखते हैं. आपने अनेकों बाल नाट्यों का सृजन एवं निर्देशन किया है. गद्य, पद्य एवं नाट्य में भी आपको महारत हासिल है. अनेकों स्तरीय प्रतिनिधि संकलनों में आपकी कविताएँ और कहानियाँ संकलित हो चुकी हैं. विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश के अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में आप ससम्मान स्थान पाते आ रहे हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* प्लॉट नं.२७, साईकृपा ले आउट, नरेन्द्रनगर,नागपुर,(महाराष्ट्र)४४० ०१२.
*स्वर दूत :* (०७१२) २५२७६०३.

## बदल गया संगीत

कल-कल करती,नदिया बहती, जैसे गाती सुमधुर गीत,
पक्षियों के स्वर-स्वर से गुँजित, गगन में है संगीत,
इस खुशहाल धरा पर अब भी, हर जन करता प्रीत,
नजर लग गयी न जाने किसकी, बदल गया संगीत.

गुरुकुल की तो बात नही,शालाओं में गाते फिल्मी गीत,
घर-घर में रो रहा कन्हैया, न दूध मिले,न ही नवनीत.
पावडर बना बन्द डिब्बों में, गौमाता का क्षीर,
नजर लग गयी न जाने किसकी, बदल गया संगीत.

कृषक यहाँ भूखा मरता है, व्यापारी पाये भरपेट,
जो मशाल थाम क्राँति की, गाता था क्राँति के गीत,
वो गर्द, चरस के साये में, ले रहा बेहोशी की नींद,
नजर लग गयी न जाने किसकी, बदल गया संगीत.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# अस्तित्व

उसके हाथों का कमाल देखो,
मैंने सीने पर घाव सह लिये.
तनिक थके न हाथ उसके,
मैंने भी आँसू पी लिये.
मैं पर्वत से गिरा पत्थर,
घाव सह कर परम बना.
उन हाथों का कमाल देखो, मेरा अस्तित्व ही बदल दिया.
अब पत्थर से बना परम,
परम से परमात्मा हुआ.
शूद्र था कभी सड़क का,
सवर्ण अब मैं बन गया.
सोचा भी न था स्वप्न में,
इतना अब मैं बदल गया.
उन हाथों का कमाल देखो, मेरा अस्तित्व ही बदल दिया.
कभी पद तल की सही मार,
अब मैं फूलों से सजता हूँ.
पाद त्राणों की पहुँच से दूर,
संगमरमर के मंदिर में बसता हूँ.
भक्तों की श्रद्धा के आगे,
"विनम्र" भाव से झुकता हूँ.
उन हाथों का कमाल देखो, मेरा अस्तित्व ही बदल दिया.
तुम धन्य हो, हे ! शिल्पी,
तुम ने मुझे पुनर्जन्म दिया,
मुझे हथोड़ों से भय नही लगा,
भय है उन हथगोलों का.
जो कर देंगे मेरा आवास,
और मेरे भक्तों को रक्त रंजित.
इन हाथें का धमाल देखो, मेरा अस्तित्व ही मिटा डालेंगे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# भोजराव गणेशे

आपका जन्म मध्य प्रदेश के जिला बैतूल के ग्राम मंगोबा खुर्द निवासी स्व. श्री गेंदराव गणेशे एवं श्रीमती चन्द्रभागा देवी गणेशे के जीवन कानन में दिनांक : ४ जनवरी १९५५को हुआ. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, खमरिया मे सेवारत् हैं.

आप मूलतः कथाकार एवं काष्ठ शिल्पी होने के साथ-साथ कला की अन्य विधा से भी जुड़े हैं. देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती आ रही हैं तथा देश के विभिन्न शहरों में नाट्य-मंचन एवं अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत. प्राकृतिक काष्ठ आकृतियों का संग्रह जड़ों एवं शाखाओं में निर्मित काष्ठ आकृतियों को उभारने में सिद्ध हस्त इस कलाकार की लगभग सौ से भी अधिक कलाकृतियों का संग्रह संग्रहित है. हस्त शिल्प विकास निगम, जबलपुर द्वारा सम्मानित तथा अनेकों संस्थाओं द्वारा पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं. समय-समय पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसारण. 'तड़पता मानव' कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुका है. 'चंद्राणी' शीर्षक से प्रकाशित कहानी पुरस्कृत है. आप समन्वय नाट्य संस्था से सम्बद्ध हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* बजरंग नगर, व्हीकल फैक्ट्री, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२ ००९.
*स्वर दूत :* (०७६१) २३३४६९३.

## पिया बिना मन मोरा तरसे

काले मेघा रिम-झिम बरसे,
पिया बिना मन मोरा तरसे.

गेसू जैसे श्याम घटायें,
अब तो बस यादें दुलरायें.
नयन बहें आकुल निर्झर से,
पिया बिना मन मोरा तरसे..१.

प्यासी धरती प्यास बुझाये,
नदियों का यौवन उफनाये.
भीगा तन मन फिर भी झुलसे,
पिया बिना मन मोरा तरसे..२.

हरे - हरे परिधान सुशोभित,
मन के भाव हुए अपराजित.
उमड़-घुमड़ बदरा मन बरसे,
पिया बिना मन मोरा तरसे..३.

पुरवैया के सँग-सँग डोले,
विरह दशा मन किससे बोले.
दुखियारी के घर धन बरसे,
पिया बिना मन मोरा तरसे..४.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu. Collection

# भारत मेरा महान

बाँस की ऊबड़-खाबड़
बल्लियों पर जैसे
खींच कर बाँधा हो कपड़ा,
देखा पहली बार
ऐसी भी होता है
मानव का मुखड़ा.
मूक बने देखते रहें
निर्लज्ज आँखें,
निर्मोही प्रकृति,
वास्तु शिल्पी कहते
वाह !
यही तो है,
असली मानव आकृति,
कौन कहता है ?
भूख से व्याकुल
ये तस्वीर नकली,
गणितज्ञों के गणित से
दो दूनी चार करके
गिन लो इनकी पसली.
ये तस्वीरें -
हर शहर में
हर चौराहे पर
मिल जायेंगे
इन्हे देख कर लोग,
'वन्दे मातरम्'
गीत गायेंगे.
इतिहास बताता है
इस सड़क का,
गूँजे हैं
देश प्रेम के नारे,
सद्भावना,
नारी अधिकार,
साम्प्रदायिक दंगे
एवं असंख्य वादे,
परन्तु यह तस्वीर
आज भी वैसी ही
निर्लज्ज,निर्वस्त्र रह
रोटी के लिये हाथ फैलाये,
देख !
लोग चल दिये
अपनी जेब सहलाये.
मानव खण्डहर का
जीवित पुतला
आज भी वहीं विद्यमान है,
फिर भी कहते हैं लोग
लिखवा दो
'गिनीज बुक' में,
'भारत देश महान' है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# अमीता रमेशचन्द्र सिंह गहलोद

आपका जन्म २७ मई १९५५ में हुआ. आपने एम.ए., बी.एड., एम.फिल. तक शिक्षा प्राप्त कर अध्यापन का कार्य अंगीकार कर लिया और वर्तमान में आप ईश्वर देशमुख महाविद्यालय, हनुमान नगर में प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं.आपके पति श्री रमेशचन्द्र सिंह गहलोद आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में कार्यालय अधीक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

आप मराठी और हिन्दी में गद्य व पद्य तथा समीक्षा आदि लिखती हैं. आप धर्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक शोध परक लेखों के लिये मराठी जगत में चर्चित हैं. आप नगर की अनेकों सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की सक्रिय कार्यकर्ता हैं.

आपकी रचनाएँ देश भर की पत्र-पत्रिकाओं में तथा प्रतिनिधि काव्य-संकलनों में सतत् प्रकाशित होती रहती हैं.कई सम्मानों से विभूषित अमीता जी "साहित्य कला सेवा मंडल" की उपाध्यक्ष हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* "ऋखखड़ांजली", १/३, न्यू सूबेदार ले आउट, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२४.
*स्वर दूत :* (०७१२) २७४६२६४.

## प्रकाश किरण

कहाँ से लाऊँ छान कर
तुम्हारे लिये,
मैं शाश्वत
उज्ज्वल प्रकाश किरण ?
क्योंकि....? सभी
प्रकाश किरणें तो
हो चुकी हैं बेईमान.
उजाला ढूँढने निकली तो
झुलस गये मेरे हाथ.
यहाँ किरणों की
शीतलता नहीं.....तपन है,
चढते सूरज की.
मैं तुम्हे कैसे समझाऊँ ?
उजालों में भी होता हैं,
साम्राज्य अन्धेरों का,
पर मैं तुम्हे इस तरह
विवश होता नही देख सकती.
क्योंकि..मेरी
अभिलाषाओं के अस्तित्व पर
निर्भर है तुम्हारी आत्मा.
बेबस स्वप्न न बन जाये,
इस कलयुग में तो अब
अन्धेरे भी
अच्छे लगने लगे हैं.
फिर भी
तुम्हें दिखाना ही होगा कि
प्रकाश किरणों पर
सभी का हक है
और इसीलिये ढूँढने
किरणों के टुकड़े
तुम्हे भी
चलना होगा साथ मेरे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# शहीद की पत्नी

तुम
समर में हो गये अमर,
और मैं ?
मैं.....जी कर भी हुई शहीद !
तुम्हे मिले
शौर्य मेडलों को देख कर
मन पुलकित,
पर आँखें नम हैं,
क्योंकि,
अपने जीवन कानन में
अंकुरित ये नन्हे-नन्हे
किसलय-कलिकाओं के लिये
मेरा यह एकाकी जीवन
बहुत कम है.
तुम्हारे शहीद होते ही
इस घर का
आलम ही बदल गया
और बदल गये
सभी रिश्ते-नाते.
अपने-पराये
से लगते हैं.
न जाने क्या-क्या
अब बकते हैं.
अधरों की मुस्कान
छिन गयी और छिन गये,
सारे स्वप्न सजीले,
जीवन पतझर सा लगता है,
पल-छिन लगते पत्ते पीले
हवाओं ने भी
अपना रुख
बदल लिया है,
क्या बताऊँ ?
तुम बिन मैंने अपना
जीवन कैसे जिया है ?
तुम तो देश की
बलि वेदी पर
हो न्यौछावर
शहीद हो गये,
मैं अपने
नन्हों की खातिर
जी कर भी तो हूँ शहीद.
तुम्हे शहीद होते.
सभी ने देखा है,
किन्तु मेरा तिल-तिल
घुट-घुट कर
मरना किसने देखा ?
तुम समर में हुए अमर
मैं जी कर भी हूँ शहीद.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मोहन सिंह कुशवाहा

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद के पकड़ी ग्राम निवासी श्री जंगी सिंह कुशवाहा के घर दिनांक : ३० सितम्बर १९५५ को मोहन सिंह कुशवाहा का जन्म हुआ. मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा के साथ हिन्दी में एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, कानपुर में तकनीकी कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के ओजस्वी गीतकार के रूप में प्रतिष्ठ एवं मधुर गीतकार हैं.

आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं जैसे कादम्बिनी, चंपक, दैनिक जागरण, अमर उजाला जैसी देश की प्रतिष्ठ एवं चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में सतत् प्रकाशित होती रही हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* एफ.टी.-१७३,आरमापुर स्टेट,कानपुर (उत्तर प्रदेश) २०८ ००९.
*स्वर दूत :* ( ०५१२ ) २१७०८९.

## तस्वीर हिन्दुस्तान की

घर-घर में द्वेष-दंभ कूटनीति की बातें,
दिन हो गया गद्दार, मक्कार सी रातें.
विश्वासियों के मन की ऊँचाई तो देखिये,
लक्ष्मण लगाये बैठा है सीता पे घातें.
भाई ही कहीं बहन का तन बेच रहा है,
मोहन ही द्रौपदी का चीर खींच रहा है.
मंदिर में बातें हो रही हैं संविधान की,
ये देखिये तस्वीर है हिन्दुस्तान की.....१

क्वाँरी ही बूढी हो रही गरीब की बेटी,
रोटी के लिये बिक रही गरीब की बेटी.
घर-द्वार बेच कर किसी ने शादी यदि किया,
ससुराल में जला दी गयी गरीब की बेटी.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

बगिया उजाड़ने लगी है अब बहार ही,
डोली को लूटने लगे हैं अब कहार ही
बिक जाती बातें सिक्कों में गीता कुरान की,
ये देखिये तस्वीर है, हिन्दुस्तान की.....२

वो देखिये डिग्री लिये रिक्शा चला रहा,
आँखों से प्रश्न चिन्ह का झण्डा उठा रहा.
खामोश क्यों खड़ा है लोकतन्त्र पूछिये,
क्यों योग्यता को आज तमाशा बना रहा.
जब एक जाति-वर्ग ही रोजगार पायेगी,
मजबूरी, अन्य वर्ग को डाकू बनायेगी.
कमजोर हो रही है नींव इस मकान की,
ये देखिये तस्वीर है, हिन्दुस्तान की.....३

क्या जाति भूख की है? यह बताईये जरा,
किस वर्ग की गरीबी है ? समझाइये जरा.
लेना जन्म सवर्ण के घर, क्या गुनाह है ?
फिर नीति आरक्षण की, दोहराइये जरा.
उजड़ेगा चमन, जड़ में जहर घोल रहे हो,
प्रतिभा को जातिवाद से, जब तौल रहे हो.
सम्भावना एक और है, पाकिस्तान की,
ये देखिये तस्वीर है, हिन्दुस्तान की.....४

दिल्ली को देश से कोई, दरकार नहीं है,
जय चन्द की जननी है, वफादार नहीं है.
गोरी के इशारों पे, राजघाट बेच दे,
चौहान की आँखों से, सरोकार नहीं है.
छंदों में आग भर दे, छंदकार कहाँ है?
बरदायी बन सके वो, कलमकार कहाँ है?
अब माँगती रोटी कलम, भूषण महान की,
ये देखिये तस्वीर है, हिन्दुस्तान की.....५


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शेख अब्दुल लतीफ 'बेचान'

आपका जन्म महाराष्ट्र के महा नगर पुणे में दिनांक : १३ जनवरी १९५६ को हुआ. आपने इन्टर साईंस, डी.ई.ई. तक की शिक्षा प्राप्त की. वर्तमान में आप एच.ई. फैक्ट्री , खड़की, पुणे में कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं.

आप गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में सफलतपूर्वक साहित्य सृजन कर रहे हैं . अनेकों प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ सतत् प्रकाशित होती आ रही हैं. दस से अधिक प्रतिनिधी संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित हैं . आप अनेकों साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित हैं. आप मंचों के प्रतिष्ठ व्यंग्यकार एवं ओज के कवि हैं .

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा.नं. १/१ डी – टाइप, रेंज हिल्स, पुणे (महाराष्ट्र).४११ ०२०.
*स्वर दूत :* (०२०) २५८१६५६६.

## बेबसी

आज
कोई उत्साह नहीं
मगर फिर भी
जिये जा रहे हैं हम
एक अन्धकारमय जीवन
कोई चमक,कोई उजियारा
नजर नही आता .
अगर कहीं कोई रोशनी
आती है नजर,
तो शायद
किसी के घर जलने से
उठती हुई आग की लपटों की
कोई हँसी
सुनाई देती है अगर
तो शायद
किसी बेबस का
मजाक उड़या जाता हो कहीं

कोईशोर, कोई गुल नहीं
सब शान्त नज़र आता है.
कहीं से कोई शोर
सुनाई देता भी है
तो शायद
किसी अबला के
रोने की आवाज़ है.
है वर्तमान अपने
देश का ऐसा तो
फिर भविष्य
होगा कैसा ?
दफन, हँसी-खुशी को
है कर दिया
जात-पात और धर्म के
नारों ने
दिया जला मानवता को
अंध विश्वास के अंगारों ने.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# कान्हा तुझे आना होगा

दिन - व - दिन वढ रहा पाप धरा पर,
क्षण - क्षण है , पुण्य जग से है घट रहा.
जो दिया वचन था गीता में, आज निभाना होगा,
कान्हा तुझे आना होगा , कान्हा तुझे आना होगा.

है हर दिल में आग , लगी नफरत की,
हर मन में विश है , द्वेष का भर गया.
फिर वंसी प्रेम की , अव तुझे वजाना होगा.
कान्हा तुझे आना होगा, कान्हा तुझे आना होगा.

अव नहीं रक्षक कोई है अवलाओं का,
गली - गली , जगह - जगह , दुर्योधन है खड़ा.
लाज फिर द्रौपदी की अव तुझे वचाना होगा.
कान्हा तुझे आना होगा , कान्हा तुझे आना होगा.

पांडवों की पांडवों से , आज होती जंग है.
गीता तेरी कृष्णा आज , अलमारियों में वन्द है.
था दिखाया अर्जुन को जो, मार्ग हमें दिखाना होगा,
कान्हा तुझे आना होगा, कान्हा तुझे आना होगा.

भाई- भाई लड़ते फिर , न राज है , न ताज है,
फिर शकुनी चलता चालें, गृह-युद्ध का भय आज है.
दूसरे महाभारत से अव , भारत को बचाना होगा,
कान्हा तुझे आना होगा , कान्हा तुझे आना होगा.

कान्हा तेरी पावन भूमि का, आज ऐसा हुआ हाल,
झूठा करता मौज-मजा , सच्चा फिरता है कंगाल.
फिर साथी बन सत्य का, रथ तुझे चलाना होगा,
कान्हा तुझे आना होगा, कान्हा तुझे आना होगा.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

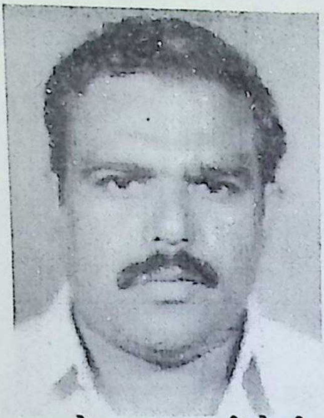

# नवीन दुबे 'निरंकुश'

आपका जन्म ११ सितम्बर १९५६ को हुआ. आपने बी.एस-सी. तक शिक्षा प्राप्त की. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, इटारसी के गुणता आश्वासन स्थापना में वैज्ञानिक सहायक के पद पर सेवारत् हैं.

आप मंचों के प्रतिष्ठ व्यंग्यकार हैं. आपके व्यंग्य, लेख, कहानी, कविताएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आ रही हैं. आपकी रचनाओ का आकाशवाणी से भी समय-समय पर प्रसारण होता रहता है.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा.नं.३०२०/III, आयुध नगर एस्टेट, इटारसी (म.प्र.) ४६१ १२२.
*स्वर दूत :* (०७५७२) २६२६०४.

## कुछ मुक्तक

संगठन :- आँधियों से अकेले गर टकरायेंगे,
टूट कर हम न जाने किधर जायेंगे.
साजिशें जुल्म की हो रही देश में,
संगठित न हुए तो बिखर जायेंगे.

रिश्वत :- मुट्ठियाँ गर्म होती हैं, सब को पता है,
फिर हमने भी कर ली क्या खता है.
अब मुनासिब है कहाँ,हमारा दामन छिपाना,
व्यवस्था का ही जहाँ, आँचल फटा है.

आँसू :- कभी - कभी तो, बिना सताये बह जाते हैं,
आघातों को, विपदाओं कों और दर्द को सह जाते हैं.
मुख से यदि कुछ सम्भव न हो, क्या होता है,
व्यथा हृदय की "आँसू" फिर भी कह जाते हैं.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# विडम्बना

धोखाधड़ी कहीं तो, कहीं विश्वासघात है,
कोई जान ले रहा है, तो कहीं आत्मघात है.
नित हो रहे कमाल, इस विशाल देश में,
उतरते हैं कहीं वस्त्र, कहीं खाल देश में.

कहीं कौम के झगड़े, तो कहीं धर्म की खाई,
मंदिर किसी का ख्वाब, किसी का है खुदाई.
कोई बात एक मत से, यहाँ मानता नहीं,
क्यों हर बात में विवाद, यार मेरे देश में.

वस्त्र दीनता से यहाँ , तार - तार है,
आमद यदि अठन्नी तो, रुपया उधार है.
कैसे बुझायें आग, इस आँतों के जाल की,
दो रोटियों की ख़ातिर, है मशक्कत कमाल की.

परिवेश नग्नता से, यहाँ जार - जार हैं,
अश्लीलता से लिप्त , खड़े इश्तहार हैं.
है चलचित्र का चरित्र भी, विचित्र देश में,
शालीनता अब बिक रही, अश्लील वेश में.

सभ्यता इस देश की, स्वच्छन्द खड़ी है,
संस्कृति आज फिर, खतरे में पड़ी है.
संवेदना को वेदना का भान नहीं है.
लगता है आज आदमी में, जान नहीं है.

ये हालात मेरे देश के, कैसे बदल गये,
क्यों स्वार्थ की दूकान पर, रिश्ते मचल गये.
चाहा था जिनको जान से, ज्यादा मैंने कभी,
इस अन्धी चकाचौध में, वे भी फिसल गये.

अब आदर्श फटे हाल पर, कोई पूछता नही,
होते हैं सरे आम, कत्ले आम देश में.
आकार एकता का जहाँ, खण्ड-खण्ड है,
क्या अखण्डता की बात करें, यार देश में.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# अविनाश माधव बोन्द्रे

आपका जन्म १३ अगस्त १९५७ को हुआ. आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है. आप की मातृ-भाषा मराठी है. अतः आप मराठी एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं में समान अधिकार रखते हैं.

आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ प्रतिष्ठ पत्र - पत्रिकाओं में भी यदा कदा प्रकाशित होती रहती हैं. आप मूलतः राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं. आपकी अनेकों रचनाएँ पुरस्कृत हो चुकी हैं. वर्तमान में आप गुणता आश्वासन स्थापना (शस्त्र) मशीन औजार आदिरूप निर्माणी, अम्बरनाथ में उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* गुणता आश्वासन स्थापना (शस्त्र), एम.पी.एफ.,अम्बरनाथ,४२१ ५०२.
*स्वर दूत :* (०२५१) २६१०२६२.

## झुकेंगे मगर प्यार से

झुकती है दुनिया
झुकाने वाला चाहिये,
लेकिन किसके सामने
हम झुक रहे हैं?
यह भी तो सोचना चाहिये,
झुकें हम - माता-पिता,गुरू
और ईश्वर के सामने,
झुकें हम पर-
उतुंग व्यक्ति का वंदन करे,
झुकें हम पर-
अपने तिरंगे को नमन करे.
लेकिन आज हम
झुक रहे हैं,
अपने स्वार्थ पूर्ति करने के लिये,
झुक रहे हैं तो
सत्ता की कुर्सी के लिये,
झुक रहे हैं तो
पैसे की शक्ति के सामने
और झुक रहे हैं
भ्रष्ट लोगों के सामने.
झुकते-झुकते हम
लाचार बन गये हैं.
साथ ही साथ
स्वयं को भी भूल गये हैं
और लाचारी के
जाल में फँस गये हैं.
गलत जगह झुक कर
लाचार जिन्दगी जीने के बजाय
मरें यदि शान से
तो बहुत ही बेहतर होगा.
गीदड़ बन कर जिये,
सौ बरस तक भी तो क्या?
शेर की मौत मरें
तो बेहतर होगा.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# "स्व" से स्वराज तक

स्वयं में छिपे "स्व" को मिले सम्मान,
इस लिये सैंकड़ों स्वजनों ने
किये थे न्यौछावर अपने प्राण.
फल स्वरूप इस "स्व" को मिला अवसर
राज करने और "स्व" के तन्त्र से चलने का
धीरे-धीरे "स्व" का स्वरूप बदलता गया,
"स्व" को पीछे छोड़ अहम् आगे बढ गया.
इस तरह स्व स्वेच्छाचार में बदल गया,
और स्वराज का स्वप्न सुहाना कुचल गया.
इसी स्वेच्छाचार ने भ्रष्टाचार का पौधा बो दिया.
जिसने लालसा में अन्धे हो कर
"स्व" के सम्मान को लज्जित किया.
यह थी हमारी पहली हार
स्वतन्त्रता और स्वराज की,
जब तक हम नींद से जागते
तब तक देर बहुत थी हो चुकी.
भारत माता के पैरों में
इसी स्वेच्छाचार के तन्त्र को
बदलने का समय आज आया है
अब हमें स्वेच्छाचार और
भ्रष्टाचार से एक साथ लड़ना है
अपना अहम् तोड़ कर
स्वराज का वर्तमान मन्त्र बदलना है
और इस "स्व" की शक्ति को
विश्व को दिखाना है.
वन्दे मातरम् गाकर
"स्व" से स्वराज तक जाना है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शारदेन्दु शुक्ला "शारद"

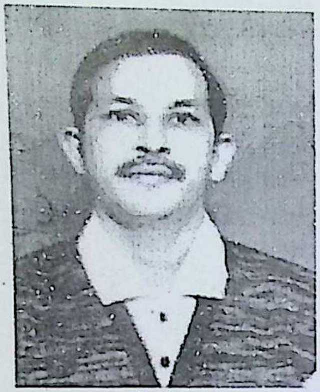

आप हिन्दी साहित्य जगत में किसी पहचान के मोहताज नही हैं. कवि सम्मेलन के मंचों के तेजतर्रार ओज एवं हास्य-व्यंग्य के चिर परिचित कवि हैं. आपका जन्म पिता श्री ऋषिराज शुक्ला एवं माता श्रीमती विद्यादेवी शुक्ला के परिवार में, उत्तर प्रदेश की शहीद नगरी शाहजहाँपुर में हुआ. आप हिन्दी, उर्दू, मराठी एवं अंग्रेजी के ज्ञाता हैं.

आप गत सात वर्षो से पुणे महानगर से प्रकाशित दैनिक पत्र "दैनिक दिवस-रात्री" एवं साप्ताहिक पत्र सीधी बात में रविवारीय कॉलम चला रहे हैं. अनगिनत पत्र-पत्रिओं में तथा प्रतिनिधि काव्य- संकलनों में लगातार प्रकाशित हो रहे हैं. "हास्यास्पद" शीर्षक की आपकी एक काव्य- कृति प्रकाशित हो चुकी है. आपकों अनेकों पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं तथा आचार्य सम्मानोपाधि से अलंकृत हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* ७६/३, आयुध निर्माणी, देहू रोड, पुणे (महाराष्ट्र) ४१२ ११३.
*स्वर दूत :* (०२०) ७६७३२०६

## बेचारी की दुर्दशा

छाया है आजादी का हर्ष,
पर देख कर दुःख होता है प्रति वर्ष.
हर चौदह सितम्बर को हिन्दी
भिखारिन बन कर आती है,
रोती है गिड़गिड़ाती है.
माँगती है उत्थान की भीख,
सप्ताह भर बाद बेचारी की
शान्त हो जाती है गुहार की चीख.
इसके नाम पर करोड़ों खर्च हो जाते हैं,
इन आयोजनों के बावजूद
हिन्दी को फुटपाथ पर पाते हैं.
सब का परिवर्तन हुआ आजादी में,
पर हिन्दी क्यों है आज भी समाधि में?
सबने प्रगति की, पर यह
आज भी दुखियारी और अबला है,
आजादी से आज तक इसका
भीख का कटोरा तक नहीं बदला है.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# सुन ले बेटा......बाप है तेरा हिन्दुस्तान.

भारत नया इतिहास रचेगा तुम्हारे मुल्क की अर्थी पर,
अब की तुम्हारी अन्तिम क्रिया होगी तुम्हारी धरती पर.
कई बार हुई ताकीद तुम्हे कि भारत पर कदम धरना मत,
पी रहा आज विश्व हमारे बहादुरों के चरणों का चरणामृत.
पिछले युद्ध में तुम से तुम्हारी आवाम तक की नही आशाएँ थी,
यहाँ गिरजो में प्रार्थनाएँ और नमाजों में दुआएँ थी.
शिवालय में मन्नत, सबद चलता रहा गुरुद्वारों में,
युवक तड़फे बलिदान को खड़े हो गये कतारों में.
बच्चा-बूढा एक था, थी कुर्बानी देने की लगी होड़,
कि दोबारा उठ न सको, ऐसी तुम्हारी दें कमर तोड़.
कारगिल,द्रास,बटालिक,मष्कों में तिरंगे आज भी गड़े हुए हैं.
और कई फुट कब्रों में कायर तुम्हारे उसके नीचे पड़े हुए हैं.
अब नही चलेगी बपौती किसी की, खेल होगा हमारी मर्जी पर,
अब की तुम्हारी अन्तिम क्रिया होगी तुम्हारी धरती पर.
मत भौंको कि ताकत हम परमाणु बम की रखते हैं,
अरे ! तुम्हारी क्या हम तो शक्ति संसार झुकाने की रखते हैं.
की भूल यदि टकराने की तो मौत के ताण्डव में घिर जाओगे,
मदद के लिये अपने बापों तक भी पहुँच नहीं फिर पाओंगे.
आई.एस.आई.,भाड़े के टट्टू क्या तुम्हारे परिन्दे तक न बचेंगे,
होंगे साक्षात् महाकाल-रणचण्डी, लाशों के इतने अम्बार लगेंगे.
छिड़ा युद्ध अब की तो, यह विश्व देखता रह जायेगा,
बारूद की तेजाबी बारिश से पाक खाक हो जायेगा.
विश्व-मानचित्र में नही दिखेंगे तय होना यह निश्चित है,
अब की मुटभेड़ में मिट जाओगे, विध्वंस तुम्हारा निश्चित है.
हो जायेगा अब के जो कुछ भी कोई नही अचम्भा होगा,
हर पाकिस्तानी की छाती पर गड़ा हुआ तिरंगा होगा.
इस बार परमाणु बमों की बरसात होगी तुम्हारी धरती पर,
भारत नया इतिहास रचेगा तुम्हारे मुल्क की अर्थी पर.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# दिव्य प्रकाश द्विवेदी

आपका जन्म मध्य प्रदेश के शहडोल जनपद के मानपुर ग्राम में दिनांक : १६ जुलाई १९६० को हुआ था. आपने विद्युत अभियांत्रिकी में डिपलोमा तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, देहू रोड पुणे में तकनीकी कार्यवेक्षक के पद पर सेवारत् हैं. आप गत लग-भग १५ वर्षो से संगीत, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मंचों पर सूत्र - संचालन का कार्य करते आ रहे हैं. आप मूलतः श्रृंगार एवं हास्य व्यंग्य के कुशल चितेरे हैं. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के अतिरिक्त देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में यदा कदा छपती रहती है.

*सम्पर्क सूत्र* : ६५/८ , टाइप - ।।।, आयुध निर्माणी परिसर , देहू रोड, पुणे, (महाराष्ट्र) ४१२ ११३, *स्वर दूत* : (०२०) ७६७२६०५.

## मरी हुई आशा

हमने आस्थाओं के बीज लगाये,<br>
पर फल नही खाये.<br>
सेवा भाव से<br>
निष्ठा की खाद लगायी,<br>
कम दिनों में ही<br>
ख्याति की फसल लहलहाई.<br>
अपेक्षाओं के पुष्प खिलने लगे,<br>
कुछ भी प्राप्त नही होने पर<br>
वही फल-फूल<br>
खलने लगे.<br>
महसूस हुआ कि मैं<br>
भौतिकतावाद से ऊब रहा हूँ<br>
आशाओं के भव सागर में<br>
पूर्णतया डूब रहा हूँ.<br>
अब कुण्ठा का<br>
ओढना-बिछौना साथ लिये<br>
जी रहा हूँ,<br>
तिल-तिल मरता<br>
खून का घूँट पी रहा हूँ.<br>
इस चिंतन में<br>
बुद्धिजीवी बुद्धि को उजाड़ कर,<br>
तन पे टँगे कपड़े फाड़ कर.<br>
समझ की बातों पर हकलाता हूँ<br>
तो लोग किनारा कर लेते हैं<br>
क्यों कि मैं पूर्णतः अब<br>
पागल कहलाता हूँ.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# विचित्र में विचित्र

कौन सा ऐसा मंत्र है, अनोखा यहाँ लोकतंत्र है.
अनेकता में एकता कहते हैं,
पर घर में एक न रहते हैं.
मन्दिर - मस्जिद की बातें हैं,
दोनों में जूता - लातें हैं.
दुश्मन घुड़की देता है,
चुपचाप देश सह लेता है.
ताजमहल प्रणय की निशानी है,
टूटन अब प्रेम कहानी है.
जिसका नहीं कोई अन्त है, अनोखा यहाँ लोकतंत्र है.
झाँको श्रवण के गिरेबाँ में,
रहे मातृ - पिता की सेवा में.
अब ऐसे नहीं कोई कारण हैं,
वृद्धाश्रम जिनके उदाहरण हैं.
शरीफ अब यहाँ चन्द हैं,
अनेकों झूठ के पैबंद हैं.
विश्व के राष्ट्र अचम्भित हैं,
हम खीसें निपोरे प्रसन्नचित्त हैं.
कफन घसोट बने सन्त है, अनोखा यहाँ लोकतंत्र है.
हरिश्चन्द्र हुए, धर्मराज हुए,
हम भ्रष्टों के हमराज हुए.
कार्यालय की अजब हैं लीलाएँ,
नित लोग यहाँ धक्के खायें.
कोई नहीं किसी का हेतु है,
हर जगह करैप्शन सेतु है.
मानवता शर्म से झुकती है,
ये किसपे उँगली उठती है.
कटा हुआ सब का पंख है,अनोखा यहाँ लोकतंत्र है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# राजेश मिश्र

उत्तर प्रदेश में गंगा तट पर बसी शहीद नगरी कानपुर के कर्मकाण्डी पण्डित श्री ज्ञानेन्द्रनाथ मिश्र एवं श्रीमती रामकिशोरी देवी मिश्र के जीवन कानन में दिनांक २२ सितम्बर १९६१ को पुष्पित सुमन का नाम है राजेश मिश्र. आपने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आयुध उपस्कर निर्माणी, कानपुर में सेवा कार्य अंगीकार किया.

आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं. आप अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों के मंचों के मधुर गीतकार है.

वर्तमान में आप तकनीकी कामगार के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* ८५ - ए, विकास नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) २०८ ०२४.
*स्वर दूत :* ( ०५१२ ) २५८१३३८

## गीत

रात सुहानी ढल न जाये प्रियतम आओ पास,
वरना अधूरी रह जायेगी जीवन की अभिलाष.

कनक लता सी देह तुम्हारी अलसाया सा ये यौवन,
ताजमहल सा सुन्दर चेहरा देख के शर्माये दरपन.
खुश्बू के झोकों में मिल कर आओ करें परिहास.....

चंचल चितवन तिरछी करके मौन प्रणय को दर्शा दो,
छोड़ परायेपन के भ्रम को अन्तर्मन से अपना लो.
बन स्वाति की बूँद बुझाओ तपते मन की प्यास.....

स्वप्न दिवा जो देखे हमने आज सभी सच हो जाये,
पूर्ण समर्पण भाव से एक दूजे में समागम हो जाये.
तोड़ के हर सीमा के बन्धन पाये सुखद आभास.....

प्यार मेरा गंगा सा पावन इसको प्रिय न ठुकराना,
बीत गये यदि स्वर्णिम पल तो बाद पड़ेगा पछताना.
जीवन में फिर न पाओगी तुम ऐसी सौगात.....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ओ ! भारत के वीर सिपाही

ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से,
राष्ट्र की सेवा धर्म है तेरा, इसे निभाना तन-मन से.

क्षण भंगुर जीवन की कलिका, एक दिन तो मिट जाना है,
भूल न जाना भाई मेरे , भारी कर्ज चुकाना है.
चाहे कितने संकट आयें , कभी न डिगना निज पथ से.
ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से.

सीमा पार के दुश्मन ने फिर, आज हमें ललकारा है,
सारे जग से कहता है वह, यह कश्मीर हमारा है.
भारत माँ का अभिन्न अंग ये, पृथक न हो पाये इससे,
ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से.

अगणित वीरों ने रक्षा में, निज सर्वस्व लुटाया है,
कोटि-कोटि बलिदानों को दे, स्वतंत्रता को पाया है.
इसको आँच न आने पाये, निकले चाहे जाँ तन से.
ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से.

पता नहीं शत्रु को तुम, तूफान उठाने वाले हो,
शाँति दूत हो पर माँ का, अपमान न सहने वाले हो.
ऐसा सबक सिखा दो फिर न, आँख उठाये वो इसपे,
ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से.

अपना रक्त मातृ भू के हित, पानी सा बरसा देना,
मरते-मरते भी दुश्मन का, नामों निशाँ मिटा देना.
वीरगति को तेरी राष्ट्र ये, याद करेगा आदर से,
ओ ! भारत के वीर सिपाही, बढते जाना हिम्मत से.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

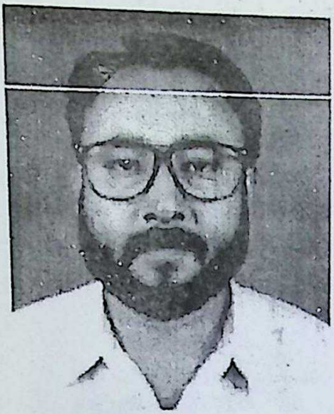

# मुकुल अर्पित

आपका जन्म मध्य प्रदेश के नर्मदा कछार पर स्थित संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांक : २७ नवम्बर १९६२ को हुआ. आपने हिन्दी में स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वाहन निर्माणी, जबलपुर में सेवारत हैं. आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं. साहित्य एवं कला के प्रति समर्पित आपका व्यक्तित्व अनुकरणीय है.

आप साहित्य की हर विधा गीत, नवगीत, ग़ज़ल, छन्द, मुक्त-छन्द, कहानी, नाटक एवं लेख आदि का सतत् सृजन कर रहे हैं. 'पीले वर्क में रखे गुलाव', 'हम नीचे के लोग', 'मधु-संचय' जैसे अनेक प्रतिनिधि संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन. आकाशवाणी, कवि - सम्मेलनों एवं मुशायरों के माध्यमों से आपकी आवाज जन-जन तक पहुँचती आ रही है. वहुआयामी संस्था दिशा के आप संस्थापक अध्यक्ष होने के अतिरिक्त अक्षरालय प्रकाशन के संस्थापक सम्पादक, साँझा रंगमंच के संस्थापक संयोजक, ज़ीशान पब्लिकेशन के प्रमुख सहयोगी, युवा नाट्य संघ के कार्य कारिणी सदस्य तथा नगर की प्रतिष्ठित साहित्य संस्था मिलन एवं पाथेय के आप सदस्य हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* ५७३- चम्पानगर, मानेगाँव, पोस्ट-खमरिया, जबलपुर(म.प्र.)४८२ ००५.
*स्वर दूत :* (०७६१) २८०१०३८.

## ग़ज़लें

### (१)

रोज एक स्वांग भर रहा हूँ मैं,
जाने किस-किस के घर रहा हूँ मैं

उम्र भी है एक अजीब सा जीना,
चढ़ रहा या उतर रहा हूँ मैं.

कौन है वो मकीं मेरे अन्दर,
किससे यूँ बेख़बर रहा हूँ मैं.

कैसे मैं रोकता हवाओं को,
टूटते घर का दर रहा हूँ मैं.

सैंकड़ों प्रश्न मुझ से करता है,
आइने से मुकर रहा हूँ मैं,

मै मकीं हूँ हर एक दिल का अब,
कहने को दर-ब-दर रहा हूँ मैं.

उम्र ने दी नहीं मुझे फुरसत,
वक़्ते आख़िर सँवर रहा हूँ मैं.

मौत तो तयशुदा रही 'अर्पित',
किससे फिर आज डर रहा हूँ मैं


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(२)

मैं हज़ारों सवाल लिखता हूँ,
भूख क्यों है बहाल लिखता हूँ.

मज़हबी उस जुनून के पीछे,
रह गया बस मलाल लिखता हूँ

गाँव का ख़त जवाब माँगे तो,
झूठे कुछ हाल-चाल लिखता हूँ

ज़ुल्म के सामने खड़ा था जो,
हो गया वो निढाल, लिखता हूँ

सब अपाहिज जिसे समझते थे,
भर रहा वो उछाल लिखता हूँ.

लोग अपना उरूज लिखते हैं,
मैं तो अपना जवाल लिखता हूँ

वो पुराने जवाब लिखता है,
मैं नये जब सवाल लिखता हूँ.

टिमटिमाता चराग़ ऐ 'अर्पित',
दे रहा है मिसाल लिखता हूँ.

(३)

याद हैं आबशार की बातें,
उफ़ तेरे इंतिज़ार की बातें.

सच कहूँ अब तलक नही भूला,
मैं तेरे इंतिशार की बातें.

मेरी तन्हाई मुझसे कहती है,
कीजिये मुझसे प्यार की बातें.

अब तो हर साँस कर्ज़ लगती है,
क्या करें सौ-हज़ार की बातें.

हमको दादी सुनाया करती थी,
इक शिकस्ता मज़ार की बातें.

ये सुलगता सिगार कहता है,
इस दिल-ए-बेक़रार की बातें.

ज़िंदगी में अमल से दूर रहे,
हाँ वही हैं उधार की बातें.

पहले ख़ुद को सुधारिये 'अर्पित',
कीजिये फिर सुधार की बातें.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# इन्द्र प्रसाद 'अकेला'

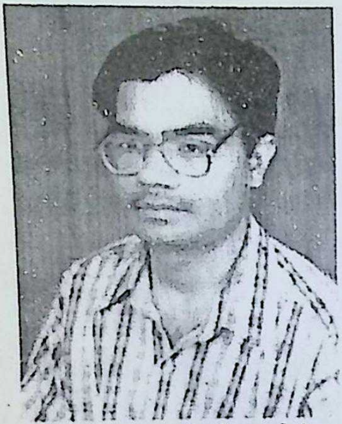

राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी कवि इन्द्र प्रसाद "अकेला" का जन्म १० जुलाई १९६३ को गाजियाबाद जनपद के ग्राम ढिड़ार में हुआ. आपने एम.ए.(हिन्दी), एम.एड्. तक शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, मुरादनगर में सेवारत् हैं. आप वर्तमान परिवेश पर व्यंग्य एवं राष्ट्रीय निर्माण हेतु देश भक्ति पूर्ण छन्द लिखते हैं. आपकी रचनाएँ देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं. देश की अनेंकों साहित्यिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा साहित्य सम्राट, साहित्य मनीषी,भारती रत्न, साहित्य शिरोमणी जैसे अनेकों सम्मानोपाधियो से विभूषित हैं. १६ दिसम्वर २००१ को प्रधान मंत्री श्री अटल विहारी वाजपेयी द्वारा "राष्ट्रीय गौरव" सम्मानोपाधि से विभूषित हैं.

"एक पहेली भारत माँ" आपकी प्रथम काव्य कृति है. आयुध निर्माणी कवि मंच मुरादनगर के आप अध्यक्ष हैं तथा अनेकों साहित्यिक व सांस्कृतिक मंचों से जुड़े हैं. पटेल टाइम्स पत्रिका समूह के ब्यूरो चीफ, जिला-गाजियावाद हैं.

*सम्पर्क सूत्र* : ६/१८७, "काव्य कुँज", न्यू डिफेंस कॉलोनी, मुरादनगर,जनपद-गाजियावाद (उत्तर प्रदेश) २०१२०६. *स्वर दूत* : (०१२३२) २२५३४१.

## वर्तमान छन्द

नयनों में है नीर, मातृ-भूमि है अधीर आज,
नेताओं का फिर वही, राग देख लीजिये.
चहुँ ओर क्रान्ति है, कहीं नही शान्ति है,
फैल रही आतंकी, ये आग देख लीजिये.
सीमाएँ मचाती शोर, कैसी है आतंकी भोर
चारों ओर फैले खूनी, दाग देख लीजिये.
भारती का आँगन तो, घायल ये दिखता है,
संसद के द्वार खूनी, फाग देख लीजिये.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# भारत के वीर जवान

सीमाओं पर खड़े बहादुर, लड़ने को तैयार हैं.
मातृ-भूमि की बलि वेदी पर, चढने को तैयार हैं.

शस्य श्यामला भूमि पर तो,हम सब को अभिमान है,
बच्चा-बच्चा आज राष्ट्र का, उधम वीर जवान है.
शीश मुकुट जो बना हिमालय,ये भारत की शान है,
कल-कल बहती,नदियाँ करती,भारत का गुणगान हैं.
राष्ट्र-प्रेम की मनः भावना , वीरों का श्रृंगार है.
मातृ-भूमि की बलि वेदी पर , चढने को तैयार हैं.

मातृ-भूमि की सीमाओं के, रक्षक वीर जवान हैं,
घुसता जो भी सीमाओं में, हर लेते ये प्राण हैं.
सारे जग की सेनाओं से, एक अलग पहचान है,
भारत की सीमाओं की, ये आन-बान और शान हैं.
हँसते - हँसते सीने पर ये , सह जाते हर वार हैं.
मातृ-भूमि की बलि वेदी पर , चढने को तैयार हैं.

चहुँ ओर आतंक फैलाता, अब तो पाकिस्तान है,
भारत की संसद भी देखो, हो गयी लहू-लुहान है.
घाटी में पग - पग पर उठता, आतंकी तूफान है,
मातृ-भूमि की रक्षा-हित किया, वीरों ने बलिदान है.
उग्रवादियों का चुन-चुन कर , करते अब संहार हैं,
मातृ-भूमि की बलि वेदी पर , चढने को तैयार हैं.

भारत माँ के इन वीरों का ,पग-पग पर सम्मान है,
सीमा की रक्षा करने को, पल-पल इनका ध्यान है.
शत्रु के आँगन को कर दें, क्षण भर में शमशान हैं,
भारत माँ का अमर शहीदी , पृथ्वीराज चौहान है,
शत-शत नमन शहीदों को हम , करते बारम्बार हैं,
मातृ-भूमि की बलि वेदी पर , चढने को तैयार हैं.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# मनोहर लाखोरकर 'जागभाई'

अनन्त गोपाल शेवड़े की कर्मभूमि तथा महाराष्ट्र की उपराजधानी नागपुर महानगर में दिनांक : २२ जुलाई १९६३ को आपका जन्म हुआ. आपने समाज शास्त्र विषय लेकर एम.ए. तक शिक्षा अर्जित की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बरनाथ में हिन्दी अधिकारी के पद पर सेवारत् हैं.

आप साहित्य की हर विधा में सृजनरत् हैं. आपने कहानी, नाटक, लघु कथा, गीत, कविता एवं व्यंग्य पर अनवरत् कार्य किया है. देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रतिनिधी संकलनों में आपकी कविताएँ, कहानियाँ एवं विभागीय पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ लगातार छपती आ ही हैं. जैमिनी अकादमी, पानीपत की ओर से आप आचार्य की उपाधि से सम्मानित हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* द्रोणागिरी विल्डिंग, ३५/४, नवरे नगर, अम्बरनाथ (पूर्व) महाराष्ट्रे-४२१५०२. स्वर दूत : (०२५१) २६८२४१३.

## जाग अरे इन्सान

जाग अरे इन्सान.....  
भोर हुई अब सूरज निकला, आया लेकर ज्ञान.  
रात व्यतीत हुई अंधियारी, सुला गयी खबरें दुखियारी.  
सूरज नया लिये आया है, फिर खुशियों की खान.....  
जाग अरे इन्सान.....  
न कर याद बीती बातों को, उन दुःखों को उन यादों को.  
भूला सुबह का शाम को लौटे, भूला उसे न जान.....  
जाग अरे इन्सान.....  
आयी कैसी विकट घड़ी है. मंहगाई मुँह खोले खड़ी है.  
रोक जनम की चक्की पगले, हालात को पहचान.....  
जाग अरे इन्सान.....  
कई समस्याएँ जीवन में, सुख-दुःख दोनों क्षण-क्षण में.  
नही बैठना कभी हार कर, कर तू प्रभु का ध्यान.....  
जाग अरे इन्सान.....



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शान्ति का मूल मन्त्र

पढना है सब को शान्ति का मूल मन्त्र एकता से,
jgks rq सभी यहाँ पर सम भाव समता से.

पूरब से रोशनी का अम्बर फट रहा है,
चारों दिशाओं में वह समता से बँट रहा है.
कहती हैं सूर्य किरणें रहो तुम एकता से,
पढना है सब को शान्ति का मूल मन्त्र एकता से.

फूलों से भरी हैं ये क्यारियाँ हमारी,
खिल कर सुगन्ध फैले लगती हैं कितनी न्यारी.
कहती है फुलवारी रहो तुम एकता से,
पढना है सब को शान्ति का मूल मन्त्र एकता से.

जाति-धर्म और भाषाएँ चाहे अलग हमारे,
एक सूत्र में बँधे हैं सभी ममता के दुलारे,
कहती है कर्म-भूमि रहो तुम एकता से,
पढना है सब को शान्ति का मूल मन्त्र एकता से.

छोड़ो ये आपस में दंगा मार - पिटाई,
अपना ही नाश हुआ है दूसरे ने दाल गलायी.
कहता है "जगभाई" रहो तुम एकता से,
पढना है सब को शान्ति का मूल मन्त्र एकता से.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# विवेक जोशी 'विवेक'

आपका जन्म २० जुलाई १९६५ में महाराष्ट्र की उपराजधानी नागपुर में हुआ. आप अपनी उच्च माध्यमिक तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वायु शस्त्र निरीक्षण स्कन्ध में परीक्षक के रूप में सेवारत् हो गये. आप मूलतः मराठी भाषी हैं. राष्ट्रभाषा हिन्दी से विशेष लगाव के कारण आप मराठी के साथ साथ हिन्दी में भी गीत, ग़ज़ल,कविता के साथ-साथ कहानी, लेख एवं समीक्षा भी लिखते हैं. अनेकों प्रतिनिधि संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं.

आपके गद्य एवं पद्य देश भर की प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती रही है. समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारण.

आप साहित्य सृजन के साथ-साथ ट्रेड यूनियन के भी सक्रिय कार्य-कर्ता हैं. भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ के आप केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य तथा जे.सी. एम. तृतीय के मनोनीत सदस्य हैं. साहित्यिक, सामाजिक, धर्मिक संस्थाओं की गतिविधियों में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती है.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा. नं. ५/११/१, टाइप-२, आयुध निर्माणी परिसर , अम्बाझरी, नागपुर. (महाराष्ट्र) ४४० ०२१. *स्वर दूत :* (०७१०४) २३४६२८.

## माँ

माँ
अथक
अविराम
अविश्राम सेवा
की
प्रतिभा होती है
त्याग
तपस्या
बलिदान की
जागृत
प्रतिमा होती है

माँ
सरल
संवेदनशील
स्नेहिल
भावनाओं की
सुख सविता होती है.
रस
छन्द
अलंकार से
युक्त
सार्थक कविता होती है.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# माँ

स्वयं वेदनाएँ सह कर जो,
बीज ममता के बोती है,
क्या कहूँ माँ क्या होती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

मातृ-भाव से प्रेरित हो कर,
स्वयं जीव में प्राणित होकर.
ममता को ही वह बोती है,
माँ तौं केवल माँ होती है.

हर आह-आह में रह कर भी,
प्रसव वेदना को सह कर भी
प्रेम सुधा वह बरसाती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

नवजात जीवन के सुख में,
देकर वह वात्सल्य मुख में.
स्नेह बूँद छलकाती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

कर्तव्यों के पावन पथ पर,
वह बैठ प्रयासों के रथ पर.
पथ आलोकित कर जाती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

जीवन के संस्कार वन में,
मन प्राणों के हर तन मन में.
संस्कार बीज वह बोती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

बरखा हो मनमोहक सुख की,
या हो पीड़ा दाहक दुःख की.
वह अविचलित ही होती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

खा कसमें आस के झूलों की,
देती हम को सेज फूलों की.
वह खुद अंगारों पर सोती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

मेरे सुख में खुश होती है,
मेरे दुःख में वह रोती है,
भव सागर का वह मोती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

सद्भावों को वह ढोती है,
दुर्भाव में नही खोती है.
पग मानवता के धोती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

मन से देखा तो यह जाना,
मुखड़ा तो है जाना पहचाना.
माँ तो सब एक सी होती है,
माँ तो केवल माँ होती है.

प्रखर परिश्रम से हर हद की,
अनन्त अनुभवों के बरगद की.
शीतल छाया वह होती है,
माँ तो केवल माँ होती है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# सुनील सिंह सजावान

आपका जन्म दिनांक : ५ फरवरी १९६८ को उत्तर प्रदेश के महानगर कानपुर में हुआ. आपने इण्टर साइंस तक की शिक्षा प्राप्त की है. आप गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में सृजनरत् हैं. "छत हमारी आकाश तुम्हारा" शीर्षक से आपकी प्रथम काव्य-कृति प्रकाशित हो चुकी है. आप मुख्यतः राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी कवि हैं.

आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ - साथ देश की शीर्षस्थ पत्र - पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं.

वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, कानपुर में लिपिक के पद पर सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* जी, वन-६०, आरमापुर एस्टेट, कानपुर (उत्तर प्रदेश) २०८ ००६.

## परिवर्तन

ये कैसा दुःखद एहसास है ?
कि इन्सान,
इन्सान का करता परिहास है.
क्रूरता और हत्या की घटनाएँ
सभी तो हैं वर्तमान में,
तो फिर
ये धरती अम्बर क्यों है मौन ?
और क्यों है वो ईश्वर मौन ?
जो सर्वत्र है विद्यमान
क्या मिला है अब तक इन्हे
शायद पीड़ा ही पीड़ा.
कौन है इस पीड़ा का जनक ?
क्या खुद हम ?
यदि हाँ ! तो
कब ये पीड़ा ममता में
परिवर्तित होगी ?
कब निर्भय हो कर ममता
अपना स्नेह आलाप सकेगी ?
कब स्नेह घृणा के आँगन में
अपना कोमल नृत्य कर सकेगी
कब..? आखिर कब पतन होगा?
इस हिंसा रूपी पीड़ा का ?
और कब परिवर्तन आयेगा
वहशी इन्सानों की सोच में ?

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# भस्मासुर

दहक उठेगी धरती एक दिन
इन्सानों की ऐसी नादानी से,
बारूद जो उसमें बिछा दिया है
रोक लो उसको फटने से.

भस्मासुर क्यों बने हुए हो.....?
क्या गिला तुम्हे इस धरती से ?
जीवन दायिनी ये माता धरती
शर्मिंदा है अपनी सन्तानों से.

घिर चुकी है धरती अब तो
पग-पग परमाणु हथियारों से,
न जाने किस समय कर देगा
भस्म भस्मासुर अपने हाथों से.

सोच समझ हर कदम उठाओ
क्या होगा भस्मासुर बनने से ?
ये परमाणु शस्त्र हैं शत्रु हमारे
मिटा दो इन को धरती से.

हमें नही करनी है ऐसी प्रगति
जो शापित हो पग-पग बारूदों से
पैदा किये हैं कितने ही भस्मासुर
हमने ही इन मेहनती हाथों से.

यह धरती है तो सब कुछ है
ये विनती है मेरी इन्सानों से,
रोक लो अब भी अपने हाथों को
वरना सब मिट जायेंगे धरती से.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# अरविन्द कुमार नाटियाल

आपका जन्म उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी कानपुर में १ जुलाई १९६८ को हुआ. आपने एन.सी.वी.टी. एवं स्नातक तक की शिक्षा के साथ आई.जी.डी. का डिप्लोमा प्राप्त किया है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, अम्बाझरी में सेवारत् हैं.

आप मूलतः व्यंग्य विधा के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं. साथ ही कलात्मक छायांकन तथा रेखा-चित्रण करने में गहरी रुचि है. आपके छाया चित्र तथा रेखा चित्र एवं रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* २०८ - छत्रपति नगर, वर्धा रोड, नागपुर ( महाराष्ट्र ) ४४० ०१५. *स्वर दूत :* (०७१२) २२२६७०३.

## मुहर लगा आता है

वह अनपढ है, गरीब है,
उसे हिसाब-किताब नहीं आता है,
वह सोचता तो बहुत है,
पर समझ नहीं पाता है.
देश की बदहाली में उसे
अपना कोई हाथ नजर नहीं आता है,
हाँ ! उसे इतना जरूर पता है कि
उसका किस रंग से नाता है ?
वह हरे, केसरिया या नीले
किस सम्प्रदाय में आता है ?
चुनाव आने पर वह अपना
कर्तव्य अवश्य निभाता है,
अपने सम्प्रदाय के प्रत्याषी के
चुनाव चिन्ह पर आँख मूँद कर
मुहर लगा आता है.

## बूँद और समन्दर

हमने कहा-
नेता जी ! आप
जनता से तो
बूँद-बूँद बचवाते हैं,
और खुद
कारों के काफिले
में जाते हैं.'
तो नेता जी बोले,
'मूर्ख !
आम आदमी भी
अरे ! यूँ ही
बहायेगा,
तो हमारे लिये
तेल का समन्दर
कहाँ से आयेगा?'



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# नेता जी का सत्कार

चुनाव के मौसम में
जैसे ही नेता जी
मकान के सामने वोट माँगने आये.
मकान मालिक ने तुरन्त ही पत्नी से
अपने पुराने-फटे जूते मँगवाये.
यह देखते ही नेता जी सकपकाये.
फिर अगले ही पल संभलते हुए
दो अर्थी शब्दों में गिड़गिड़ाये,
"दाता मत दे, हम तो
मत माँगनें हैं आये,
हमें ज्यादा मत पड़ें,
बस ये ही दुआ मनाएँ."
मकान मालिक गुस्से में तमतमाए,
बोले, "पिछले चुनावों मे मैंने,
आपके, अनेकों वायदों से भरे
प्रभावशाली भाषणों को सुना था.
इसीलिये अपना अमूल्य मत देकर
आपको ही चुना था.
फिर आपके आश्वासनों के ताने-बाने से
अपने सपनों को बुना था,
लेकिन बाद में इसी जूते से
अपना सिर धुना था.
इस बार मैं आपकी
बकवास नहीं सुनूँगा,
अगले पाँच साल तक
एक-एक दिन नहीं गिनूँगा.
और अब इस बार बाद में अपना नहीं,
बल्कि पहले आज और अभी,
आपका सिर धुनूँगा."


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# एहसास जाबालपुरी

## (रामवृक्ष गुप्ता)

युवा पीढी के सशक्त हस्ताक्षर रामवृक्ष गुप्ता का जन्म मध्य प्रदेश के नर्मादा कछार की संस्कारधानी नगरी जबलपुर में दिनांकः ३०अप्रैल १९७० को हुआ. आपने एम.कॉम.,एम.ए. (हिन्दी साहित्य) तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप वाहन निर्माणी, जवलपुर में अवर श्रेणी लिपिक के पद पर सेवारत् हैं. देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ निरन्तर प्रकाशित होती रही हैं. 'पीले वरक में रखे गुलाब' प्रतिनिधी काव्य-संकलन के अतिरिक्त अनेक प्रतिनिधी संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं. आप मंचों के सफल ग़ज़लकार के साथ-साथ एक अच्छे मंच संचालक भी हैं. अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन,मुशायरा एवं आकाशवाणी के माध्यम से आपकी रचनाएँ श्रोताओं तक पहुँचती रही हैं. आप मूलतः गीत,ग़ज़ल तथा छन्द बद्ध शिल्प के कुशल शिल्पी हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा. नं. २११६ -व्हीकल एस्टेट,जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२ ००९.
*स्वरदूत :* (०७६१) २३३१५१७.

## ग़ज़लें

### (१)

अहसास अपनेपन का कराने लगे हैं लोग,
बेघर को घर का ख्वाब दिखाने लगे हैं लोग.

कहता है कौन मेरा शहर पत्थरों का है,
छूकर के आदमी को बताने लगे हैं लोग.

इल्ज़ाम फिर से बर्क पे आयेगा देखना,
अपने घरों में आग लगाने लगे हैं लोग.

ये सोच के मसीहा परेशान है बहुत,
होली और ईद साथ मनाने लगे हैं लोग.

शोहरत का मेरी जब उन्हें 'एहसास' हो गया,
फिर से नये शिगूफ़े खिलाने लगे हैं लोग.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

## (२)

ओ शीशे के महलों वालो,
न बुरी नज़र पत्थर पे डालो.
बहुत हो चुका खून - खराबा,
सूरज मानवता का उगा लो.
मिट जायेंगे शिकवे सारे,
होली में तुम गले लगा लो.
इश्क बयाँ हो ही जाता है,
चाहे जितनी नज़र बचा लो.
सुख से दामन भर जायेगा,
दु:ख को अपना मीत बना लो.
साँप की फितरत नहीं बदलती,
चाहे जितना दूध पिला लो.
तन्हा - तन्हा रहते हो तुम,
'एहसास' किसी को मीत बना लो.

## (३)

हम को हर हाल मुस्कुराना था,
दर्द अपना हमें छुपाना था.
रोशनी तो फ़क्त बहाना था,
उसको मेरा ही घर जलाना था.
मुफ़्त ही लोग कह उठे कातिल,
मेरा मकसद उसे बचाना था.
बिखरे तिनके से ये हुआ महसूस,
इससे पहले भी आशियाना था.
उसको दिल तोड़ना ही था 'एहसास',
बेकसी सिर्फ इक बहाना था.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# शकील ख़ान 'जबलपुरी'

## (शकील अहमद ख़ान)

आपका जन्म मध्य प्रदेश की संस्कारधानी नगरी जबलपुर के निवासी जनाब अहमद यार ख़ान के परिवार में दिनांक : ४ जुलाई १९७० को हुआ. आपने उर्दू अदब में स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्तमान में आप आयुध निर्माणी, खमरिया में सेवारत हैं. आप मूलतः ग़ज़ल एवं गीत के प्रतिभावान शायर हैं. आपकी रचनाएँ देश के प्रतिष्ठित रिसालों में लगातार छपते आ रही हैं. आपका ग़ज़ल-संग्रह 'ग़ज़ल का सफ़र' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है. समय-समय पर आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित होती रहती हैं. आप अनेको साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं के पदों को सुशोभित किये हुए हैं.

*सम्पर्क सूत्र* : १६/२, एच - टाइप, खमरिया, जबलपुर (मध्य प्रदेश) ४८२००५.
*स्वर दूत* : (०७६१) (आ.) २३३७१२२), (का.) ७३२८३४.

## ग़ज़लें

### (१)

अपनी ही निगाहों से हम गिरा नहीं करते,
दुश्मनों के भी हक़ में बद्दुआ नहीं करते.

हाथ उनके आती है दोस्त सिर्फ़ नाकामी,
अपने जो बुजुर्गो से मश्वरा नहीं करते.

हौसला हमारा खुद रहनुमाई करता है,
हम भरोसे रहबर के काफ़ला नहीं करते.

मंज़िलें नहीं मिलती दोस्तो कभी उनको,
बढ के जो मुसीबत का सामना नहीं करते.

ऐ 'शकील' रहते हैं हक़ पे हम सदा कायम,
टूट जाते हैं लेकिन हम झुका नहीं करते.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

(२)

लौटा हूँ आज सारा समंदर खंगाल कर,
लाया हूँ चन्द प्यार के मोती निकाल कर.
रिश्ते संभालियेगा, ये रिश्ते हैं काँच के,
झगड़े से बचिये आप भी तल्ख़ी को टाल कर.
देखो ये जिन्दगी कहीं बन जाये न अजाब,
रखो न दुश्मनी के कभी साँप पाल कर.
बनती है उसकी ज़ीस्त भी ऐ दोस्त खुश नुमा,
रखता जो ख़ुद को वक़्त के साँचे में ढाल कर.
तुम को भी उसके साथ मिलेगा सुकूं 'शकील',
देखो किसी के पाँव का काँटा निकाल कर.

(३)

ग़मज़दा दिल से ग़ज़ल गीत तराने निकले,
अपनी तक़दीर में क्या खूब ख़ज़ाने निकले.
और भी लोग हैं रंजूर हुआ ये ज़ाहिर,
दर्दे-दिल हम जो ज़माने को सुनाने निकले.
राख का ढेर था और कुछ भी नहीं था बाक़ी,
आग जब लोग मेरे घर की बुझाने निकले.
तुम इसे हौसला समझो कि कहो जोशे जुनूं,
जश्न हम अपनी तबाही का मनाने निकले.
नाम लूँगा तो मुहब्बत का भरम टूटेगा,
मेरे कातिल भी मेरे दोस्त पुराने निकले.
मश्वरा अपने बुजुर्गों को दिया करते हैं,
बच्चे इस दौर के हद-दर्जा सयाने निकले.
कौन कहता है मैं लफ़्ज़ों को पिरोता हूँ 'शकील',
दर हक़ीक़त मेरी आहों से तराने निकले.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

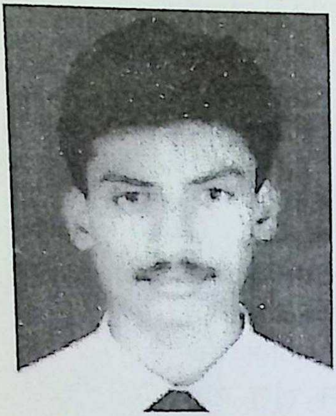

# संदीप शंकर आडे

आपकाजन्म दिनांक : १ जनवरी १९७३ को महाराष्ट्र की उपराजधानी नागपुर में हुआ. आपने महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विश्वेश्वरैया रीजनल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, नागपुर से बी.ई. की शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त धातु एवं इस्पात निर्माणी, ईशापुर में कार्यवेक्षक के पद को स्वीकार किया.

आप काव्य की हर विधा में लिखते आ रहे हैं. आपकी रचनाएँ विभागीय पत्रिकाओं के साथ-साथ देश की अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं. अनेकों काव्य - प्रतियोगिताओं एवं निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं में आप पुरस्कृत होते रहे हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* एसएमआर अनुभाग, धातु एवं इस्पात निर्माणी, ईशापुर-७४३ १४४.

## वक़्त " दि टाइम "

वक़्त को कभी मत भूलना प्यारे,
वक़्त के होते हैं रंग - रूप न्यारे.
वक़्त बदलता है तकदीर सब की,
वक़्त ही दिखाता तस्वीर सब की.
वक़्त किसी के रोके रुकता नहीं है,
वक़्त किसी के आगे झुकता नहीं है.
सूरज जब अस्ताचल को जाता है,
जीवन का अनमोल वक़्त ले जाता है
वक़्त से जग में कोई महान नहीं है,
वक़्त से जग में कोई बलवान नहीं है
वक़्त की विशेषता को समझो यारो,
जीवन में तब ही खुश रहोगे प्यारो.
वक़्त ही ईश्वर है, वक़्त ही खुदा है,
वक़्त से जग में नही कोई जुदा है.
वक़्त की बात करो तो वक़्त ही बड़ा होता है,
वक़्त के हाथों में सब का वक़्त लिखा होता है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

# अजनबी सी पहेली

सुबह-सुबह तुम्हें मुस्कुराते हुए देखना,
जैसे मन की वीणा के तारों को है छेड़ना.
सूरज की कोमल उन किरणों का आना,
कपोलों को तुम्हारे एक शरारत से छू जाना.
आँखें हैं तुम्हारी मदहोशी का एक अम्बर,
लबों की हँसी जैसे है प्यार का एक सागर.
चाहत की एक डोर बाँधती हो तुम सदा,
नर्गिसी अदाओं पे तेरी दिल मेरा है फिदा.
जेहन को छू जाती हैं तेरी मासूम अदाएँ,
मन को लुभाती हैं रेश्मी जुल्फों की घटाएँ.
फूलों की पँखुड़ियों सी कोमल तुम्हारी हथेली,
मेरे लिये हो तुम अजनबी सी एक पहेली.

# आलेख

दुनिया में नजर आता है कहीं उजाला तो कहीं अंधेरा
जिन्दगी की भाग-दौड़ मे भूला आदमी शाम और सवेरा.
राहें हैं काँटों भरी, पर एक तरफ फूलों के गुलजार भी हैं,
दुःखों के इस भव सागर में सुख भरे चाँद-सितारें भी हैं.
छू रहा है आदमी आज आसमान से ऊँची ऊँचाईयों को,
पर भूल रहा है सृष्टि की अमूल्य धरोहर अच्छाईयों को.
धरती पर आया था यहाँ अच्छा इन्सान बनने को मानव,
पर देखो उसने कैसा फैलाया है यहाँ विनाश का दानव.
असुरक्षा से भयभीत धरती माँ आज हथियारों से लैस है,
मानव ही मानवता के संहार का अब बन चुका आलेख है.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# सोहन परोहा 'सलिल'

आपका जन्म मध्य प्रदेश के जनपद सिवनी के बरघाट नगर में दिनांक : ८ नवम्बर १९७५ को हुआ. आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आयुध निर्माणी, खमरिया को अपनी सेवाएँ अर्पित कर रहे हैं.

आप आयु के ११ वें वर्ष से ही काव्य-सृजन से जुड़ गये. १३ वर्ष की आयु में कवि-सम्मेलनों के मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में कामयाब हो गये. तब से निरन्तर प्रगति के सोपान स्पर्श करते आ रहे हैं. आप गीत, ग़ज़ल, मुक्त-छन्द के साथ-साथ कथा, कहानी, लेख, नाटक आदि विधाओं में भी अपनी लेखनी का पैनापन उजागर करते आ रहे हैं. देश की अनेक प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं. "पीले वरक़ में रखे गुलाव", "हम नीचे के लोग" तथा "मधु संचय" जैसे प्रतिनिधि संकलनों में आपकी रचनाएँ संकलित हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* २७८५ - नरसिंह नगर, रावण पार्क के सामने, राँझी, जबलपुर. (मध्य प्रदेश) ४८२ ००५. *स्वर दूत :* (०७६१) २३३१६६४.

## ग़ज़ल

मेरी अश्कों में डूबी ज़िंदगानी देखते जाओ,  
गुज़रती हादसों में ये जवानी देखते जाओ.

मेरी नाकामियों पर हँसने वालो आओ साहिल पर,  
मेरी टूटी हुई कश्ती पुरानी देखते जाओ.

मेरी नन्ही सी बेटी घर के सब मसले समझती है,  
है इसकी सोच भी कितनी सयानी देखते जाओ.

मेरे होठों की बेबस मुस्कुराहट पर न जाओ तुम,  
है दिल मेरा ग़मों की राजधानी देखते जाओ.

सुना है तुम 'सलिल' ग़म बाँटते हो दूसरों के भी,  
तो आओ मेरी आँखों का भी पानी देखते जाओ.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## ग़ज़ल

जब हमारा प्यार अफसाना हुआ,
तब तुम्हारा रूठ कर जाना हुआ,
जिस जगह पर हम मिले पहली दफा,
वो ही अब मेरा सनमखाना हुआ.
उम्र भर जलता रहा, जलता रहा,
दिल हमारा एक परवाना हुआ.
रात फिर तूफान आया याद का,
हर नफस पे खाली पैमाना हुआ.
तुम नहीं तो किसकी खातिर बंदगी,
घर का कोना - कोना मयखाना हुआ.
आँख से टपका जो कतरा अश्क का,
वो तेरे कंगन का इक दाना हुआ.

## गीत

बीते कल को सोच-सोच कर, कब तक आँसू छलकाओगी,
करुणा की प्रति छवि बन कर क्या,निष्ठुर जग में जी पाओगी.

नही नारि तुम मातृ-शक्ति हो, तुम को खुद से लड़ना होगा,
वर्तमान का तिमिर शमन कर, कल का सूरज घड़ना होगा.
यह जीवन प्रवास है, थक कर, बैठे रहे तो फिर क्या होगा,
कठिनाई का हाथ थाम कर, प्रति पल पग-पग बढना होगा.

तुम ही से जीवन की गति है, क्या तुम इसे रोक पाओगी,
करुणा की प्रतिछवि बन कर क्या, निष्ठुर जग में जी पाओगी.

हाँ ! वसुधे क्यों भूल रही तुम, कालजयी निज छवि जग न्यारी,
मुख मधुपूरित नयन सजल उर, में ज्वाला पहचान तुम्हारी.
मत भूलो तुमने ही अब तक, हनन किया है नर असुरों का,
तुम तो शक्ति स्वरूपा हो क्यों, शक्ति हुई अवसान तुम्हारी.

सोचो क्या 'स्व' को विस्मृत कर, 'पर ' की भाषा कह पाओगी.
करुणा की प्रति छवि बन कर क्या, निष्ठुर जग में जी पाओगी.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# वेद कुमार 'राही'

*(स्व. वेद भूषण कुमार शर्मा)*

स्व.वेद भूषण कुमार शर्मा आयुध निर्माणी, वरणगाँव में कार्यालय अधीक्षक के पद पर सेवारत थे. वे कर्तठ हिन्दी प्रेमी थे. निर्माणी की गृह-पत्रिकाओं तथा अन्य पत्रिकाओं में उनकी रचनाओं में मानवता, समाज के प्रति गहरी आस्था तथा देश और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं कुरीतियों पर कठोर प्रहार के दर्शन होते हैं. स्थनीय स्तर पर तथा अखिल भारतीय स्तर के अनेक हिन्दी कवि सम्मेजनों में उनकी सह-भागिता रही है. वे एक कुशल मंच संचालक थे.

आयुध निर्माणी, वरणगाँव में अखिल भारतीय हिन्दी कवि-सम्मेलनों के आयोजन में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था.

यद्यपि वेद कुमार 'राही' आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कविताएँ आज भी हमें उनकी याद दिलाती रहती हैं, प्रस्तुत हैं यहाँ उनकी कुछ चुनी हुई रचनाएँ.

## गाँधी जी का बँटवारा

गाँधी जी की बकरी देखा, रोज कसाई काट रहे
गाँधी जी की लाठी लेकर, नेता जनता हाँक रहे.

एक लगोटी बची है बाकी, सारे उसको ताक रहे,
और बचे हैं बाकी जो, चरखे की कीमत आँक रहे.

प्रजातन्त्र है भूल-भुलैया, चतुर मलाई चाट रहे,
समाजवाद का नारा देकर, सब की जेबें काट रहे.

क्या जाने कब तक यूँ गुजरे, कब तक ऐसा ठाठ रहे,
गाँजी के तीनों बन्दर, एक दूजे को ताक रहे.

जनता की सब लूट कमाई, चोर उच्चके बाँट रहे,
'राही' तेरे जैसे कितने, पथ-पथ की मिट्टी फाँक रहे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# कौन मरा....?

ये हिन्दू मरा है न मुसलमान मरा है,
आज फिर मेरे देश मे, एक इन्सान मरा है.

रास्तों पें जो गिरा है, किसका भला है खून,
हिन्दू, इसाई, सिख या मुसलमाँ का ढला खून,
किस कोख में, किस गोद में, आँचल में पला खून,
किस राह में, किस मोड़ पे, किस ओर चला खून.
ये कौन बताये, राम कि रहमान मरा है,
फिर आज मेरे देश में, एक इन्सान मरा है.

पूछूँ मैं किससे, घर जो जलाते वे कौन हैं,
विधवा जो औरतों को, बनाते वे कौन हैं.
मन्दिर हो या मस्जिद को, जो ढाते वे कौन हैं,
वीरान जो सारा शहर बनाते, वे कौन हैं.
कितने दिलों का इक-इक अरमान मरा है,
फिर आज मेरे देश में, एक इन्सान मरा है.

किस धर्म में लिंखा है कि मस्जिद को तोड़ दो,
किस मजहब ने कहा है कि मन्दिर झंझोड़ दो.
गीता हो या बाइबिल, गुरू ग्रन्थ या कुरान,
इन सब में तो लिखा है, कि नफरत को छोड़ दो.
फिर क्यों बताओ प्यार का, फरमान मरा है,
फिर आज मेरे देश में, एक इन्सान मरा हैं.

बरसों का प्यार, दोस्ती, याराने खो गये,
रिश्ते थे जो दिलों में, पुराने वो हो गये.
अहमद और श्याम दोनों, दिलों में शक लिये,
दोनों की सोच है कि, जमाने वो खो गये.
अपना ही तेरा कोई, पहचान का मरा है,
फिर आज मेरे देश में, एक इन्सान मरा है.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# सुदर्शन वर्मा 'सलिलेश'

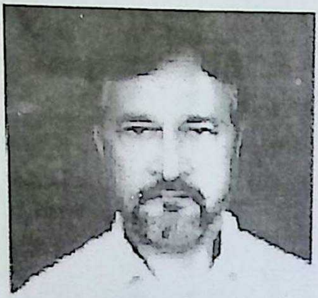

दिनांक : १ सितम्बर १९५४ को उत्तर प्रदेश की शहीद नगरी शाहजहाँपुर में आपका जन्म हुआ. आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर आयुध वस्त्र निर्माणी, शाहजहाँपुर में शासकीय कर्मचारी के रूप में सेवा कार्य अंगीकार कर लिया. आप कवि होने के साथ-साथ एक कुशल अभिनेता भी हैं. आपने युगानुभूति काव्य पत्रिका का सम्पादन किया. 'पीढी बोल उठी' तथा 'मयूर पंख' आपकी दो प्रकाशित कृतियाँ हैं.

अंधा-युग, कसाई बाड़ा, डॉ. अम्बेडकर की जीवनी पर आधारित नाटक दिशा आदि प्रसिद्ध नाटकों में आपने सफल अभिनय किया है. नेत्र दान पर आधारित टेलीफिल्म 'रोशनी'के आप प्रमुख पात्र हैं. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, संस्कार भारती, अभिव्यक्ति नाट्य मंच से सम्बद्ध हैं.

सम्पर्क : 'सुदर्शन सदन' रोशन गंज, मिनिस्टर रोड, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) २४२००१.
स्वर दूत : (०५८४२) २२५८७८. मोबाइल : ९४१५०३५२६१.

## गज़ल

बाढ जैसा दर्द का दरिया बहे, अच्छा नहीं,
आदमी औकात से ज्यादा सहे, अच्छा नहीं.

एक तोता उड़ गया तो दूसरा ले आइये,
बहुत दिन तक पींजरा खाली रहे अच्छा नहीं.

शिरकतें हों खूबसूरत महफिलों में आपकी,
दौर संजीदा, मगर हो कहकहे, अच्छा नहीं.

हर खुसूसी काम मौजू वक्त पर ही हो तो हो,
सुबह जैसा शाम को बिस्तर तहे, अच्छा नहीं.

बुरी सोहबत आपको कह दे बुरा तो कुछ नहीं,
बुरा, कोई शख्सियत अच्छी कहे अच्छा नहीं.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# प्रेम गीत

वैसे हर पग पर चौकन्ने भाव उलीचे.
किन्तु प्रीत की डगर चले आँखें मीचे.

सन्देहों के निरे जखीरे
मिले सदा तेरे दर पर,
फिर भी काई नहीं जम सकी
विश्वासों के सागर पर.

ऊपर आसन दिया तुझे, बैठा खुद नीचे,
प्रेम नगर की डगर चले हम आँखें मींचे.

शुष्क तृषित अरमानों ने
पायी जब से शीतल धारा,
प्रस्तर जैसे अन्तर का
सारा फौलाद हुआ पारा.

मेरे तपते स्वप्न खेत तूने ही सींचे,
प्रेम नगर की डगर चले हम आँखें मींचे.

मेरे जीवन के सारे क्षण
सावधान मुस्तैद रहे,
लेकिन तेरे प्रेम शंख में
जोंक सरीखे कैद रहे.

किया समर्पण तुझे, सभी से बाजू खींचे,
प्रेम नगर की डगर चले हम आँखें मींचे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ललित कुमार मोहोड 'ललित'

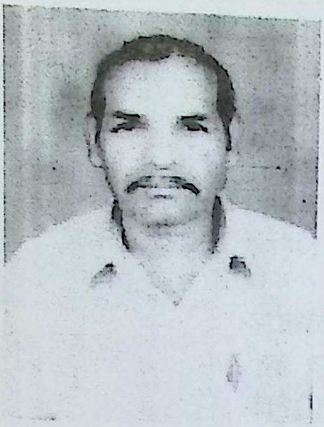

महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जिला के बोरगाँव निवासी श्री नानाजी गोविन्दराव मोहोड एवं श्रीमती वत्सलाताई मोहोड के जीवन कानन में दिनांक : ०५ जुलाई १९५९ को आपका जन्म हुआ. आपकी मातृभाषा मराठी है. आपने एम.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की है. आप मराठी के प्रगतिशील, प्रतिभावान कवि एवम् लेखक हैं. महाराष्ट्र से प्रकाशित मराठी की अनेक प्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती आ रही हैं. आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी सृजन का सुखद प्रयास किया है. निकट भविष्य में आपका हिन्दी काव्य-संग्रह 'अमन के फूल' तथा मराठी में 'काव्यांजलि' शीघ्र प्रकाशित होने जा रहे हैं.

आप वर्तमान में कन्जूमर्स को-ऑपरेटिव सोसायटी, आयुध निर्माणी, अम्बाझरी, नागपुर में सेवारत् हैं.

*सम्पर्क सूत्र :* क्वा.नं.६/२४/८ आयुध निर्माणी परिसर, अम्बाझरी, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४० ०२१.

## आहट

इस जहाँ में दोस्त हैं कम दुश्मन सौ हैं जान के,
कैसे चलें बिन्दास राहों पर सीना तान के.
आती हैं चारों ओर से आहटें खतरों की यहाँ,
खतरों के डर से भी वे पानी पीते हैं छान के.
लगता है डर मौत का किस वेश में आ जायेगी,
दोस्तों के वेश में बैठे दुश्मन छुरा तान के.
आती हैं रोज खबरें अखबारों में लूट मार की.
लूटपाट खून है जब से लाले पड़े हैं जान के.
पग-पग पर है आतंक रखवाले ही बने आतंकी,
दिन दहाड़े लूटते हैं खजाना बन्दूकें तान के.
हर चौराहे पर बैठे हैं मौत के सौदागर यहाँ,
जान की लेते हैं सुपारी अपना धंधा मान के.
कैसे हो भरोसा जिंदगी का सौ दुश्मन हैं जान के,
खतरों भरी जिंदगी में 'ललित' लाले पड़े हैं जान के.



CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

## नसीहत

लिखना है यदि आपको तो अपनी ताकत लिखना,
नफरत की दुनिया को प्यार की अमानत लिखना.
लिखना है आप को तो दिल की उल्फत लिखना,
बहारों की महफिल में फूलों की नजाकत लिखना.
लिखना है आप को तो वीरों की विरासत लिखना,
देश भक्ति के नाम पर शहीदों की वसीहत लिखना.
लिखना है आप को तो सेना की खासियत लिखना,
मौत के साये में जीने वाले जवानों की तबियत लिखना.
लिखना है आपको तो कश्मीर की हकीकत लिखना,
अमन के नाम पर आतंकियों की बदनीयत लिखना.
लिखना है आपको तो खुदा की इनायत लिखना,
टूटे हुए दिल में मचलते हुए जजबातों को लिखना.
लिखना है आपको तो शान्ति की खासियत लिखना,
महा युद्ध के बवण्डर में करुणा सागर तथागत लिखना.

## क्या बात करें

पल का नहीं भरोसा है कल की क्या बात करें,
छल से ही चलता है जग बल की क्या बात करें.
अपने पराये वाद विवाद में सभी विफल हुए हैं,
भ्रष्टाचार की दुनिया में सफल की क्या बात करें.
छल कपट और ताकत के बल से चलती है दुनिया,
नकल की इस दुनिया में असल की क्या- बात करें.
झूठे का बोलबाला है सच्चाई का मुँह काला है,
कल मुँही इस दुनिया में नसल की क्या बात करें.
देखा मौका तो अपनों ने दिया अपनों को धोखा,
धोखेबाज दुनिया में अब उसूल की क्या बात करें.
जब बबूल के बीज बोये तो आम कहाँ से आयेंगे,
जैसा बोया वैसा पाया है फसल की क्या बात करें.
जैसी करनी वैसी भरनी है दुनिया का दस्तूर है,
अपनी ही करनी से मरे तो मसल की क्या बात करे.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# जितेन्द्र नाथ शर्मा 'जितांशु'

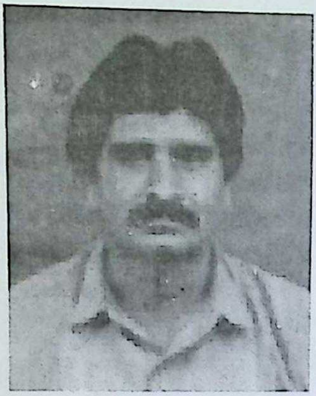

देश के ऐतिहासिक नगर आगरा के मरैयनपुरा में दिनांक : ४ अगस्त १९६१ को आपका जन्म हुआ. आपने बी.एस-सी., एम.ए., बी.एड्. तथा पत्रकारिता और जन सम्पर्क में स्नातक तक की शिक्षा अर्जित की है. आपकी रचनाएँ वागार्थ, जनसत्ता तथा देश की अनेक शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाती आ रही हैं. आपने यूनेस्को के 'कविता शान्ति के लिये' कवि-सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया है. इंटरनेट पर हिन्दी के कई साक्षात्कार, अखिल भारतीय कवि-सम्मेलनों में काव्य पाठ.

वर्तमान में आपगन एण्ड शैल फैक्ट्री हाई स्कूल, काशीपुर, कोलकाता में अध्यापन कार्य के साथ-साथ साहित्यिक मासिक पत्रिका 'सदीनामा' का सम्पादन कर रहे हैं.

*सम्पर्क :* एच-५, गवर्नमैट क्वार्टर्स, बुगे-बुगे, कोलकाता ( ७००१३७ )
*स्वर दूत :* (०३३) २४७०४०६१.

## इंटरनेट

भूख
लाचारी
बेबसी
खोजने पर मिलते नहीं
इंटरनेट पर
इंटरनेट जिस पर
घूमते हैं.
दुनिया के कई-कई ग्लोब
एक साथ
भीख तो है
कटोरा नहीं है
यही है इंटरनेट

नयी तहजीब
यह है
जीने की कला
उत्कर्ष के खम्बे पर
घूमती हुई मछली
अर्जुन जो तलाश रहा है
द्रौपदी को
द्रौपदी-मछली और अर्जुन
एक साथ
एक ही काल खण्ड नहीं
पल खण्डों में
मछली द्रौपदी
आधुनिक अर्जुन की तलाश में,....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# बसन्त का मौसम है

बसन्त का मैसम है,
मौसम का मिजाज
कहने की सुविधा है.

बढते शहर सिमटते जंगल
जंगल-जंगल पता चला है,
कहाँ गये दुःख दर्द हमारे
बेचे बूढा बाप कहाँ पर
इसी बात की ही दुविधा है.
बसन्त का मौसम......

सपने अपने बोझ हो गये
साँसे तक हथियार बन गयी,
हमको कौन गवाही देगा
जीने के हैं रंग हजारों
मरना केवल एक विधा है.
बसन्त का मौसम......

वे फौलाद बनाने वाले
चढ़ा उतारा सबका पानी,
मरा हुआ चूहा क्या जाने ?
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम,
केवल कहने की सुविधा है.
बसन्त का मौसम.....

संकट ही विश्वास बन गया
धुआँ हुए जहरीले सपने,
मानवता को कौन बचाये
महा देश के नये दरोगा
देश - देश में चौकी डण्डा है.
बसन्त का मौसम.....


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

उत्तर प्रदेश की शहीद नगरी शाहजहाँपुर के श्री मनोहर लाल जी के सुसंस्कृत परिवार में दिनांक : २ सितम्वर १६६१ को आपका जन्म हुआ. आपने हिन्दी साहित्य में एम.ए. तक की शिक्षा अर्जित की है. आप मूलतः नवगीतकार हैं. आपकी रचनाएँ देश की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में ससम्मान स्थान पाती आ रही हैं. 'तुम से मिल कर' नव गीत-संग्रह तथा 'राजाजी की शैतानी' वाल-गीत संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाश्य 'ग़ज़ल पंचदशी' भाग-पाँच के आप प्रमुख हिन्दी ग़ज़लकार हैं. 'शाहजहाँपुर के कवि' (शीघ्र प्रकाश्य संकलन) का आप सम्पादन कर चुके हैं. वर्तमान में आप आयुध वस्त्र निर्माणी, शाहजहाँपुर में हिन्दी अनुवादक के पद पर सेवारत हैं.

*सम्पर्क-सूत्र :* 'मनोहरम्' ३३- वाडूजई द्वितीय, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) २४२००१.
*स्वर दूत :* (२५८४२) २३१६६८.

## गीतिका

समुचित हुए प्रबन्ध निशानों के,
मिले निमंत्रण कठिन उड़ानों के.

लांघ सको दीवार चले आना,
दरवाजे हैं बन्द मकानों के.

हम कैसे कह दें, व्यापारी हैं,
देख रहा जो रंग दुकानों के.

छोड़ो भी सम्बन्ध पुराने हैं,
फुटपाथों से राजधरानों के.

मौलिकता का दम घुटने लगता,
होते जब अनुवाद वयानों के.

'ज्ञान' संभल कर तय करना मंजिल,
फिसलनदार घुमाव चढानों के.


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

# लौ के ऊपर नाँचो तो

पंख जलें तो जल जाने दो, लौ के ऊपर नाँचो तो.
जीने का आनन्द मिलेगा, ढाई आखर बाँचो तो..

हमने चाहा तो ये सारी,
दुनिया ही अनुकूल लगी.
और हटाया मन इससे तो,
बिल्कुल हमें फिज़ूल लगी...

लगन पपीहे की कहती है, अपनी चाहत जाँचो तो.
जीने का आनन्द मिलेगा, ढाई आखर बाँचो तो..

प्यार जहाँ है वहाँ कभी,
शंकाएँ जन्म नहीं लेती.
हार-जीत की दुविधाएँ भी,
हैं तकलीफ नहीं देती..

जिस जुनून में जला पतंगा, उस जुनून में झाँको तो.
जीने का आनन्द मिलेगा, ढाई आखर बाँचो तो..

मैंने जितना प्यार दिया है,
उससे ज्यादा पाया है.
इसीलिये कहता हूँ तुम से,
प्यार सदा रंग लाया है..

दीवानेपन की हद तक तुम, अपना मकसद आँकों तो.
जीने का आनन्द मिलेगा, ढाई आखर बाँचो तो..


CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लेखक

विद्यानाथ कोइराला

Educational planning

Campus quarter

9845216715

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

छितीज ; ०७१२ - २०२११०५, ३०२११०५, गंगेश छिवे (वैद)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection